हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna ● Quarterly Magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada
वर्ष ११, अंक ४१, जनवरी 2009
Year 11, Issue 41, January 2009

हिन्दी चेतना

जितना आप सोच सकते हैं उससे कम में अपने अपने देश के साथ जुड़ें

Bell TV के साथ , केबल से 55% से भी अधिक कम कीमत पर[1], अपने देश से भी अधिक क्रिकेट देखने को अपना लक्ष्य बना सकते हैं। इस मौसम, खेल में शामिल हो जाओ।

दक्षिण एशियाई कोम्बो

ATN SONY Entertainment Television

$10/MO.[2] 12 महीने के लिए

Bell TV बल्ले बाजी करने जा रहा है बड़ी विशेषताओं के साथ जैसे
. 500 से अधिक डिजिटल चैनल चुनाव के लिए अधिकाँश HD में मिलाकर
. उतकृष्ट पिक्चर क्वालिटी नियमित केबल से 10 गुणा बेहतर
. शामिल करें चिन्ता मुक्त पूरा होम सेटप[3]

ICT North: 1 888 735-9777

Bell TV देखना अब हुआ बेहतर

Offer ends Feb. 28, 2009. Available where access and line of sight permit. Digital service fee ($3/mo. per account) extra. Upon early termination, price ajustment charges apply. Subject to change without notice. Taxes extra. Other conditions apply. (1) As of Dec. 12, 2008. Compared to Rogers' South Asian combo billed $24.95/mo. (2) With new account on a min. 2-yr. contract and subscription to South Asian combo at time of activation. Regular rates apply at the end of the promotional period. (3) Details at bell.ca/installationincluded.

हिन्दी चेतना वर्ष २००९

संरक्षक एवं प्रमुख संपादक
श्री श्याम त्रिपाठी

सह संपादक
डॉ. निर्मला आदेश (कैनेडा)
डॉ. सुधा ओम ढींगरा (अमेरिका)

संपादकीय मंडल
अभिनव शुक्ल (अमेरिका)
गजेन्द्र सोलंकी (भारत)
इला प्रसाद (अमेरिका)

प्रबंध संपादक
डॉ. हरीश चन्द्र शर्मा (कैनेडा)
डॉ. ओम ढींगरा (अमेरिका)

मार्ग दर्शक मंडल
डॉ कमल किशोर गोयनका (भारत)
राज मेहेश्वरी (कैनेडा)
सरोज सोनी (केनेडा)
उदित तिवारी (भारत)
विनोद चन्द्र पाण्डेय (भारत)
अमित सिंह (भारत)

प्रमुख : विदेश
अनिल शर्मा (थाइलैंड)
सुरेशचन्द्र शुक्ला (नार्वे)
यासमीन त्रिपाठी (फ्रांस)
राजेश डागा((ओमान)

हिन्दी प्रचारिणी सभा
महा कवि प्रो. आदेश (संरक्षक)
श्याम त्रिपाठी (अध्यक्ष)
भगवत शरण श्रीवास्तव (उपाध्यक्ष)
सुरेन्द्र पाठक (मंत्री)
डॉ. चन्द्र शेखर त्रिपाठी (उपमंत्री)
श्रीमती सुरेखा त्रिपाठी (कोषाध्यक्ष)
शालीन चन्द्र त्रिपाठी (सदस्य)
सुरभि गोबर्धन (सदस्य)

चेतना सहायक
डैनी कावल
अँकुर टेकसाली

शोख रंगों में
खिले - खिले फूलों ने
धरती को फुलकारी ओढ़ा दी
ऋतुराज ने मुस्करा कर
बसँत का यूँ
स्वागत किया।

अरविंद नराले

आमंत्रण:

"हिन्दी चेतना" सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि " हिन्दी चेतना" साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात् साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यिक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमन्त्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें। अगले अंक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें।

Hindi Chetna
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone(905) 475- 7165
Fax: (905) 475-8667
e-mail: hindichetna@yahoo.ca

इस अंक में

३ पाती
६ संपादकीय
८ रूह – सुधा ओम ढींगरा
९ ग़ज़लें –प्राण शर्मा
९ राष्ट्र भाषा गान– संदीप त्यागी
११ व्यंग्य– अतुल मिश्रा
१२ ज्योति किरण– भगवत शरण
१२ आओ नूतन वर्ष मनाएँ– देवेन्द्र मिश्र
१३ मार्शल ला– सुरेन्द्र भूटानी
१४ गीत –कुँअर बेचैन
१४ नये साल में आपकी जय हो– देवमणि पाँण्डेय
१५ मैं मुम्बई हूं– निर्मल सिद्धू
१६ ग़ज़ल–महेश नन्दा
१७ नव वर्ष संदेश – अमित सिंह
१७ परिवर्तन– किरन सिंह
१८ उड़ान (कहानी)– तेजेन्द्र शर्मा
२१ डॉ. महीप सिंह से बातचीत
२३ दिल का आँगन–जाफर अब्बास
२४ द्विचित्र– अरविंद नराले
२७ प्रज्ञा शोधन– इन्द्रा वडेरा
३० हलवा (बाल कथा)– रचना श्रीवास्तव
३१ कुंन्ठा (कहानी) – इला प्रसाद
३४ हिन्दी साहित्य सभा समाचार
३५ हिन्दी समाचार –यू.के.
३७ विश्व हिन्दी सचिवालय की त्रैमासिक पत्रिका
३८ आलेख डॉ राही मासूम रज़ा – डॉ. फ़ीरोज़ अहमद
४० यात्रा –मुकेश निनामा
४१ चित्र काव्यशाला– अरविंद नराले
४२ समीक्षा –अधूरी मुस्कान–
४३ संस्कार (कविता) –अनुराधा चंदर
४३ व्यंग्य– परमेश्वर की अदालत– प्रो. ओम कुमार आर्य
४५ कविता– गली– रजनी भार्गव
४५ कविता– भूखा पेट– त्रिलोकी नाथ टंडन
४६ कविता– जिज्ञासा –शशि पाधा
४६ उम्मीदें – साहिल लखनवी
४७ आवाज़ , लेख– कनिका सक्सेना
४८ व्यंग्य– आत्मरक्षा का अधिकार
डॉ. नरेन्द्र कोहली
४९ शिष्टाचार – आलेख– डॉ. ओंकार द्विवेदी
५१ श्रद्धांजलि–हास्य कवि सुरेन्द्र मोहन मिश्र
५२ समीक्षा –
५४ प्राप्त पुस्तकें
५६ रेडियो सबरंग
५७ दीप जला–हीरामन

ये भी हैं अपने हम राही

विशेष नियम:

रचनाएँ भेजते हुये निम्न लिखित नियमों का ध्यान रखें :

1. हिन्दी चेतना, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर, तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।
2. प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।
3. पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।
4. रचना के स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।
5. प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।
6. पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। ****

पाती

सम्माननीय सुधा जी,

"हिन्दी चेतना" का डॉ.कोहली विशेषांक पढ़ने के बाद यह पत्र लिखने बैठा हूँ तो इसका कारण विशुद्ध रूप से यह अंक है तथा श्री श्याम त्रिपाठी व आपकी साहित्य -निष्ठा एवं नरेन्द्र कोहली के प्रति प्रेम का प्रमाण है। मैंने इससे पूर्व हिन्दी चेतना के जो अंक देखें हैं , उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है और मैं कह सकता हूँ कि अपनी सीमाओं के बावजूद यह नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व तथा रचनात्मकता की एक प्रमाणिक झलक देने में सफल हुआ है। यहाँ पत्रिका की सीमाओं से मेरा अभिप्राय पृष्ट संख्या से है। इसके 76 पृष्ठों में जो सामग्री है वह विषय में दूर- दूर तक फैले हिन्दी भाषियों को अपने प्रिय लेखक से परिचित करवा सकती है। "हिन्दी चेतना" का यह अंक नरेन्द्र कोहली को विश्व -रंगमंच पर स्थापित करता है और मैं कह सकता हूँ कि यह पहली बार हुआ है । नरेन्द्र कोहली ने "रामायण" "महाभारत" तथा "विवेकानंद"आदि पर जो लिखा है , उसके पढ़ने वालों की संख्या हजारों - लाखों में है और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि मैं कहूँ कि वे प्रेमचंद और गुरुदत्त के बाद सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक हैं।

आपने हिन्दी लेखकों पर विशेषांक निकालने की जो परम्परा शुरू की है,वह किसी भी पत्रिका के लिए गौरव की बात है। प्रेमचंद पर निकला अंक काफी लोकप्रिय हुआ लेकिन नरेन्द्र कोहली के इस अंक नें आपकी पत्रिका को नया गौरव एवं स्थान प्रदान किया है। मैं इसे "हिन्दी चेतना" का काया कल्प कहता हूँ। कनाडा तथा अमेरिका मैं बैठ कर इतनी सुंदर पत्रिका निकलना और महीनों तक परिश्रम करना एक दुर्लभ साहित्य निष्ठा का प्रमाण है। इसके लिए आप तथा श्री श्याम त्रिपाठी के साथ वे सभी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने एक टीम के रूप में कार्य करके इस विशेषांक को निकाला है। इस पत्रिका की साज -सज्जा, नरेन्द्र कोहली का आवरण पर छपा चित्र आदि सभी में सुधार हुआ है और अब आप सभी पर यह दायित्व आ गया है कि इस स्तर को बना कर रखने के साथ पत्रिका के स्तर में निरंतर विकास होता जाये। हिन्दी के प्रवासी संसार में "हिन्दी चेतना" ने अब एक महत्वपूर्ण साहित्य की प्रतिष्ठा के लिए निरंतर प्रयास करती आ रही है और प्रवासी दुनिया के को प्रकाश में लाने का सफल प्रयास भी करती है ।

इसलिए आप सभी अभिन्दन के पात्र हैं । मैं आशा करता हूँ कि "हिन्दी चेतना" अपने अटूट प्रयासों में विश्व चेतना के रूप में मान्य होगी और हिन्दी विश्व में उसका आदर एवं सम्मान होगा। नरेन्द्र कोहली के इस अंक ने आप को इस पथ का पथिक बना दिया है। आप जब इस पथ पर और आगे बढ़ेंगें तो आप स्वयं देखेंगीं कि "हिन्दी चेतना" और विश्व चेतना एकाकार हो गई हैं। मैं 'हिन्दी चेतना' से ऐसी ही आशा करता हूँ और शुभ कामनाएं भेजता हूँ ।

प्रो.श्याम त्रिपाठी अद्भुत जीवट तथा अटूट आस्था के व्यक्ति हैं। साहित्य और भारत उनकी आत्मा का अंग है। उनकी निष्ठा और समर्पण अभिनन्दनीय है। "हिन्दी चेतना" में तो उनके प्राण बसते हैं। ऐसे मूक साधकों से ही हिन्दी प्राणवान हुई है। हमें उनका अभिनन्दन करना चाहिए।

शुभ कामनाओं के साथ
डॉ. कमल किशोर गोयनका

• •

संपादक हिन्दी चेतना,

हार्दिक बधाई एवं बुहत धन्यवाद। अंक सचमुच बहुत अच्छा लगा और उसका डॉ. कोहली पर केंद्रित होना मन को और भी हर्षित कर गया। 'हिंदी चेतना' ने सराहनीय और सामयिक पहल की है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। हम भी इसमें से कुछ अंश साभार लेना चाहेंगे। उस विषय में मैं अलग से सूचित करूंगा।

सादर,
बालेन्दु दाधीच (भारत)

• •

हिंदी चेतना संपादक,

इन्टरनेट के माध्यम से 'हिन्दी चेतना' का अक्टूबर अँक पढ़ा । आप लोग सुदूर पश्चिम में रहते हुये हिन्दी के प्रचार प्रसार में कार्यरत हैं। यह सराहनीय कदम है। आप लोगों के प्रयास से हिन्दी विश्व की भाषाओं में से एक अधिकारिक भाषा होगी। मेरा भी कार्य क्षेत्र हिन्दीत्तर भाषाओं के बीच हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करना है। आप लोगों के प्रयास से ऐसा अनुभव हो रहा है कि हिंदी अपनी माटी से अधिक दूसरों की मिट्टी में ही फैलेगी।

नमस्कार पूर्व
डा. रामचन्द्रा राय
रतनापल्ली, नार्थ

प्रिय सुधा जी,

मेरी दृष्टि से अंक बहुत सुंदर और उपयोगी बन पड़ा है। मेरे मन में प्रधान संपादक के प्रति, आपके प्रति तथा आपके संपादक मंडल के प्रति प्रशंसा है। आपके स्तर की भी स्तुति करनी चाहिये और आपके परिश्रम की भी। देश से इतनी दूर रह कर भी आप लोग इतना सार्थक कार्य कर रहे हैं। आप लोगों के लिए 'बधाई' बड़ा छोटा सा शब्द है।

मैं जनवरी 2010 में 70 वर्ष का हो जाऊंगा । उक्त अवसर पर कुछ विशेष प्रकाशन होने हैं। मुझे लगता है कि आपका यह अंक उनके लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगा। आपको बहुत - बहुत बधाई। मैं आपकी चरम सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

नरेन्द्र कोहली (भारत)

• •

आदरणीय त्रिपाठी जी,
नमस्कार,
आपके सौजन्य से 'हिन्दी चेतना' का डॉ. कोहली विशेषांक प्राप्त हुआ। 'हिंदी चेतना' का यह अँक हिन्दी जगत को समृद्ध करने में सफल रहा है। हिन्दी प्रचारिणी सभा कैनेडा की इस त्रैमासिक पत्रिका को देखकर बिहार के हिंदी साहित्यकार मुग्ध हैं। प्रकाशन का स्तर भारत से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं के समकक्ष है। 'हिंदी चेतना' परिवार को बधाई।

ठोस सामग्री की दृष्टि से भी यह अंक अनुपम है। डॉ. नरेन्द्र कोहली का कुंभ सारगर्भित और अत्यन्त रोचक ढंग से लिखा संस्मरण है। प्रसन्नता है कि उन्हें बिहार में (जमशेदपुर - अब झारखंण्ड) में बिताया गया बचपन उनके निर्माण में सहायक हुआ। प्रेम जनमेजय , श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी , प्रो. हरिशंकर आदेश रचनाकारों ने डॉ. कोहली के कृतित्व और व्यक्तित्व पर सम्यक प्रकाश डाला है।

मैं इस अंक को बिहार से प्रकाशित होनेवाली त्रैमासिक 'भाषा भारती' पत्रिका को भेज रहा हूं। 'संवाद' द्वारा इसका अभिनंदन करूंगा।

सादर,
आपका
राधाकृष्ण प्रसाद , शारदा कुट्टीर
17 ब्राह्मणनगर, पटना , बिहार , भारत

संपादक ' हिन्दी चेतना'

आप लोग बहुत ही सराहनीय काम कर रहे हैं। नरेन्द्र कोहली के विषय में इतनी जानकारी प्राप्त हुई। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं आपकी प्रशंसा कर पाऊं। यह अंक अतुलनीय है। यही कह सकती हूं।

- राधा गुप्ता (अमेरिका)

• •

सुधा जी,

आपके सुंदर शब्दों के लिए बहुत - बहुत धन्यवाद। हिंदी चेतना का स्तर दिन प्रति दिन बेहतर हो रहा है । यह अंक बहुत ही अच्छा है आपका अथक परिश्रम सराहनीय है। अनेक शुभकामनाएँ।

- पूर्णिमा वर्मन
संपादक- अनुभूति - अभिव्यक्ति

• •

सुधा जी,
नमस्कार,

नरेन्द्र कोहली पर आधारित 'हिन्दी चेतना' का अक्टूबर अंक बहुत अच्छा लगा। नरेन्द्र कोहली से अभिनव जी की बातचीत सारगर्भित है। चित्रकाव्यशाला बहुत रोचक है।

देवमणि पाँण्डेय (भारत)

• •

डॉ. सुधा ढींगरा जी ,
नमस्कार,
आप द्वारा भेजी " हिंदी चेतना" का नवीन अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद। एक लेखक पर विशेष अंक निकालना बड़ी बात है। आपका और श्याम त्रिपाठी जी का बहुत श्रम दिखाई देता है। सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई।

आप और हमारे ऊपर कितनी भारतीय पत्रिकाएँ निकलती हैं? आम तौर पर दिल्ली के लेखक गण कितना ध्यान देते हैं? विदेशों में बहुत लिखा जा रहा है। हम प्रवासी लेखकों को अपनी प्रतिभा और सेवा से अंतर्राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के प्रसार के साथ अपने प्रिय लेखकों को भी प्रोत्साहित करना चाहिये।

शुभकामनाओं सहित
सुरेशचन्द्र शुक्ला " शरद आलोक" , संपादक ,
स्पाइल , नार्वे

माननीय सुधा जी ,

धन्यवाद। इस बार का अंक ध्यान से पढ़ गया हूं। नरेन्द्र कोहली मेरे अग्रज तो हैं ही, वरिष्ठ सहयोगी भी रहे हैं। सो स्वाभाविक है कि उन पर विशेषांक देखकर बहुत अच्छा लगा है। प्रो.आदेश जी और नवल के आलेख खूब बन पड़े हैं।

अंक का विशिष्ठ आयोजन उनसे लिये गये साक्षातकार और स्वयं उनका वक्तव्य है। बधाई। लेखक के विचारों से आप सहमत हों अथवा पूरी तरह न सहमत हों यह जरूरी नहीं लेकिन उसके विचार सामने आयें इसे मैं बहुत जरूरी मानता हूं। ऐसे ही रचना पसन्द या नापसन्द की हो सकती है लेकिन मत पढ़कर कर ही बनाना चाहिये। आपने एक रचनाकार को काफी हद तक सामने लाकर उचित कार्य किया है अत: आशा है यह कर्म आगे भी चलेगा। शुभकामनाएँ ।

- दिविक रमेश (भारत)

• •

अँक देखा, बहुत अच्छा लगा। बधाई। आपने कोहली जी पर विशेषाँक निकालकर एक प्रशंसनीय कार्य किया है।
सादर

- अनिल जोशी
प्रवासी टुडे

• •

प्रिय सुधा जी ,

आज ही मुझे 'हिन्दी चेतना' का नरेन्द्र कोहली विशेषाँक मिला । एक ही बैठक में सारा का सारा अँक पढ़ गया हूँ। नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अच्छी सामग्री है। श्री कमल किशोर गोयनका और अवनीजेश अवस्थी दोनों के नरेन्द्र कोहली से संवाद पत्रिका की जान हैं। अँक में आप सबका परिश्रम झलकता है। बधाई ।

प्राण शर्मा (यू.के.)

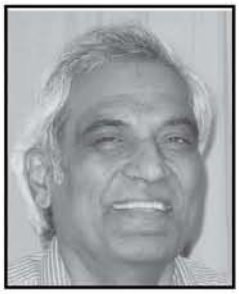

प्रिय संपादक जी ,
अक्टूबर का 2008 चेतना अँक डॉ सुधा ढींगरा के सौजन्य से पी.डी.एफ. रूप में प्राप्त हुआ । इस रूप में लेखन सामग्री का उपयोग बहुविध मात्रा में उपलब्ध है। अंक के मुख्य पृष्ठ का डॉ. कोहली जी का चित्र लाजवाब है, दृष्टि स्तब्ध कर देता है, पाठक कुछ पल आगे बढ़ नहीं सकता।

हिन्दी चेतना की सफलता के लिए धन्यवाद। प्रो. आदेश जी की लेखनी द्वारा डॉ. कोहली जी के व्यक्तित्व की गहनता की अनुभूति हुई और असीम प्रेरणा मिली। डॉ. कोहली के व्यंग्य, कहानियाँ व उपन्यास की सराहना डॉ सुधा जी ने यथा तथ्य की है और उनके स्नेह व आत्मीयता का उचित परिचय दिया है। स्वयं डॉ. कोहली जी का कुंभ पढ़कर उनकी सहज सरल तथा रोचक वाणी का परिपूर्ण आनंद आया। प्रति दिन बढ़ती हुई हिन्दी चेतना की उत्तमता का यह प्रमाण है।
डॉ. रत्नाकर नराले (कनाडा)

शुभ चिंतक

देवेन्द्र सिंह (अमेरिका)
अनुराधा चंदर (अमेरिका)
डॉ. ध्रुव कुमार (अमेरिका)
डॉ. बबिता श्रीवास्तव (अमेरिका)
श्रीमती सरोज शर्मा (अमेरिका)
राज जोशी (अमेरिका)
सुधा राठी (अमेरिका)
डॉ. कृष्ण कुमार (यू. के.)
ऊषा राजे सक्सेना(यू.के.)
रूप सिंह चंदेल (भारत)
सुभाष नीरव (भारत)
डॉ. प्रेम जन्मेजय (भारत)
स्नेह सिंहवी (कैनेडा)
अनुपमा सिंह (कैनेडा)
प्रेम मलिक (कैनेडा)
रंजना शर्मा (कैनेडा)
अरुणा भटनागर(कैनैडा)
डॉ. सुभाष चन्द्र शर्मा (कैनेडा)
लता सेठ (कैनेडा)
नीरा शर्मा (कैनेडा)

संपादकीय

भारत पर आतंकवादियों का आक्रमण देशवासियों के स्वाभिमान पर एक करारी चोट है। यदि अब भी हमारी नीद नहीं खुली तो कब खुलेंगी। खुलेआम इन्हीं के पूर्वज 10वीं व ग्यारवीं सदी में हमारे यहाँ लुटेरों की तरह आये थे और हमारे देश से कभी वापस नहीं गये। हमारे देशवासियों ने सहनशीलता और सज्जनता के आदर्शों को सामने रखकर दुश्मनों को शरण दी। लेकिन वह समय और था। आज दुनिया न्यूक्लेयर के दौर से गुज़र रही है । एक छोटी सी चिंगारी विश्व को तहस नहस कर सकती है। फिर न मर्ज़ रहेगा न मरीज़। लेकिन यह जानते हुये भी क्या हम दुम दबा कर बैठ जायें। हमें गाँधी के सिद्धान्त बहुत प्रिय हैं लेकिन यदि हम उन्हीं सिद्धान्तों पर चलते रहे तो हमारा देश आतंकियों का देश हो जायेगा।

हमें मानव अधिकारों की परिभाषा का अर्थ अच्छी तरह मालूम है। आतंकवादी कोई मानव नहीं होता वह तो एक दरिन्दा, दैत्य, पशु, राक्षस और रावण की ही संतान होता है। हम युगों से रावण को जलाते आये हैं तो यदि हमारे पास मुम्बई हमले के पक्के और ठोस सबूत हैं तो हमें इन रावणों को जीवित जला देना चाहिये। हमारे निर्दोष,निहत्थे,मासूम बच्चों को जिस प्रकार गोलियों से भून दिया गया क्या हमें उन्हें मुंह तोड़ जबाव नहीं देना चाहिये। हमारे शासक कब तक सोचेंगे?हमारे देश का भविष्य क्या है ? यह प्रश्न मेरे हृदय की गहराइयों को चीरकर बार - बार सामने आता है कि हमें कुछ करना चाहिए, बहुत देर हो चुकी है अब हमें पल पर भी इधर - उधर के झमेलों में नहीं पड़ना चाहिये।

भारतीय आज विश्व के कोने - कोने में आत्म सम्मान और गौरव से सिर ऊंचा किये हुये ऊँचे - ऊँचे पदों पर विराजमान हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, मुद्रा, कला, साहित्य, संस्कृति और भाषा के क्षेत्र में सबसे आगे हैं। जो परिस्थितयाँ आज भारत के सामने हैं वह हमारे लिए एक भयंकर चुनौती के समान हैं । नया वर्ष द्वार पार कर चुका है। आज हमें भारत के उन हज़ारों शहीदों की याद आती है जो स्वर्ण मंदिर के पवित्र नगर अमृतसर, जलियाँवाला बाग में जरनल डायर की गोलियों के शिकार हुये थे। 90 सालों के बाद उन शहीदों को राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया है।

पिछला अँक डॉ. नरेन्द्र कोहली जी को समर्पित था। विशेषाँक बहुत ही विशाल कार्य है, इसे प्रकाशित करने में समय और स्थान की सीमाएँ शिथिल हो जाती हैं। लेकिन इससे मन को जो सुख प्राप्त होता है वह वाणी का विषय नहीं है।

मेरा विश्वास है कि आप सभी ने इसका आनन्द अवश्य लिया होगा।

जनवरी का अँक आपको नए वर्ष की शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ। भारत में हुए आतंकवादी हमले की भयंकर घटना से साहित्यिक जगत में एक आक्रोश व निराशा छा गई है। जो कि स्वभाविक है। हमें दुख है और उन सभी प्रियजनों के प्रति जिनके प्रिय लोग इस हमले के शिकार हुये हैं हम उनके दर्द को अच्छी तरह महसूस करते हैं। यह हम सबका दर्द है। 'हिन्दी चेतना' की ओर से सभी लोगों को जो इस हत्याकांण्ड में शिकार हुये श्रद्धाँजलि अर्पित है। ईश्वर सभी की आत्माओं को शान्ति प्रदान करे। यह प्रहार विश्व पर प्रहार है; मानवता पर प्रहार है।

साहित्यकारों के मन में इस समय जो उदगार उठ रहे हैं मैं इसे अच्छी तरह अनुभव कर सकता हूं। कई बार तो ऐसा लगता है 'मेरे मन में आग लगी है, जग में आग लगा दूं'। मुम्बई ने भारत को हिला कर रख दिया। नव वर्ष आ गया है हमें किस प्रकार इस देश की सीमाओं को सुरक्षित रखना है यह एक बहुत बड़ी समस्या है जिसका समाधान हर भारतीय पर है चाहे वो विश्व के किसी भी कोने में रहता हो।

'हिन्दी चेतना' के लेखकों के सम्मुख एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है । हम इस पत्रिका को उच्च स्तरीय पत्रिका के रूप में देखना चाहते हैं । हम अपेक्षा करते है कि लेखक केवल लिखने के लिए ही न लिखें बल्कि वे विचार करें कि हम जो लिखने जा रहे हैं उससे साहित्य को क्या लाभ होगा। हमारा संपादक मण्डल बहुत गम्भीरता से लेखकों के लेख व रचनाओं का निरीक्षण करता है इसलिए जो रचना पत्रिका में नहीं छपी वह स्पष्टरूप से तुला पर ठीक नहीं बैठी । लेखकों से अनुरोध है कि भविष्य में अपनी रचनाएं हिन्दी में टाइप करके भेजें। आजकल कम्प्यूटर पर यूनीकोड द्वारा आप अपनी रचनाएँ हिन्दी में लिख सकते हैं।

हम यह पत्रिका कई वर्षों से प्रकाशित कर रहे हैं और हमने देखा कि बहुत से हमारे सदस्य नि:शुल्क इसका आनन्द ले रहे हैं इसलिए अब हम उन्हीं पाठकों को पत्रिका भेजेंगे जिनका सदस्यता शुल्क हमारे पास पहुंच चुका है। हम जानते हैं कि पत्रिकाएँ क्यों नहीं चल पातीं क्योंकि सदस्य अपनी सदस्यता नहीं भेजते। इस साफ सुथरी पत्रिका को आप तक पहुंचाना चाहते हैं किन्तु आपके सहयोग के बिना यह संभव नहीं। हम सर्वदा आपके रचनात्मक सुझावों का सम्मान करते हैं।

हमारी इच्छा है कि आप इसे अपनी पत्रिका समझकर पढ़ें और अपने मित्रों को भी इसके साथ जोड़ने का प्रयास करें।

हमें गर्व है कि हिन्दी चेतना ही एक ऐसी पत्रिका है जो वर्ष में एक विशेषाँक प्रकाशित करती है। भविष्य में कौन इस श्रेय का अधिकारी होगा अगले अँकों में हम इसकी सूचना अवश्य देंगे।

प्रवासी साहित्यकार तन, मन, धन, से नया और गौरवमय साहित्य सृजन करने में जुटे हुये हैं। हमें प्रवासी लेखकों पर गर्व करना चाहिये और उनकी कृतियों के प्रति श्रद्धा और सहानुभूति की भावना रखनी चाहिए। हमारे अनुभवी लेखकों को नए लेखकों के प्रति संवेदनशील होकर उनकी रचनाओं का अनुमोलन करना चाहिए । समय - समय पर हमें छोटी गोष्टियाँ व साहित्यिक सम्मेलनों का आयोजन करना चाहिये जिनमें इन विषयों पर खुलकर चर्चा हो सके। भारत से बाहर हर दिन हिन्दी में एक पुस्तक निकल रही है । लेकिन साहित्यकार संक्रीणता की परिधि में बंधे होने के कारण दूसरे लोगों से सम्पर्क बनाने में असमर्थ हैं। कुछ अहं और स्वार्थ के भी शिकार हैं जो केवल अपना ही भला चाहते हैं, दूसरा क्या करता है या क्या कहता है इससे उनको कोई सरोकार नहीं । प्रवासी साहित्यकारों का कोई एक मंच नहीं बन पा रहा है । संस्थाएँ घर - घर खुल रही हैं लेकिन कोई ठोस काम नहीं हो पा रहा है। कंम्प्यूटर के जाल में लेखक ऐसा फंस गया है कि वह उससे बाहर निकल ही नहीं पाता। यदि प्रवासी साहित्य-कार मिलकर एक नेटवर्क के अर्न्तगत मिलजुलकर अनुशासन के ढाँचे में बंधकर काम करें तो प्रवासी साहित्य का भविष्य बदल सकता है। 'हिन्दी चेतना' इस दिशा में सर्वदा प्रयत्नशील रही है ।

हमारे पास अनेकों पुस्तकें समीक्षा के लिए आती रहती हैं । समय की अभावता के कारण हम इन के साथ न्याय नहीं कर पाते । इसलिए आपसे निवेदन है कि जो लोग इस विधा में कुशल हों वे हमारे साथ सम्पर्क स्थापित करें ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि नव वर्ष में 'हिन्दी चेतना' को हम एक संतुलित और सक्षम साहित्यिक पत्रिका बनाने में सफल होंगे।

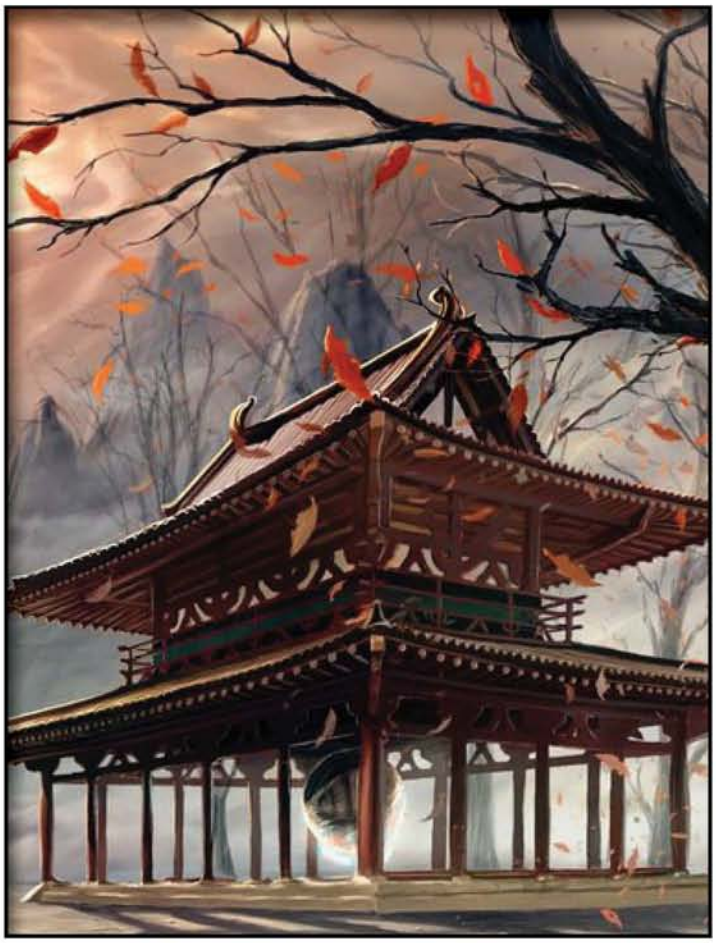

कविता

रूह

सुधा ओम ढींगरा

आतंकवादी हमला हो
या जातिवाद की लड़ाई
रूह
वापिस देश अपने
भाग है जाती ।

हिस्सा बन उसका
हर पीड़ा
हर दर्द
हर चोट है खाती
वेदना से है कराहती ।

और हर बार
ज़ख्मी
लुटी – पिटी
प्रताड़ित
परदेस लौट है आती ।

रूह अड़ियल है
कहा नहीं मानती
डट है जाती
दाग देती है
कई प्रश्न नेताओं को ।

हर बार
दुत्कारी है जाती
परदेसी हो–
परदेस में रहो
"देश के कामों में टाँग न अड़ाओ"

देश हो या परदेस
ढीठ रूह भी
नेताओं को पकड़ने से
बाज़ नहीं आती
उन्हें प्रश्न पूछती ही रहती है।

और हर बार
उसके प्रश्न
नेताओं के सामने परोसे–
मुर्गों के नीचे दब हैं जातें
शराब के प्यालों में बह हैं जातें ।

नेता भी जानते हैं
रूह ज़्यादा दिन
चिल्ला नहीं पाएगी
दो वक्त की रोटी, बच्चों की पढ़ाई
बाप की बीमारी , माँ की तिमारी में खो जायेगी।

उलझे प्रश्नों औ'
आतंकवाद के डर तले
रूह
फिर तड़पती
बिलखती रह जाएगी।

ग़ज़लें

प्राण शर्मा – यू. के.

कौन उस सा फ़कीर होता है
जो भी दिल का अमीर होता है
उसको क्या खौफ है ज़माने का
साफ़ जिसका ज़मीर होता है
ताना हर बात पर नहीं देते
पार दिल के वे तीर होता है
काश, कौंधे नहीं कभी बिजली
फूल सा मन अधीर होता है
वैसा ही होता मिजाज़ उसका
जिसका जैसा ज़मीर होता है

२

क्यों न महकूँ गुलाब सा प्यारे
दु :ख के बिस्तर से हूँ उठा प्यारे
तय तो हो जायेगा सफर अपना
धीरे-धीरे ही जो चला प्यारे
कभी नाराजगी कभी अनबन
दोस्ती में रहा गिला प्यारे
यूँ ही लड़ते रहे अगर दोनों
किस तरह होगा फैसला प्यारे
आँख मलता नहीं तो क्या करता
हर तरफ से धुंआ उठा प्यारे

३

तुम्हारी याद ही तुमसे भली है
जो गम में साथ देने आ गयी है
नहीं है ओस -भीगे फूल में भी
तुम्हारे संग में जो ताजगी है
हृदय में आस है मिलने की बाकी
अभी इस घर में कुछ-कुछ रौशनी है
कभी तो डाल दो तुम आ के डेरा
बड़ी सुनसान सी दिल की गली है
ग़ज़ल कहता हूँ तेरा ध्यान करके
यही ऐ "प्राण" अपनी आरती है

४

भयानक हादसों में जिंदगी के
हैं उड़ते होश हर इक आदमी के
जो दिलवालों की बस्ती है,वहां भी
कहाँ बसते हैं सब घर दोस्ती के
इबादत ही सही ईमान तेरा
कई हैं ढंग रब की बंदगी के
कभी गुस्सा,कभी मुस्कान मुंह पर
कई हैं रंग या रब आदमी के
कभी तारीफ थी इसकी जहाँ में
अब उड़ते परखचे है दोस्ती के

राष्ट्र भाषा गान

संदीप त्यागी – कनाडा

जय जय हृदय हुलासनी हिंदी
विश्वविकासिनी भाषा
अभिलाषा अखिल राष्ट्र भारत की
नित्यनवल परिभाषा
कल्याणि ! वाणी नव आशा
जननि! जन्मभू भाषा
तब स्वाध्वय से जागें
सब उन्नति पथ लागें
गावें तब गुणगाथा
जनजन हृदयनिवासिनी हिंदी
सरल सुभाषिणी भाषा
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय जय हे

कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा के साथ मुलाकात करते हुये भारत के कुछ सुप्रसिद्ध व्यक्ति

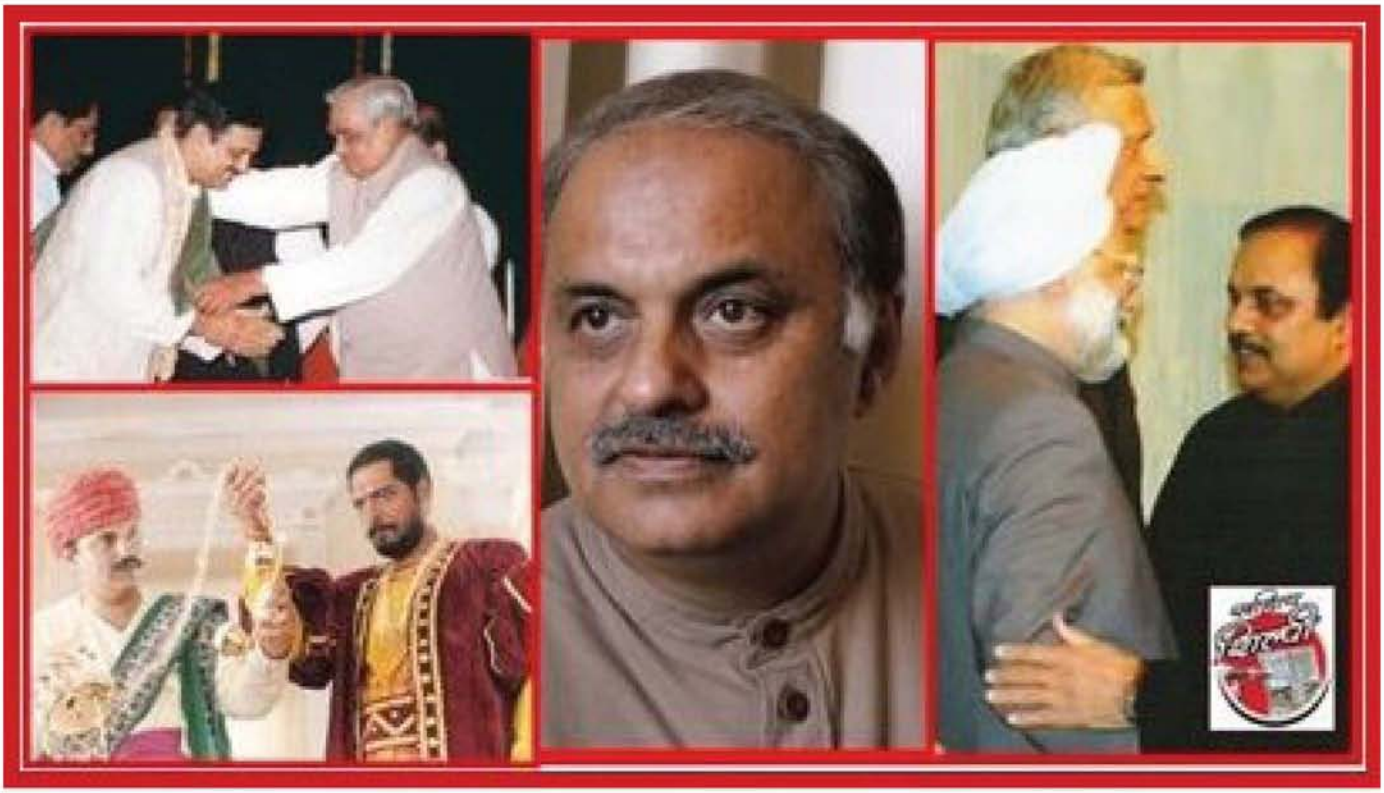

व्यंग्य

अतुल मिश्र (भारत)

बकरी की आवाज़ वाला एक शेर , जिस जंगल का **राजा था , वहाँ एक** लोमड़ी भी रहती थी । लोगों का मानना था कि शेर को राजा बनाने के पीछे विदेशी जानवरों का नहीं, बल्कि इसी का हाथ था। लोमड़ी तमाम जानवरों से कहती फिरती थी कि राजा बनने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है और वह तो केवल जंगल वासियों की सेवा ही करना चाहती है। जानवर उसके इस त्याग से बहुत खुश थे और अक्सर उसे राजा बनाने की पेशकश सिर्फ इसलिए करते रहते थे कि उन्हें पता था कि वह इसे स्वीकारेगी नहीं।

इस जंगल में ऐसा नहीं था कि शेर ही राजा बन सकता था । बहुमत अगर गीदड़ के साथ है तो "कायदा नामक व्यवस्था के आधार पर वह भी सत्ता - सुख भोगने का अधिकारी हो सक-ता था।" इस बार " नाखून करार" को लेकर कुछ जानवर जो राजदरबार में शामिल होने के बावजूद खुद को विपक्षी मानने के मुगालतों से भरे थे, खुलकर राज - दरबार के विरोध में हो गये कि समन्दर पार के जंगली जानवरों से यह करार करने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। शेर और लोमड़ी सहित कई बीमार जानवर इस बात से बहुत दुखी हुये कि वे " अब जंगल की खातिर " शब्द को ज़्यादा दिन तक इस्तेमाल नहीं कर पायेंगे। बहुमत हासिल करने के लिए गोटि याँ तो फिट की ही गयीं , कई लोगों को बड़ी तादाद में बोटियाँ भी बाँटी गयीं। लोमड़ी और बकरीनुमा शेर इस बात से परेशान थे कि जिन लोगों को वे जानवर घास तक नहीं डालते थे, आज उनके हवाले सारी बोटियाँ सिर्फ इसलिए करनी पड़ रही हैं कि वे इन्हें अपने हिसाब से बाँटकर बहुमत जुटा सकें।

बढ़िया , मगर कमज़ोर जानवरों की बोटियाँ बँटने की सूचना जंगल की आग की तरह फैल गयी । लोग शेर के आवास के आस - पास ऐसे चक्कर लगाने लगे। , जैसे बोटियों के बटने की उन्हें कोई जानकारी नहीं है और केवल हवा - पानी बदल-ने की गरज से ही वे लोग इस दिशा में आये हैं। इधर, विपक्षी जानवरों में शेर को हटाकर किसी देशी शेरनी को रानी बनाने की तैय्यारियाँ जोरों पर थीं। इसकी असली बजह क्या थी, यह तो पता नहीं चल सका , मगर हाँ, इतनी जानकारी जंगलवासी प्राणियों को ज़रूर मिली कि मादा जब चाहे तब बहुमत अपने पक्ष में कर सकती है।

कार्टूनों के लिए अतुल मिश्रा को 'हिन्दी चेतना' की ओर से बहुत सारा धन्यवाद

ज्योति किरण

भगवत शरण श्रीवास्तव "शरण"

ज्योति किरण धरती पर आये, घोर अमावस रूप सजाये
मंगल मूरति गणेश का, हर घर पूजन दीप जलाये ।
मां लक्ष्मी कृपालु हो सब पर हर घर से दीनता मिटाये ।
जिसके हिय में बसी कालिमा उसको दीपावली हटाये ।

मिट जायें सब तम के बादल आशा के दीपक मुस्कायें
सजी अयोध्या इसी दिवस थी राम थे वन से वापस आये
पुर वासी ने मुदित हृदय से कितने अनुपम भवन सजाये
राज महल से हर कुटिया तक राम नाम के दीप जलाये ।

सब अनिष्ट को मेट के देखो राम लखन सीता पुर आये
भरत शत्रुधन हृदय द्रवित कर मेटे राम लखन हर्षाये
सीता मिलीं उर्मिला के हिय अश्रु न द्रग से रोका जाये
हा भगिनी हिय आज जुड़ाना मुख से कुछ भी कहा न जाये ।

मिली मांडवी अति अकुलानी श्रुतिकीरति ने दृग छलकाये
कैसे हिय की बात बताऊं तुम बिन हमको कुछ न भाये
सरयू की धारा अधीर थी लहर लहर रघुकुल गुण गाये
पवन पुत्र भी चकित हो रहे राम नाम की रटन लगाये ।

इद्रपुरी भी लजा रही थी देख अयोध्या सगुन मनाये
सकल देवता गण धरती पर आकर देखो दीप जलायें
ऐसी सजी अयोध्या इस दिन जिसकी शोभा वरनि न जाये ।
राम नाम का रस पी पीकर नर नारी उल्लास मनाये

वही अयोध्या आज क्षुब्द है कहीं आग कहीं बाम फटाये
किसी को मजहब का नारा है कोई आस्था पर मिट जाये
आओ राम आज आ जाओ रघुकुल की मर्याद सिखाओ
निरख रहे सब बाट तुम्हारी हे! रघुनन्दन दरस दिखाओ ।

भारत मे विस्फोट हो रहे रावण फिरता शीष उठाये
भारत की रखवाली करने कुछ तो भगवन करें उपाये
शीध्र ही कुछ तो करना होगा कैसे इसको रोका जाये
मेंटो! भारत के शत्रु को यह फिर से अखंड हो जाये ।

भारत की संस्कृति न बिगड़े ऐसा पाठ अब कौन पढ़ाये
आज युवा पीढ़ी भटकी है सत्य पथिक ही राह दिखाये
तुम्हे गये बीते कितने युग युग का धर्म न कोई सिखाये
इस जीवन की कला है कैसी जीवन मर्म न कोई बताये ।

दिशा भ्रमित है आज युवा प्रभु सत्य राह को देख न पाये
राष्ट्रधर्म हर मन में जागे ऐसा कुछ भगवन हो जाये ।
मिट्टी गारे की इक कृति पर मूरख मानव द्वन्द मचाये
कोई न सोचे राष्ट्र धर्म को अपना अपना राग सुनायें ।

ईश्वर की तो सारी दुनियां उनको कोई बांध ना पाये
फिर क्यों मूरख बने सभी मुझे तो कुछ भी समझ न आये
न मैं हूं कोई सुधार वादी न मैं कोई धर्म प्रचारक
हो कल्याण सभी का जग में मैं तो करता यही दुआयें ।

आओ नूतन वर्ष मनायें

प्रो. देवेन्द्र मिश्रा

जनमन दुखित अर्थ पीड़ित है
जग में आज शान्ति शपित है
आतंकी आग प्रज्जवलित है

छिन्न भिन्न संकल्प हो रहे
बाधों के सर्प डस रहे
भूले सारे गीत अन कहे

अब क्या अपनी व्यथा सुनायें
कैसे नूतन वर्ष मनायें

नभ में हुआ कैसा गर्जन
ज्योतिर्मय है जग मन आँगन

फिर से एक नई आस जगी है
कुछ करने की बात उठी है

" कासब" कसाई दंडित होगा
पुनः शान्ति का शंख बजेगा
उद्योगी चक्की घूमेगी
जनजीवन फिर सुखमय होगा

करें प्रतिज्ञा हम न डरेंगे
मिलकर नवयुग सृजन करेंगे
चलो शहीदों की मुम्बई के
सब मिल श्रद्धा सुमन चढ़ायें
आओ नूतन .....मनायें

मार्शल[1] ला (आपतकालीन स्थिति)

सुरेन्द्र भूटानी (पोलैंड)

मेरे मुल्क में शायर लोग दस्ताने पहनकर लिखते हैं
नंगे हाथों से लिखेंगे तो दर्द के दरिया बहने लगेंगे

अब अपने जज़्बात को छिपाना आता है इनको
लहू के घूंट पी कर , पर्दों में [३] रहना आता है इनको

हुक्काम की तराँ सरकारी[४] बंगलों[५] में रहना रास आ गया है
मोटर गाड़ी ,कम्प्यूटर,वग़ैरा वगैरा,सब पास आ गया है

अहसास की किल्लत के क्या मानी
ज़मीर की सदाकत के क्या मानी

सुना है अब तो नये दस्ताने बाहर से मुहैय्या हो रहे हैं
हर बाहर की चीज़ की नुमाइश अच्छी है
हुक्मरानों की शायरों से आज़माईश अच्छी है

हाँ वो ज़माने गये जब चंद शायर जेल भी जाया करते थे
ख़ूने - जिगर से 'जिन्दानामा' भी लिखा करते थे

1 आपतकालीन स्थिति 2 पसंद आना 3 कमी
4 अंतरात्मा 5 सच्चाई 6 कारावास की कहानी जो फैज़ साहिब की एक किताब का नाम भी है

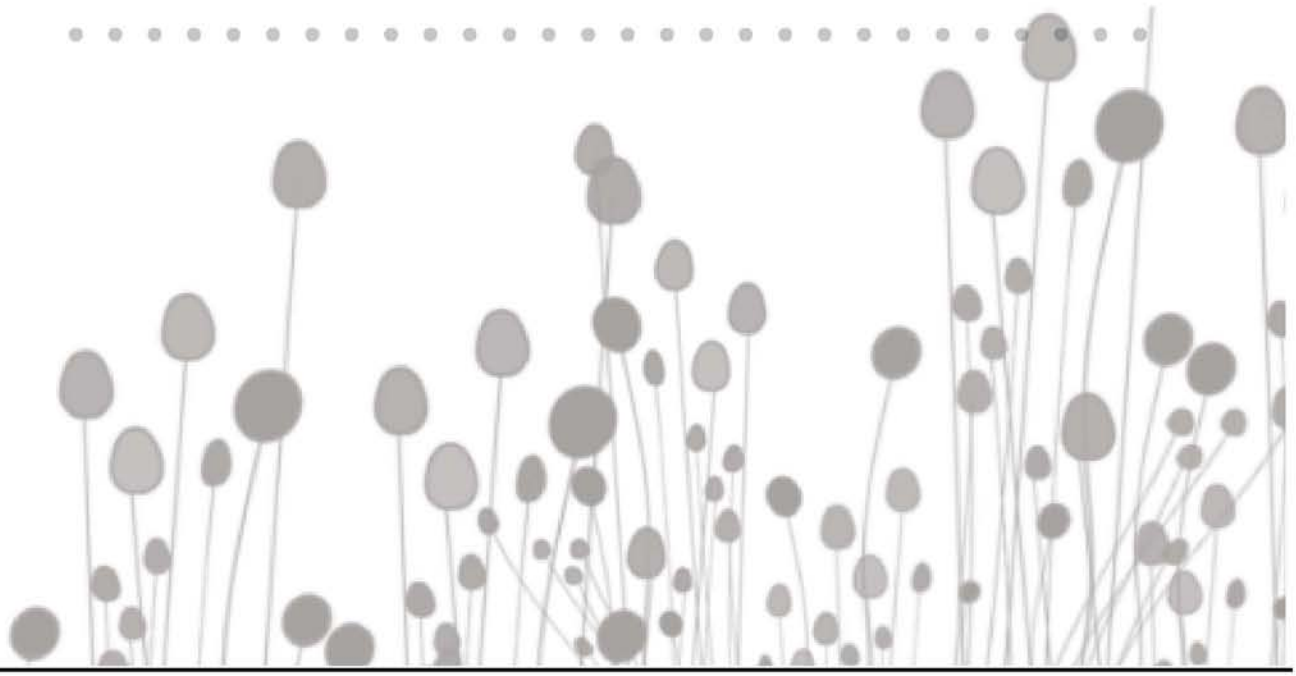

गीत

कुँअर बेचैन
(भारत)

मैं नदी की धार में हूँ।

जो हृदय में है तरंगित
उस अनोखे प्यार में हूं।
मैं नदी की धार में हूँ।।

मिलन - बिछुड़न दो किनारे
हँसी मीठी, अश्रु खारे
साथ में सब हैं हमारे
धूप सूरज चाँद - तारे

मैं प्रवाहों की प्रभावी
धार के अधिकार में हूँ।
मैं नदी की धार में हूँ।।

भँवर भी है धार भी है
नीर की बौछार भी है
दूर तट की नव छटा है
नाव भी पतवार भी है

विरह मुझसे दूर रहना
मैं अभी अभिसार में हूँ।
मैं नदी की धार में हूँ।।

कभी उठकर , कभी ढहकर
कभी सहकर , कभी भ्कहकर
मैं नदी के साथ रहकर
साथ चलकर, साथ बहकर

सिंधु से जाकर मिलूँगा
बिंदु के आकार में हूँ।
मैं नदी की धार में हूँ।।

नए साल में आपकी जय हो

देवमणि पांडये
(मुंबई)

नया साल हमसे दग़ा न करे
गए साल जैसी ख़ता न करे

अभी तक है छलनी है हमारा शहर
नया ज़ख्म खाए खुदा न करे

नए साल में रब से मांगें दुआ
किसी को किसी से जुदा न करे

मेरी ज़िंदगी तो है सबके लिए
भले कोई मुझसे वफा न करे

फरिश्ता तुझे मान लेगा जहां
अगर तू किसी का बुरा न करे

झमेले बहुत ज़िंदगानी के हैं
तुझे भूल जाऊं खुदा न करे

मैं मुम्बई हूँ.....

निर्मल सिद्धू - कनाडा

खुशियों का समन्दर मेरा, हुआ दर्द में तब्दील
किसको दिखाऊं अब मैं ग़म की फेहरिस्त तवील
ज़र्रा ज़र्रा हुआ है घायल , रेशा रेशा है ग़मगीन
चप्पे चप्पे आग बरसती , आँसू बन गये झील

हब्स के घेरे में घिर मैं, आज बनी तमाशा हूँ
मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ

अपने ही जिगर के टुकड़ों को , आज बिछड़ते देखा
अपने ही सीने पर दुश्मन को , बरूद उगलते देखा
खूँ से रँगा है जिस्म मेरा , हुआ है दिल मेरा छलनी
बग़ैर कफ़न के बेटों को, कब्रों में उतरते देखा

दर्द की कितनी ही तहों से मैं, आज गुज़र गई हूँ
मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ

मुझको हिस्सों हिस्सों में ओ ! ज़ालिम, काटने वालो
अनगिनत टुकड़ों में मुझे तुम, आज बाँटने वालो
मेरी आँखों का नूर , मेरे दिल का सरूर छीनने वालो
मतलब की ख़ातिर , विदेशों के तलवे चाटने वालो

जान लो , उजड़ के दोबारा हर बार ही मैं बस गई हूँ
मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ

बे गुनाहों का लहू जब, सर चढ़ के तुम्हारे बोलेगा
याद रहे , तुम्हारी माँओं का कलेजा भी उस दिन डोलेगा
अर्श से बरसेंगे जब, इंतकाम के गहरे बादल
हर जुर्म तुम्हारा , वक़्त अपनी तराजू में तोलेगा

कल चलूँगी रफतार से अपनी , आज सिमट गई हूँ
मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ

ये उजड़े हुये ढाँचे तो फिर से खड़े हो जायेंगे
दिल पे लगे घाव मगर , एक दिन तो रंग लायेंगे
कत्ल को जायज़ और क़ातिल को पनाह देने वाले
रब की अदालत से भी, बच न कभी पायेंगे

जान लो सब , न मैं न्यूयार्क , न मैं लंदन, न ही शंघाई हूँ
मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ, मैं मुम्बई हूँ

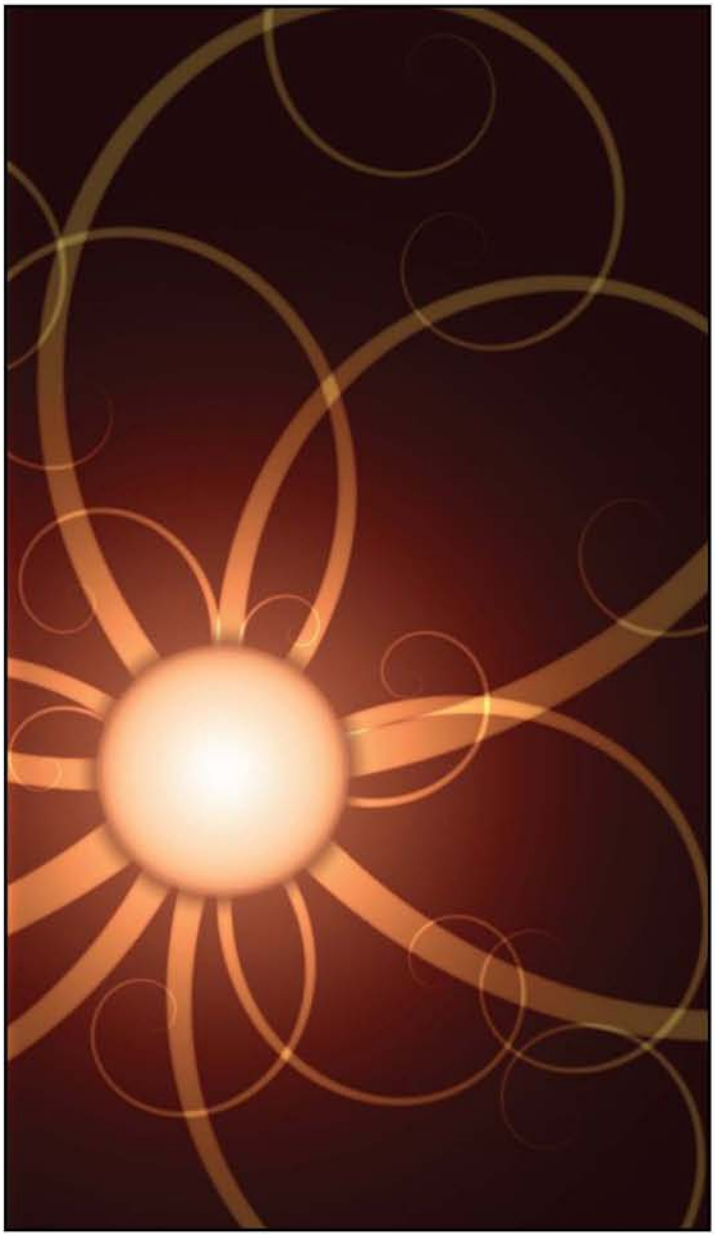

ग़ज़ल

"आशुफता सर"[1] है ज़हन[2] का कहना के आप हैं
पै ना दिल ने एतराफ[3] है क्या के आप हैं

आहट हुई तो मैं ने सांसें भी रोक लीं
दिल में ज़रा ख्याल जो आया के आप हैं

मुझे दर्द दे गया जो मेरा चैन लूट कर
किसी ग़ैर को में कैसे कहता के आप हैं

दामन रहे-ह्यात[4] में मुमकिन था थामना
पर हौसला हुआ ना जो देखा के आप हैं

दिल में कस्क का और ही रंग हो गया के जब
माज़ी[5] के एक वर्क[6] पै देखा के आप है

फिर तो फरेब साज़ी का शिकवा ही ना रहा
ग़ैरों ने जब ये मुझ को बताया के आप है

जो कह गया तबीब[7] से मेरा ला-इलाज[8] है मर्ज़
ये सिर्फ एक वहम है मेरा के आप है

ना आशना इक हाथ बढा कर बचा गया
औरों को पर यकीन दिलाया के आप है

"शैदा" पै राज़ खुलता ये खुलता तो किस तरह
मफतून-े-शैदा[9] उस के माना के आप हैं

महेश नन्दा "शैदा"
वाटरलू, कैनेडा

---

(1) सौदाई (2) अक्ल, दिमाग़ (3) मान लेना
(4) जीवन की राह (5) गुज़रा हुआ समय
(6) सफा या पन्ना (7) हकीम (8) बिना इलाज
(9) आशिक इशक में डूबा हुआ

तेरे ही कुचे में औरों से पता पूछा तेरा
यूं भी सौदाइ तेरे तुझे ढूंडते फिरे

غزل

آشُفتہ سر "ہے ذہن کا" کہنا کہ آپ ہیں
یہ نہ دل نے اعتراف ہے کیا کہ آپ ہیں

آہٹ ہُوئی تو میں نے سانسیں بھی روک لیں
دِل میں ذرا خیال جو آیا کہ آپ ہیں

مُجھے درد دے گیا جو میرا چین لوُٹ کر
کِسی غیر کو یہ کیسے میں کہتا کہ آپ ہیں

دامن رہ حیات میں ممکِن تھا تھامنا
پر حوصلہ ہُوَا نہ جو دیکھا کہ آپ ہیں

دلمیں کسک کا اور ہی رنگ ہو گیا کہ جب
مَاضی کے ایک ورق پہ دیکھا کہ آپ ہیں

پھِر تو فریب سازی کا شِکوہ ہی نہ رہا
غیروں نے جب یہ مُجھکو بتایا کہ آپ ہیں

جو کہہ گیا طبیب سے میرا لاعلاج ہے مرض
یہ صِرف ایک وہم ہے میرا کہ آپ ہیں

نا آشنا اک ہاتھ بڑھا کر بچا گیا
اوروں کو پر یقین دلایا کہ آپ ہیں

شیدا یہ راز کھُلتا یہ کھُلتا تو کِس طرح
مفتوُن و شیدا اُس کے مانا کہ آپ ہیں

مہیش نندہ شیدا
واٹرلُو۔ کینیڈا

تیرے ہی کُوچے میں اوروں سے پتہ پُوچھا تیرا
یُوں بھی سودائی تیرے تُجھے ڈھُونڈتے پھِرے

नव वर्ष का सन्देश

अमित कुमार सिंह (भारत)

नये वर्ष का सूरज चमका
लेकर आया नया सबेरा !
पेड़ पौधो ने भी अपनी
बाहँ पसारी
करने के लिये
नव वर्ष का अभिनंदन !

बह रहा है पवन भी
देखो लेकर एक नई उमंग !

शांत समन्दर भी मचल उठा है
बन कर एक तरंग !

पशु पक्षियों ने भी घोला
वातवरण मे मधुर गीत-संगीत !

फूलों ने खूशबू बिखेर
फैलाया चंहु ओर आनदं ही आनदं !

फैला अन्तर्मन में
एक दिव्य ज्योति,
घुला जीवन में एक
मधुर रस,
नये साल के स्वागत मे
तुम भी हे मानव!
लग जाओ अब बस !

मिटा हिंसा को
फैला कर मानवता का सन्देश,
प्रकट करो तुम भी
अपनी ये 'अमित' अभिव्यक्ति,
अपना कर नव बर्ष का
ये पावन उद्देश्य !!

परिवर्तन

किरन सिंह (भारत)

नया दौर आया,
लेकर नया जमाना
परिवर्तन का मंत्र जपता
हर कोई बन गया है
इसका दीवाना।

परिवर्तन की इस
आंधी में,
बदल गयी है
कविताओं की
भी बानी,
दीर्घ से लघु
में सिमटने की
महत्ता अब
इसने है पहचानी।

समय का है
लोगों के पास अभाव
तीन-चार पंक्तियों में
दे सको यदि पूरी कविता
का भाव,
तो मेरे पास आओ
अन्यथा इसे लेकर
यहाँ से चले जाओ।

और जाते-जाते
मेरा ये सबक अपनाओ-
लिखना नहीं रहा
अब तुम्हारे बस का रोग
पेट पालने के लिए
करो कोई और उद्योग।

सुन के ये
पावन वचन
सिहर गया
मेरा तन बदन
और अपनी जीविका
चलाने के लिए
करने लगी मैं
कविताओं की जड़ों
पर वार।
ओढ़? लबादा परिवर्तनशीलता का
करने लगी मैं भी,
कविताओं की बोनसाई तैयार।

उड़ान

तेजेन्द्र शर्मा (यू. के.)

बंबई मुझसे छूट रहा है। गाड़ी मुझे यहाँ से दूर दिल्ली की ओर ले जा रही है। क्या मैं दिल्ली वापस जाने के लिए यहाँ आयी थी? ऐसा तो नहीं सोचा था मैंने। और भी किसने सोचा होगा? पिताजी कह रहे थे, 'वीनू बेटा, अब तू एयर-होस्टेस हो गयी है। मेरा तो सिर का बोझ हल्का हो गया। अपने भाई-बहनों को अब तुझे ही सँभालना है।' कितना स्नेह है उनको मुझसे! हर समय मेरी ही चिंता रहती थी उनको। मैं कैसे अकेली बंबई जैसे शहर में रह पाउंगी? मेरे खाने-पीने और रहने की चिंता...

बांद्रा के होस्टल से अब वापस कटरा नील, चाँदनी चौक! यह सब मुझे बहुत अजीब-सा क्यों लग रहा है? मैं अपने ही घर तो वापस जा रही हूँ।

घर! क्या वह घर है? पिताजी के शरीर की तरह ओवर-टाइम कर-करके जर्जर हो रहा है। दादाजी ने कभी पंद्रह रुपये महीने किराये पर लिया था। पिताजी आज भी पंद्रह रुपये ही देते हैं। छत पर मुड़े हुए शहतीर, अंगीठी और स्टोव के धुएँ से लट कते हुए काले जाले। पिछले सात वर्षों से तो घर की पुताई भी नहीं हो पायी। सूर्य की रोशनी तो कभी भी उस घर की अभेद्यता को बींध नहीं पायी। उस घर में वापस जाऊँगी मैं? नाली में बहता वह गंदा पानी और नथुनों को बींधती गंध! क्यों न जंजीर खींचकर नीचे उतर जाऊँ? ...पर वापस तो जाना ही है, बंबई में अब मेरा है ही कौन? नीलम भी धीरे-धीरे मुझे भुला देगी। कौन किसको याद रखता है!

"वीनू! जब मैं बंबई आयी थी, तो तुम्हारी तरह भाग्यशाली नहीं थी। यहाँ इस कमरे में अकेली दीवारों को घूरा करती थी। मुझे तो इस नौकरी और बंबई, दोनों से ही घृणा-सी हो गयी थी। मगर अब धीरे-धीरे
अभ्यस्त हो गयी हूँ।"

"नीलम, मैं सोचती हूँ, सचमुच कितनी भाग्यशाली हूँ मैं! बी.ए. पास करते ही एयरलाइन की नौकरी और अब तुम्हारे जैसी सहेली, मुझसी भाग्यवान तो शायद ही कोई और हो!"

भाग्यवान! क्या अर्थ हैं इस शब्द के? मैं अपने माँ-बाप, भाई-बहनों को छोड़ बंबई रहने में भाग्यवान थी, और आज जबकि अपने घर वापस जा रही हूँ, तो स्वयं को अभागी मान रही हूँ।

क्या मुझे फिर उसी सड़क पर बार-बार चलना होगा, जिस पर मेरे जीवन के पिछले बीस वर्ष बीते थे? फतेहपुरी की मस्जिद से लाल किले तक। रास्ते में टाउन हॉल, फव्वारा, कोतवाली, सीसगंज गुरुद्वारा, चर्च, शिवजी का मंदिर, मोती सिनेमा तथा चिड़ियों का अस्पताल...किस शान से दुनिया को जीना सिखाते हैं! कहीं पूड़ियाँ बिकती हैं, तो कहीं कोई हकीम साहब मूँछों पर ताव दिये मर्दानगी बेचते हैं। परंतु मेरे मन की कमजोरी मुझे कहाँ ले जायेगी? इसका क्या इलाज है?

मेरे सामने बैठा लड़का किस बेहयाई से मुझे घूर रहा है! घूरता तो मुझे राजू भी था...मगर कितने प्यार से! उसकी तो अदा ही कुछ और थी। नीले रंग के कपड़ों में उसका व्यक्तित्व कैसा निखर उठता था! उसके गोरे रंग पर मूँछें कितनी फबती थीं! पहली ही नजर में वह मुझे कुछ खास ही अच्छा लगने लगा था। मुझे अपने घर भी तो ले गया था। अपनी माँ से भी मिलवाया था।

"वीनू! आज तुम्हें माँ से मिलवाने ले जा रहा हूँ। तुम साड़ी पहनकर आना। वही पीली साड़ी। उसमें तुम बहुत प्यारी लगती हो।"

"राजू, मुझे पसंद कर लेंगी माँजी?"

"जो तुम्हें पसंद न करे, उसकी अपनी ही नजर में कुछ दोष होगा!"

दोष! किसको दोषी ठहराऊँ मैं? इन छः महीनों में कितना लंबा सफर तय कर आयी हूँ मैं। हँसती-खिलखिलाती वीनू से एक गंभीर चिंतनशील नवयुवती हो गयी हूँ मैं।

गाड़ी सूरत स्टेशन पर रुकी है। वह लड़का अब भी ढिठाई से मेरी ओर ताक रहा है। चायवाला 'चाय गरम' की आवाजें लगा रहा है। क्या यह भी एयर-होस्टेस का ही दूसरा रुप है? क्या मैं भी हवाई जहाज में चाय-कॉफी के लिए पुछती ऐसी ही लगती होऊँगी? ...नहीं! ...मैं ऐसी नहीं हो सकती...मैं मात्र चाय या शराब बेचने वाली नहीं हो सकती। मैं तो एयरहोस्टेस थी। मेरा काम था यात्रियों के आराम की देखभाल। मैं तो घर की मालकिन की तरह उनकी तथा उनके बच्चों की आवभगत करती थी। उनको खाना खिलाना तो केवल 'एक काम' था। मैं तो और भी बहुत कुछ करती थी। 'कंपार्टमेंट' की हर चीज पीली-सी दीखने लगी है। आंखों के सामने अंधेरा-सा छा रहा है। क्या अंधेरा पीला भी होता है?

"तुम्हारी यूनिफॉर्म की साड़ियों के दो रंग हैं...पीला और हरा। दोनों में ही काले और लाल रंग के डिज़ाइन हैं। वीनू! तुम्हें कौन-सा रंग पसंद है?'

"जी, पीला, मैडम!'

मिस्टर शाह मेरी क्लास को पढ़ाने आते थे। उनकी मूँछें कुछ विशिष्ट ही थीं। वह चेहरे से कोई मेजर या कर्नल लगते थे। थे बहुत ही सहृदय व्यक्ति। मुझे चीज़ और वाइन के नाम कभी याद नहीं हो पाते थे। सभी फ्रांसीसी नाम थे। वह मुझे कभी डाँट ते नहीं थे। हमेशा वीनू बेटा ही बुलाते थे। एयरलाइन के और लोग तो 'हनी', 'डार्लिंग' और 'लव' ही बुलाते हैं सब लड़कियों को। काश, वे इन शब्दों का अर्थ समझ पाते! अर्थशून्य लोग!

मेरी पहली ही फ्लाइट दुबई और मस्कट के लिए थी। एयरलाइन में नया नियम बनाया गया था। ट्रेनीज केवल गल्फ फ्लाइट्स पर ही जायेंगे। उन्हें लंदन या लंबी फ्लाइट्स पर नहीं भेजा जायेगा।

"अरे वीनू, जब मैं ट्रेनी थी, तो पहली ही फ्लाइट पर मैं हाँगकाँग गयी थी। तुम लोगों की किस्मत तो दुबई तक ही सिमट

गयी है।"

"नीलू बेगम! यदि किस्मत की ख़राबी यहाँ पर ही रुक जाये, तो कोई बात नहीं, कहीं और बढ़ती न जाये!"

मुझे हॉस्टल से लेने के लिए एयरलाइन की गाड़ी आयी थी। उसमें एक होस्टेस और दो परसर भी बैठे थे। परसर को हम मर्दाना होस्टेस भी कहते हैं। मैंने सबको अपना परिचय दिया। वह हवाई अड्डे पहुँचे, तो सभी लोग एक ऑफिस में इकट्ठे हुए। वहाँ भी मुझे सबको अपना परिचय देना था। यूनिफार्म में सभी चहरे एक-से लग रहे थे। मैं हड़बड़ाहट में कई लोगों को अपना परिचय दो या तीन बार दे गयी। मेरी चेक-होस्टेस ने मेरा साहस बढ़ाया और फ्लाइट के विषय में कुछ हिदायतें दीं। विमान को पहली बार अंदर से देखकर मैं अपने-आपको संयत नहीं रख पा रही थी। ए क ग़रीब क्लर्क की बेटी और 382 सीटों वाला विशालकाय जंबो जेट। फ़्लाइट में घोषणाएँ मुझे ही करनी थीं। मैंने बोलना शुरू किया। ऑसू जैसे बाहर आना ही चाहते थे। घबड़ाहट, खुशी और मौके की नजाकत सब अपना रंग दिखा रहे थे। विमान के उड़ते ही शरीर को एक झटका-सा लगा। खिड़की से झाँककर देखा तो बंबई रात की बाँहों में बिजली की तरह चमक रही थी। जुगनुओं की कतारों जैसी बत्तियाँ...

गाड़ी चलती जा रही है अपने गंतव्य की ओर। पेड़ पीछे छूटते जा रहे हैं। नंग-धड़ंग बच्चे फटी-फटी आंखों से गाड़ी को देख रहे हैं। जैसे कोई इस्पात का दैत्य धड़धड़ाता हुआ भागा जा रहा हो। कभी विमान देखकर मेरी भी ऐसी ही हालत होती होगी। आंखें फट जाती होंगी। मेरा भी दिल आइकैरस की भाँति उड़ान भरने को होता होगा। उसी की तरह मेरे पंख भी गल गये। मैं धरती पर आ गिरी। आकाश को अपनी बाँहों में न समेट सकी।

सामने बैठे लड़के ने भाड़-सा मुँह खोलकर जम्हाई ली, तो कीड़े लगी दाढ़ें दिखायी देने लगीं।

"तुम अपने दाँत डॉक्टर को दिखाओ, वीनू! अभी से तुम्हारी एक दाढ़ मे कीड़ा लग गया है।'

"तुम्हें सदा मेरी कितनी चिंता रहती है, राजू! चलो, डॉ. अरोड़ा से मिल लेते हैं।"

चाचा जी की दाढ़ी में भी कीड़ा लग गया था। कितना दर्द हो रहा था उनको! वह अमेरिका से दिल्ली आये थे। पिताजी के साथ मैं भी उन्हें हवाई-अड्डे पर लेने गयी थी। चाची भी उनके साथ आयी थी। चाचा-चाची हमारे घर न चलकर सीधे बुआ के घर लोधी कॉलोनी चले गये थे। गरीब भाई के घर से अमीर बहन का घर कहीं अधिक सुहाता होगा उनको। पिताजी भी तो सत्यकाम बने रहते हैं। क्यों नहीं लेते औरों की तरह रिश्वत हमारा भी एक सुंदर-सा घर होता। गरीबी सुरसा की तरह हमारे घर को न निगलती। चाची हमारे घर भी तो आयी थी।

"वीनू! बहुत बड़ी हो गयी हो! और देखो, कितनी सुंदर भी! तुम्हें तो फिल्मों का शौक तो कभी भी नहीं था, पर एयर-होस्टेस के नाम से ही शरीर में सनसनी दौड़ जाती थी। अनु की बहन मधु भी तो एयर-होस्टेस है। अन्य किसी भी आकर्षण से अधिक तो मुझे अनु से ही यह प्रेरणा मिलती थी कि मैं भी एयर-होस्टेस बनूँ। कैसे चटखारे ले-लेकर मुझे अपनी विदेश यात्रा के किस्से सुनाती थी! मधु दीदी का जीवन तो फाइव स्टार होटलों के ग्लैमर में ही व्यतीत होता रहा है। उनके घर में तो हर काम के लिए स्प्रे ही इस्तेमाल होता है, यहाँ तक कि मच्छर मारने के लिए भी मधु दीदी लंदन से स्प्रे ही लाती है। उस दिन तो हद ही हो गयी, जब मैंने मधु दीदी को हाथ से छूकर देखा कि क्या होस्टेस भी हाड़-मांस की ही बनी होती है?

"तुम इतनी घबड़ा क्यों रही हो, वीनू? अनु मुझसे अक्सर तुम्हारे बारे में बात करती है। जैसे मैं अनु की दीदी, वैसे ही तुम्हारी भी। हाँ, तुम्हें होस्टेस बनने का शौक है न? "शौक, दीदी! यह तो मेरे जीवन का सपना है। पंछियों के समान पंख लग जायेंगे मेरे। आज लंदन में तो कल सिडनी। सारी दुनिया देखूँगी मैं। क्या ऐसा हो सकता है, मधु दीदी?"

"अरे क्यों नहीं हो सकता! पहले पढ़ाई तो पूरी कर लो अपनी। अब तो बी.ए. पूरी होने में बस डेढ़ ही साल बाकी है।"

डेढ़ साल। कितना थोड़ा समय लगता है सुनने में, और बीतने में जैसे सदियाँ! आकाश में उड़ते हर विमान को निहारा करती थी उन दिनों। अपनी ही धुन में मस्त रहने लगी थी मैं। किसी भी और कार्य में तो मेरी रुचि नहीं होती थी।

गाड़ी एकाएक रुक गयी है। बाहर तो कोई स्टेशन भी नहीं है। एकदम उजाड़-सा है। दूर तक वृक्ष फैले हैं। गाड़ी को रुका देखकर वे भी रुक गये हैं। जैसे गाड़ी का हाल पूछ रहे हों। दौड़ समाप्त हो गयी है परंतु मेरी मंजिल तो अभी दूर है। गाड़ी में किसी बच्चे के रोने की आवाज आने लगी है। उसकी माँ उसे डाँट रही है। माँ तो डाँटती ही है।

"वीनू! तू एयर-होस्टेस नहीं बनेगी। हमारे खानदान में आज तक कभी कोई लड़की इस मटरगश्ती वाली नौकरी में नहीं गयी। किसके भरोसे तुझे देश-विदेश जाने दूँ? तू बी.ए. पूरी कर ले, तो तेरे हाथ पीले कर दूँ। मुझे नहीं चाहिए तेरी कमाई। रूखी-सूखी खा लेंगे, पर बेटी को ऐसी बेशरम नौकरी नहीं करने देंगे। वह पुरी साहब की छोकरी मधु को देखो। क्या कपड़े पहनती है! राम-राम! मालूम ही नहीं होता, लड़की है या लड़का! सुन लिया न तूने?'

मैं तो अपने मन की बात बहुत पहले से सुन चुकी थी। एयर-होस्टेस बनना तो मेरे जीवन का ध्येय बन गया था। पिताजी ने सदा की भाँति फिर मेरा साथ दिया था। और मैंने एयर-होस्टेस की नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र भेज दिया। करीब दो महीने पश्चात् मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। मैं दिन-रात तैयारी करती रही। साक्षात्कार के लिए जाते समय मेरी टाँगे काँप रही थी। गला खुश्क-सा हो रहा था। फिर भी स्वयं को संयत करते हुए मैंने हर प्रश्न का उत्तर सहजता से दे दिया था।

फिर शुरू हुआ इंतजार, और पाँच महीने बीत गये। फिर एक दिन एयरलाइन की चिट्ठी आ ही पहुँची कि मेरी नियुक्ति हो गयी है। दिनकर और मीनू बहुत प्रसन्न थे। उनकी दीदी एयर-होस्टेस बनने वाली थी। उन्होंने तो पहले से ही अपनी फरमाइशों की सूची मुझे बना दी थी। मेरे पाँव धरती पर नहीं पड़ रहे थे। मेरा सपना मेरे कितने समीप था! सपना सच हो रहा था।

"पिताजी, मेरा नियुक्ति-पत्र आ गया है। मुझे दस दिन में बंबई पहुँचना है। अब तो तैयारी करनी होगी।"

"हाँ, बेटा। मैं भी यही सोच रहा हूँ। तुम्हारे लिए नये

कपड़े लेने होंगे। और हमारी बेटी चेयर-कार से जायेगी। तुम घबराओ नहीं, बेटा, मैं सब प्रबंध कर लूँगा।"

पिताजी ने प्रबंध कर ही लिया। बतलाया तक नहीं, कहाँ से कर्ज लिया। मैं तो वह कर्ज भी नहीं उतार पायी।

बंबई में मामी के व्यवहार ने एक सप्ताह में ही बता दिया कि मुझे रहने के लिए हॉस्टल ढूँढ़ना पड़ेगा। नीलम ने मेरी कितनी सहायता की उन दिनों! रिश्तेदारों के सारे उत्तरदायित्व उसने अपने ऊपर ले लिये थे। मुझे पैसे ही कितने मिलते थे ट्रेनिंग में! उस पर बंबई जैसे महानगर में होस्टल में रहना। हर परेशानी का एक ही हल था...नीलम।

"वीनू! तुम्हारे लिए लंदन से यह लिपस्टिक और नेल-पॉलिश लायी हूँ। हाँ, यह ड्रेस भी तुम्हारी ही है।'

"नीलू, इतनी अच्छी न बनो कि मैं अपने-आपको छोटी महसूस करने लगूँ।"

"बकवास नहीं करते। मैं कोई एहसान नहीं करती तुम पर!"

"नीलू! क्या मैं भी कभी लंदन जाऊँगी? मेरे जीवन का सबसे बड़ा सपना भी सच होगा?"

"अब तो ट्रेनिंग पूरी होने को है तुम्हारी। बस, अगले ही महीने तुम्हारी फ्लाइंग शुरू हो जायेगी। लंदन जाने लगो, तो हमें भूल नहीं जाना।"

"मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं नीलू? मेरी तो यादों का स्रोत तुम ही हो। दिल्ली में भी सदा तुम्हारे ही बारे में सोचूँगी।"

गाड़ी फिर रुक गयी है। बाहर स्टेशन नहीं दीख रहा। अंधेरा कुछ अधिक ही है-बाहर भी और भीतर भी। कुछ भी सुझायी नहीं दे रहा। राजू, नीलम, पिताजी, माँ, बांद्रा, चाँदनी चौक, दिल्ली, बंबई -सब एक फिल्म से बन गये हैं। गाड़ी के अंधेरे में यह फिल्म सुचारु रूप से जारी है। अंधेरे में भी वह लड़का मुझे बिल्लीनुमा आंखों से घूर रह है। बिलकुल झपटने को तैयार है अपने शिकार पर।

एयरलाइन में ऐसी बहुत-सी आंखों से मैं परिचित हूँ... जो कि मौका मिलते ही अपने शिकार को शिकंजे में जकड़ लेती हैं। मैं भी उनके लिए एक नया बकरा ही थी। कोई मेरी ऑखों की प्रशंसा करता, तो कोई किसी-न-किसी बहाने छूने की चेष्टा करता। मैं सोचती, कितना कृत्रिम है यहाँ का वातावरण! किसी में कहीं भी सहजता नहीं। बनावट-ही-बनावट है।

इतनी ठसाठस भरी हुई गाड़ी में अकेलापन मुझे बुरी तरह से कचोट रहा है। कभी भीड़ से भरी बंबई नगरी में भी अकेलापन मुझे यूँ ही जकड़ लेता था।

मुझे ट्रेनी फ्लाइट्स करते तीन महीने हो चुके थे। मेरी चेक होस्टेस ने मुझे सोलो दे दी थी यानी कि अब मैं स्वतंत्र रूप से एयर-होस्टेस हो गयी थी। मेरा दिल खुशी से झूम उठा था। पहली ही सोलो पर मुझे रोम, लंदन और फ्रैंकफर्ट जाना था। एक ही फ्लाइट में पूरा यूरोप। नीलू मुस्करा रही थी मेरी प्रसन्नता पर। कभी वह भी ऐसे ही हालात से गुजर चुकी थी।

मैं बहुत नर्वस थी। अपना अटैचीकेस मैं नीलू की सहायता से तैयार कर रही थी। नीलू भी तो हद कर देती है!

"वीनू! तुम तो ऐसे घबरा रही हो, जैसे डोली में ही बैठने वाली हो।'

"नहीं, यार! पहली बार विदेश में अकेले रहूंगी न, इसी को लेकर परेशान हूं। हमारे साथ के लड़के कैसा व्यवहार करेंगे, यही सोच रही हूँ।

"देखो! परेशान होने की कोई बात नहीं। किसी को जरूरत से ज्यादा लिफ्ट देने की जरूरत नहीं। तुम्हें ठंडे और शालीन बने रहना है। कोई भी तुम्हें कुछ नहीं कह सकेगा। अपने-आपको समेटे रखो और किसी से भी अधिक खुलो नहीं।'

हम दोनों बातें करती-करती रात को बहुत देर से सोयी थीं। अगली सुबह ड्राइवर एयरलाइन की गाड़ी लेकर हमारे होस्टल आ गया। उसने मेरे बारे में पूछा, और मुझे एक चिट्ठी देकर बोला, 'मेम साहब, आपके लिए मैसेज है।' मेरे माथे पर पसीना आ गया। यह क्या नयी चीज़ है, मैं सोच रही थी। नीलू ने मेरी हिम्मत बढ़ायी और पत्र खोला...

गाड़ी किसी नदी के पुल से गुजर रही है। धड़-धड़ का शोर बढ़ता ही जा रहा है। वह लड़का मुझसे बात करने की दो बार असफल प्रयत्न कर चुका है। शोर और बढ़ता जा रहा है।

कुछ इसी तरह का शोर मुझे वह पत्र पढ़कर महसूस हुआ था। कुछ इसी तरह का पीला अंधेरा उस समय भी था। कितने व्यावसायिक ठंडेपन से लिखा गया था:

"एयरलाइन में होस्टेसों का चयन आवश्यकता से अधिक हो गया है। इसीलिए आपको एयरलाइन की सेवा से मुक्त किया जाता है। तीन महीने के वेतन का चेक संलग्न है।'

मेरे सभी सपने आकाश से गिरकर पाताल में धँस गये थे। क्या यह चेक मेरे परिवार के सपनों को पूरा कर सकता है?

हर व्यक्ति हमें अपने ढंग से दिलासा देता। मुझ जैसी और भी कई थीं। परायी सांत्वना हमारे हृदय को छील देती। केवल नीलू के कंधों पर सिर रखकर रो लेती। उसी समय हम यूनियन के कार्यालय पहुँचे। वहाँ आपात्कालीन स्थिति दिखायी दे रही थी। यूनियन ने कितना शोर किया था, पर ऊपर बैठे लोग बहुत ऊपर बैठे थे। उन्हें वह शोर सुनायी ही नहीं दिया।

राजू तो मेरी नौकरी छूटते ही पराया-सा हो गया। मुझे दिलासा देने तक नहीं आया। वाह रे प्यार! पिताजी ने बहुत धैर्य-भरा पत्र लिखा था, 'तू चली आ, वीनू बेटे! मैं सब सँभाल लूँगा। अपने दिल को कुछ मत लगाना। बस, चली ही आ।'

और मैं जा रही हूँ वापस। अपने परिवार के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के सपने की लाश को ढोये। सामने बैठा लड़का उसी चिता में से कुछ बची हुई चिन्गारियाँ ढूँढ़ रहा है। उसे क्या मालूम, इस गाड़ी में एक लुटा हुआ काफिला वापस जा रहा है। उसके लूटने के लिए कुछ भी नहीं बचा है।

****

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. महीपसिंह से 'हिन्दी चेतना' के संपादक श्याम त्रिपाठी की बातचीत

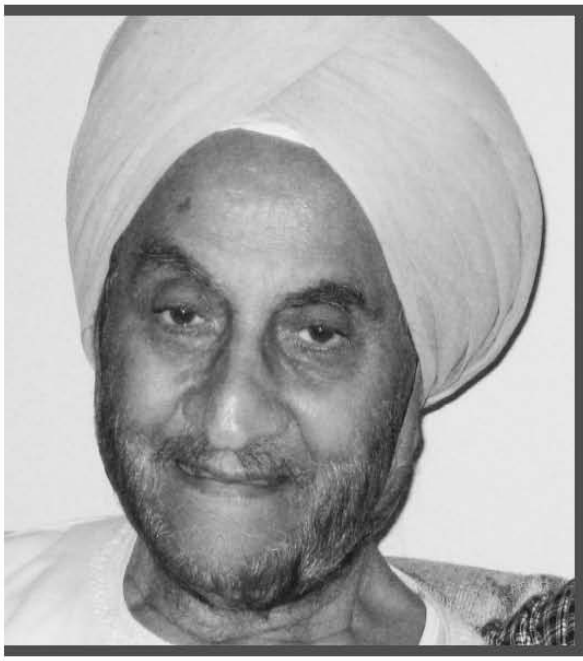

डॉ. महीप सिंह हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार एवं ' सचेतना' नामक पत्रिका के प्रमुख संपादक, हिन्दी जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं। आपका जन्म उत्तरप्रदेश के उन्नाव नगर में हुआ था और शिक्षा दीक्षा कानपुर डी.ए. वी. कालेज में हुई। पंजाबी परिवार में जन्म लेते हुये भी आपने अपनी कलम हिन्दी की सेवा में समर्पित की और आज वे हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों में अपना स्थान रखते हैं। आपके उपन्यास और कहानियाँ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में लगी हुई हैं। डॉ. महीप सिंह जी गर्मियों में अपने बेटे के पास हर वर्ष कुछ समय के लिए आते हैं और कुछ साहित्यकारों से मिलकर स्वदेश चले जाते हैं।

डॉ. महीप सिंह का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों के गलियारों में बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। आप पंजाबी भाषी होते हुये भी आपने हिन्दी को अपनी लेखनी का माध्यम बना कर हिन्दी जगत में एक अद्वितीय स्थान बनाया है। देश विदेश के कहानीकार आपके नाम से भली भाँति परिचित हैं। आपने सचेतन आंदोलन को अग्रसर किया और आपने रचनात्मक स्तर पर अश्लील कहानियों का विरोध किया। 'कील' आपकी इस विचारधारा की प्रतिनिधि कहानी है। आपकी कहानियों में घटनाओं, पात्रों तथा जीवन के प्रसंगों को सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

आपके पात्र जीवन्त और सच्चे होते हैं। वे काल्पनिक कपोत नहीं होते हैं। आप सातवें दशक के उन प्रगतिशील विचार धारा के लेखकों में से हैं जिसमें अधिकाँश लोगों का उद्देश्य कहानी में आम आदमी का जीवन होना चाहिये। अपने परिवेश से उसके अन्तर्विरोध और संघर्ष का सही चित्रण होना चाहिए। समाजवादी दृष्टि से आम आदमी के संघर्ष, अभाव , निर्धनता आदि का चित्रण होना चाहिए। आर्थिक अन्तर्विरोधों को कहानी का आधार बनाया गया। इन कहानियों में मार्कसवादी दृष्टिकोण की अनुभूति है। इनका परिवेश आम आदमी के संघर्ष का परिवेश होता है। इसमें मोहभंग का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ, अमानुषीकरण की समस्या, व्यक्तित्व के विघटन की समस्या तथा संवेदन शून्यता की समस्या को उठाया गया है। 'उजाले के उल्लू' में शोषण उत्पीड़न , तिरस्कार का उल्लेख मिलता है। इसमें आम आदमी को समनान्तर रूप से रखा जाता है। स्वर्गीय कमलेश्वर के बाद आपने इस आंदोलन को सजीव रखने का काम जारी रखा है।

हिन्दी चेतना के संपादक श्याम त्रिपाठी से वार्तलाप के कुछ अंश :

श्याम त्रिपाठी : सर्व प्रथम हिन्दी चेतना की ओर से कनाडा में आपका स्वागत एवं अभिनंदन।
डॉ. साहब आपको लिखने के प्रेरणा कब से और कहाँ से मिली ?

महीप सिंह : मैं 1954 -55 दसवी कक्षा में

डॉ. महीप सिंह हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार एवं ' सचेतना' नामक पत्रिका के प्रमुख संपादक, हिन्दी जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं। आपका जन्म उत्तरप्रदेश के उन्नाव नगर में हुआ था और शिक्षा दीक्षा कानपुर डी.ए. वी. कालेज में हुई। पंजाबी परिवार में जन्म लेते हुये भी आपने अपनी कलम हिन्दी की सेवा में समर्पित की और आज वे हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों में अपना स्थान रखते हैं। आपके उपन्यास और कहानियाँ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में लगी हुई हैं। डॉ. महीप सिंह जी गर्मियों में अपने बेटे के पास हर वर्ष कुछ समय के लिए आते हैं । हिन्दी चेतना के संपादक श्याम त्रिपाठी से वार्तलाप के कुछ अंश :

श्याम त्रिपाठी : सर्व प्रथम हिन्दी चेतना की ओर से कनाडा में आपका स्वागत एवं अभिनंदन।

डॉ. साहब आपको लिखने के प्रेरणा कब से और कहाँ से मिली ?

महीप सिंह : मैं 1954 -55 दसवी कक्षा में पढ़ रहा था और मुझे कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ लिखने व पढ़ने का शौक हुआ और मैंने लिखना शुरू किया । मुझे अच्छी तरह याद है 1956 में जब मुंशी प्रेमचंद जी कहानी प्रतियोगता हिन्दी साप्ताहिक में मैंने 'उलझन' लिखी थी जिस पर मुझे प्रथम पुरुस्कार मिला था । बस इससे मुझे इतनी प्रेरणा मिली कि मेरी कलम दौड़ पड़ी और तब से अब तक रुकी ही नहीं।

आप पंजाबी परिवार और पंजाबी भाषी होकर हिन्दी भाषा में कैसे लिखने लगे?

मेरा प्रारंभिक जीवन उत्तर प्रदेश में बीता । उन्नाव और कानपुर में जो पैदा हुआ हो और वहां के स्कूलों में बचपन बिताया हो । पढ़ा लिखा हो। फिर हिन्दी में एम.ए., पीएच. डी. की हो । बम्बई के खालसा कालेज और दिल्ली विश्वविद्यालयों में हिन्दी का प्रशिक्षण किया हो । उसके बाद पंजाबी में कैसे लिख पाता? इसमें कोई अचरज की बात नहीं । यशपाल जी और अज्ञेय जी तो पंजाबी भाषी थे लेकिन उन्होंने हिन्दी को अपना माध्यम बनाया और उसी से यश कमाया। मुझे गर्व है कि मैंने राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही अपने साहित्य को माध्यम चुना।

डॉ. साहब आपको साहित्य की किन – किन विधाओं से लगाव है? आपने कहानी को ही क्यों चुना? अब तक की आपकी साहित्यिक यात्रा कैसी रही?

मुझे गद्य से बहुत प्रेम रहा । मैंने अधिकतर गद्य में ही लिखा । कहानी , उपन्यास , लेख , पत्र , यात्रा और अब अपनी आत्मकथा भी । कहानी जीवन की एक ऐसी अनुभूति है जिसमें लेखक अपनी लेखिनी पर संयम रखकर अपनी बात स्पष्ट रूप से कह पाता है ; मन की सच्चाई को उभार पाता है और पाठकों को अपने विश्वास में ले पाता है। मेरी कहानियों ने लोगों को प्रेरित किया और मैं इस विधा में डूब गया और इसके बाद अब तक निकल ही नहीं पाया। मेरा मन यही कहता कि मैं हर पल कहानी लिखता रहूँ। जहां तक मेरी साहित्यिक यात्रा का प्रश्न है मैं गर्व से कह सकता हूं कि मेरी अब तक की साहित्यिक यात्रा बहुत ही सुखद अर्थपूर्ण ,यशपूर्ण और स्पन्दनमयी रही । आज भारत के अनेकों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में मेरी कहानियाँ और उपन्यास लगे हुये हैं। इससे बढ़कर और एक साहित्यकार को और क्या चाहिये।

अंत में आपके प्रवासी साहित्य के विषय में क्या विचार हैं?

प्रवासी साहित्यकार ग्रेट ब्रिटेन में बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं । मुझे एक दो बार वहां जाने का अवसर मिला और जो कुछ भी साहित्य मैंने देखा मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। डॉ.कृष्णकुमार जी, तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, गौतम सचदेव बहुत अच्छी कहानियाँ लिख रहे हैं। शायद वहां का माहौल साहित्यकारों के लिए अधिक उर्वरा रहा होगा। लेकिन जहाँ तक कनाडा का सवाल है मुझे यहां के साहित्यकारों से कोई विशेष जानकारी नहीं रही। आपकी 'हिन्दी चेतना' के विषय में मैंने डॉ. गोयनका जी से सुना था और आज आप से भेंट भी हो गई । हम एक दूसरे के निकट आने का प्रयास करेंगे।

अंत में डा. महीप सिंह जी ने अपने 3 नए कहानी संग्रह व 'संचेतना' का अँक भेंट किए। मैंने ' हिन्दी चेतना' के कुछ अँक उन्हें भेंट किए।

दिल का आंगन

– जाफर अब्बास (अमेरिका)

मेरे दिल के आंगन में भी
जूही की एक बेल लगी थी
जो जाने क्यों
रात गए, अक्सर यूँ ही बस
हँस देती थी।

लेकिन यह तो
बरसों पहले की बातें हैं
अब तो दिल के आंगन में भी
गेहूँ की खेती होती है
(गांव – गाँव, शहरों, शहरों कोहरा पड़ा है)

देखें शायद, अब की जाड़ों के ढलने पर
सरसों फूले
देखें शायद अब की होली
सादे ठंडे पानी से न खेली जाये।

डॉ महीपसिंह की पुस्तकें

खण्ड : एक (कहानियाँ)

'मैडम' (१९५६) से ' सीधी रेखाओं का वृत्त' (१९७०) तक प्रकाशित ६९ कहानियाँ

खण्ड दो : (कहानियाँ)

'नींव' (१९७०) से लेकर ' निगति' (२००६) तक प्रकाशित

५२ कहानियों के साथ २८ बालकहानियाँ

खण्ड : तीन (उपन्यास) यह भी नहीं , अभी शेष है

खण्ड :चार

साक्षात्कार , व्यंग्य , रेडियो रूपक , नाटक

खण्ड:पाँच (शोध प्रबन्ध) गुरुगोबिंद सिंह और उनकी हिन्दी कविता

खण्ड: छह (शोध एवं जीवनियाँ)

आदि ग्रन्थ में संगृहीत संत कवि , सिख विचारधारा,गुरु नानक से गुरु ग्रन्थ साहब तक, गुरु नानक, गुरु तेगबहादुर, स्वामी विवेकानंद

खण्ड : सात (साहित्य)

विभिन्न साहित्यिक समस्याओं पर लिखे गये सुचिंतित लेख

खण्ड: आठ (धर्म और इतिहास)

धर्म और इतिहास के विभिन्न पक्षों पर लिखे गये विचार पूर्ण लेख

खण्ड : नौ (समाज और राजनीति)

विभिन्न सामाजिक एवँ राजनीतिक विषयों पर लिखे गये तलस्पर्शी लेख

खण्ड: दस (राजनीति)

राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं पर लिखे गये सुविचारित लेख

वैचित्र्य

...चित्रकला का नया आविष्कार

अरविंद नारले
arvind.narale@sympatico.ca

दस-बारह वर्ष पहले, नागपुर नगर के 'मेडिकल-स्क्वेअर' पर स्थित एक पुरानी पुस्तकों की दुकान में मेरी दृष्टि एक पुस्तक पर पड़ी जिसका नाम 'रामकृष्णकाव्यम्' था। मैंने इस पुस्तक को यों ही देखा और मुझे लगा की यह पुस्तक कुछ रहस्यमय है। यह लघु पुस्तक, जिसमें केवल 72 पृष्ठ हैं, जिसके रचयिता सोलहवी शताब्दी के 'सूर्यकवि' थे। इसकी भाषा संस्कृत, जिसमें 36 अद्‌भुत श्लोक हैं। मैं इस पुस्तक को लेकर उसमें डूब गया और मैंने देखा कि इन श्लोकों की हर पंक्ति यदि साधारण प्रकार से - बायें से दायें तरफ - पढ़ी जाए तो, श्रीराम की जीवनलीला, और यदि इसी श्लोक को विपरीत दिशा से पढ़ा जाए तो कृष्णलीला नजर आती है। *इस प्रकार की काव्य-रचना 'विलोम-काव्य' के नाम से जानी जाती है।*

इस काव्य की यह अनोखी शैली देखकर मेरे अन्तर का कलाकार जाग उठा। मेरे मन में विचार उठा की यदि कवि अपनी कल्पना से विलोम-काव्य का सृजन कर सकता है तो क्या चित्रकार अपनी कला से *'विलोम चित्र'* नहीं बना सकता? मैंने दृढ संकल्प किया कि मुझे इसकी तथ्यता की गहराई में जाना चाहिए। इस प्रकार मेरे मन में विचारों का संघर्ष होने लगा।

अब प्रश्न यह था, कि कविता तो बायें से दायें लिखी जाती है। किंतु, किसी चित्र को हम बाएं से दाएं तरफ या दाएं से बाएं तरफ नहीं देखते। लेकिन ऊपरवाली बाजू एक बार ऊपर और दूसरी बार नीचे कर - चित्र को उलटकर - दो भिन्न चित्र देख सकते है। चित्र की दोनों बाजू में - सीधी और उल्टी बाजू में - अगर अर्थपूर्ण प्रतिमा दिखाई दी तो उसे 'विलोम चित्र' कहा जाए, इस प्रकार मेरे मन में यह परिभाषा बनने लगी। और इसी सिध्दान्त के आधार पर मैं नए-नए चित्र बनाने लगा।

कलाकार होने के नाते यहां पर एक बात उल्लेखनीय है। उदाहरणार्थ, हम सभी मूँछ और दाढीवाले व्यक्ति के चित्र से परिचित हैं, जो उलटा करने से एक व्यक्ति दिखाई देता है। ऐसे नौसिखिया-स्तर के चित्र की भी यही विशेषता है कि, चित्र के सीधे बाजू की रेखाएं सीधे चित्र में जो अर्थ बताती हैं, उससे पृथक अर्थ उलटे चित्र में दिखाई देती हैं। इसी मूल विचारधारा को सम्मुख रखकर इस कला को विकसित करने का यह सारा प्रयास किया गया है। इस कल्पना की सीमा विस्तृत करने के लिए 'विलोम-चित्र' द्वारा मैंनें विविध कल्पनाओं का समावेश किया है।

इस संकलन में प्रस्तुत किए गए कुछ चित्रों का उत्थान - कभी बाथरूम में लगाई हुई टाईल्स में दिखाई पड़नेवाली अनियमित रेखाओं की तरफ, कभी दीवार पर लगे हुए 'वॉल-पेपर' की तरफ, कभी 'प्रिंट के नमूने' की तरफ तो कभी, किसी अन्य स्थल दिखाई पड़नेवाले 'एबस्ट्रक्ट-डिजाइन' की तरफ देखकर हुई है। इन रेखाओं के नमूनों में क्या मुझे कोई प्रतिमा दिखाई देती है? मेरे मन में पूरी तरह विश्वास हो गया कि उनमें कुछ न कुछ अवश्य नज़र आएगा। इस शुरुआत से - सीधे और उलटे बाजू में किसी वस्तु का आकार नज़र आने के बाद - एक तरह की उथल-पुथल शुरू होती है। एक बाजू में मन में जो चित्र सोचा है उसको ठीक करने के लिए रेखाओं में कहींकहीं यथोचित परिवर्तन करना आवश्यक होता है, वैसे ही उलटे बाजू का चित्र पूर्वयोजित कल्पना से भिन्न होने लगता है...कभी कभी बिगड़ने भी लगता है तो कभी किसी तीसरे चित्र की कल्पना मन में आ जाती है। इस बाजू के चित्र को ठीक से पूर्ण

करने के लिए किया हुआ रेखाओं का बदल, फिरसे सीधे बाजू के चित्र को बिगाड़ने लगता है। दोनों बाजूओं के चित्रों मे पूरी सार्थकता लाने के लिए, कौनसी रेखा मिटानी चाहिए, कौनसी कितनी और कहां डालनी चाहिए, इसकी सूझबूझ मुझे आने लगी है। इतने वर्षो के प्रयास के बाद भी, इस कला के विषय में दूसरों को स्पष्ट रूप से समझाने में मैं अपनी असमर्थता प्रकट करता हूं। हालांकि, मै स्वयं में इस विलोम-कला को सुचारू रूप से समझता हूं।

क्या दो 'एक ही प्रकार के विषयों को' एक दोहे में ऊपर नीचे करके संयुक्त करना संभव है? मेरे लिये यह एक पहेली थी। इसको सिध्द करने के लिये मैंने साधारण विषयों को चुना, उदाहरण के लिये नीचे पेश किया हुआ बिल्ली का चित्र।

क्या दो 'मन पसन्द के विषयों' को ऊपर नीचे करके एक ही चित्र में शामिल करना सम्भव हो सकता है? किसीने मुझसे कभी यह प्रश्न पूछा था और मेरा उत्तर था 'नहीं'। इसके बाद मैं अपने उत्तर पर विचार करता रहा कि क्या मेरा उत्तर सही था। इसके लिये मैंने 'लेखक और पाठक' के विषय का सहारा लेकर, दोनों एक ही चित्र में प्रदर्शित करने का प्रयास शुरू किया। यों तो मेरे पास स्वयं कैमेरे से निकाले हुये चित्रों का बहुत बड़ा संग्रह है। उनमें से एक चित्र, जिसमें कि एक बालिका पार्क की बेंच पर बैठी हुई पुस्तक पढ़ रही है, चुनकर मैंने उससे प्रयोग करना शुरू किया। आगे दिए हुए चित्र में उस चित्र की रूपरेखा प्रदर्शित की हुई है।

मेरे मन में यह एक चुनौती थी कि इस चित्र को उल्टा करके दिखाई देनेवाली प्रतिमा में, किस प्रकार 'एक लेखक' की प्रतिमा को देखा जाये? शायद यह सबकुछ असम्भव है... और शायद यह किसी पागल व्यक्ति का एक स्वप्न है। इसे 'विविध प्रकार से देखने' के बाद मुझे केवल निराशा ही हाथ लगी। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया तो अचानक एक दिन मेरी आंखों नें उस चित्र में 'लेखक' की जो धूमिल आकृति देखी, वह चित्र भी नीचे दर्शित किये गये है। धीरे-धीरे कुछ अन्य चित्र की रूपरेखाएं भी नज़र आने लगी।

मेरा उद्देश्य मन चाहे 'लेखक' के चित्रण को साकार करना है। इस प्रकार मैंनें अपना ध्यान उसी दिशा में लगा दिया। चित्र में के विविध आकार उस 'लेखक' के अंग के भाग बनकर स्वयं ही स्पष्ट रूपसे प्रगट होने लगे। अंतिम चित्र में प्रदर्शित की हुई मेरे मन की कल्पना साकार होने के पहले, अनेक बार सुधार करना पड़ा। अंतिम चित्र यह ऊपर नीचे की हुई चित्रावली का एक सजीव प्रमाण है।

अब मेरे मन में एक नया उत्साह जाग्रत हुआ। ऊपर पेश किये हुये दोनों ओर के चित्रों में प्रदर्शित किये हुये तपशील को अर्थपूर्ण बनाने का मेरा प्रयास बढ़ गया। बिना प्रयास किये हुये कुछ नई कल्पनायें

साथ-साथ नजर आने लगी। जैसे चित्र फूल के समान खुलने लगा वैसे आंतरिक सन्तुष्टि से मेरे चेहरे पर मुस्कान भी...उलटे सीधे चित्रों में जैसे कि कोई चमत्कार हो।

टोरांटो निवासी अपने एक परम मित्र, हास्यकवि श्री सुरेन्द्र पाठक, जो हिन्दी भाषा के अनन्य प्रेमी हैं। मैने एक बार उनको अपने विलोम चित्र दिखाए। इन चित्रों को देखकर सुरेन्द्र जी के मन में कविता लिखने की इच्छा जागृत हुई। वे जब मुझसे मिलने आते थे तो इन चित्रों पर आधारित छोटे-छोटे कागज़ के टुकड़ों पर अपने कुछ भाव व्यक्त कर देते थे। मै उनकी रचनाओं को कम्प्यूटर मे डाल देता था। धीरे-धीरे रचनाएं बढ़ने लगी। मेरे मनमें ऐसा विचार आया कि, हर चित्र को कवि की दृष्टि से यदि कविता की कुछ पंक्तियां लिख दी जाएं तो इन चित्रों में सजीवता आ जाएगी।

विलोम चित्रों में व्यक्त किये हुए दृश्य भिन्न-भिन्न क्यों न हो, रेखा-संचय एक ही होता है। वैसे ही, कविता सीधे और उलटे चित्र पर क्यों न हो, उन दोनों बाजुओं को संबोधित करने के लिए कविता में भी एक मध्यस्थ कल्पना का होना आवश्यक है। यह तत्त्व हमने प्रारंभ से ही स्थापित किया था। इस विचार को मन में रख कर श्री सुरेन्द्र पाठक जी ने चित्रों के ऊपर काव्यरूप जुगलबंदी निर्माण की। भविष्य में हम हिन्दी चेतना के आगामी अंकों में उन्हें प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

विलोम चित्रकाव्य माला

क्रमांक १

चित्रकार: अरविन्द नारले
कवि: सुरेन्द्र पाठक

इक दिन भगवन बैठे सोंचे, मैं पृथ्वीपर जा आऊं
किसका बच्चा सबसे सुन्दर, देखूं, सबको दिखलाऊं
मानव की तो बात और है, जिसका मेरे जैसा रूप
बन-पशुओं को जाकर देखूं, सबसे सुन्दर किसका रूप?

जा पृथ्वी पर, जंगल में फिर, सब जीवों को बुलवाया
"अपने अपने बच्चे लाओ, उन्हे देखने मै आया!"
सभी जीव अपने बच्चों को, प्रभुके आगे ले आए
सबने अपनेही बच्चों के, बार बार गुण दोहराए

पर ईश्वर को सबसे ज्यादा, भाया घोड़े का बच्चा
और जीवों को बात न भाई, भलेही ईश्वर था सच्चा
देख रहे है आप चित्र में, खडा हुआ है वह घोडा
चित्र उलट कर देखो किसने, प्रतियोगिता से मुंह मोड़ा

पेड़ पे बैठी इक बन्दरिया, अपनी बाहें ऊपर कर
जिसके मनमे उस का बच्चा, सब जीवोंसे है सुन्दर
ऐसी वैसी प्रतियोगिता में, कहीं न ईश्वर कर दे भूल
अपना बच्चा लेकर जाना, लगता मेरे लिए फजूल

चिन्तन
हर मानव, पशुपक्षी को भी, अपना बच्चा ही प्यारा
ईश्वर का वरदान ही समझो, जिससे चलता जग सारा!

प्रज्ञा परिशोधन

लेखिका – इन्दरा (धीर) वडेरा (कैनेडा)

प्रश्न : हम अपने बच्चों की अध्यात्मिक उन्नति कैसे करें ताकि वह एक अच्छे नागरिक बन पायें? -- कविता चोपड़ा (भारत)

उत्तर : बच्चे सदा कथा सुनने के उत्सुक होते हैं ! बच्चों की आत्मिक उन्नति के लिए उन्हें आसानी से शिक्षा कहानी के माध्यम से ही दी जाती है ! उन्हें रामायण जैसे अतुलनीय अद्भुत शास्त्र से परिचित करवाने के लिए आज के युग में टी. वी. जैसे साधन का प्रयोग किया जा सकता है और रात को सोने से पहले उन्हें कोई सार गर्भित पौराणिक कथा सुना, कहानी के माध्यम से बालक का मन विकसित किया जा सकता है ! हमारी पौराणिक कथाएँ बच्चों की नैतिक और अध्यात्मिक उन्नति के लिए एक सर्व श्रेष्ट साधन हैं ! आपके इस प्रश्नोत्तर का स्पष्टीकरण मैं दूसरे प्रश्नोत्तर के माध्यम से करने की अनुमति लेते हुए आगे चलती हूँ !

प्रश्न : मैंने अपने ही पुराणों की कुछ कहानियाँ पढ़ी हैं और मुझे उनकी सत्यता पर कुछ शंका सी है ! आप मेरी इस शंका का समाधान करेंगी ? --पुष्पा सेठ (अमेरिका)

शोधन : ऊपर लिखित दोनों प्रश्नों का उत्तर देने से पहले यदि हम किसी कहानी का उदाहरण लें तो उत्तर देने में कुछ आसानी होगी ! यहाँ हम एक ऐसी सारगर्भित पौराणिक कथा लेते हैं जिसका उल्लेख करते हुए माँ भुवनेश्वरी अपने बालक नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद जी) के कोरे मन, उसकी कोमल मेधा, और निर्मल आत्मा पर कुदरत के नियम की एक गहरी छाप छोड़ती है !

हिन्दी चेतना का पिछला विशेषांक श्रद्धेय साहित्यकार डॉ नरेन्द्र कोहली के जीवन और उनकी हिन्दी साहित्य के प्रति सेवा के विषय में निकला था ! इस लिए आज हम उदाहरण वहीं से लेते हैं !

'तोड़ो कारा तोड़ो' – में डॉ. नरेन्द्र कोहली कहानी का संक्षिप्त उल्लेख कुछ यूँ करते है : बचपन में एक दिन नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद जी) चीखते चिल्लाते और छुरी लेकर भागते फिर रहे थे ! घर के सभी सदस्यों नें उन से छुरी पकड़नी चाही लेकिन असफल रहे ! अंत में जब माँ भुवनेश्वरी और दो नौकरानियों की पकड़ में नरेन्द्र आए तो माँ भुवनेश्वरी उनका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करती हैं और उन के सिर पर पानी डालती हुई कहती हैं "शिव शिव ! हर-हर महादेव ! बोल शिव ! बोल शिव !" नरेन्द्र का चिल्लाना कम हुआ तो माँ बोली, "अब तू पाजीपन करेगा तो महादेव तुझ से रूठ जाएँगे !" नरेन्द्र के "सच माँ ?" प्रश्न पर माँ भुवनेश्वरी उन्हें पौराणिक-कथा सुनाती हैं !

इस प्रश्न के संदर्भ को लेकर नरेन्द्र कोहली जी यहाँ माँ और बेटे के मध्य हुए वार्तालाप का उल्लेख करते हुए लिखते हैं : भुवनेश्वरी नें कथा आरंभ की, "किशोरावस्था में एक दिन खेलते हुए गणेश जी की दृष्टी एक बिल्ली पर जा पड़ी ! अपनी चपलता से वशीभूत होकर, उन्होंने उसे नाना प्रकार के कष्ट देते हुए, मार-पीट कर उसे घायल कर डाला ! किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर बिल्ली भाग गई ! कुछ देर पश्चात् गणेश जी अपनी माता के पास पहुँचे ! उन्होंने आश्चर्य से देखा कि माँ के अंगों पर स्थान-स्थान पर मार के चिन्ह वर्तमान थे ! उन्होंने अत्यन्त व्यथित होकर उसका कारण पूछा ! माँ ने विषण्णता से उत्तर दिया, 'तुम्हारे ही कारण मेरी यह दुर्दशा हुई है !' गणेश जी नें अत्यंत व्यथित होकर, आँखों में आँसु भर कर पूछा, 'क्या कह रही हो माँ ! मैंने तुम्हें कब मारा ?' देवी ने उत्तर दिया, तुम ही विचार कर देखो कि आज तुमने किसी प्राणी को मारा है या नहीं ?' गणेश जी बोले, 'हाँ ! अभी कुछ देर पहले मैंने एक बिल्ली को मारा है !' माँ बोली, ध्यान रखो पुत्र ! तुम किसी को भी पीड़िति कर रहे हो, तो मुझे ही पीड़ित कर रहे हो ! अंततः तुम्हारे उस पाजीपन का दुष्परिणाम मुझे ही भुगतना पड़ता है !"
"माँ !" नरेन्द्र की आँखों में आँसू आ गए, "मैं किसी को भी परेशान नहीं करुँगा माँ !"

कविता और पुष्पा जी, लेखक कहानी लिखे या कवि कविता का सृजन करे, हर निखरे हुए कलाकार का ध्यान इसी तरफ होता है कि पाठक का विवेक कैसे जागृत हो, उसे सत्य की झलक कैसे मिले, उसका जीवन श्रेयपूर्ण कैसे हो ! हमारे ऋषि मुनि और योगियों नें जीवन के गहन रहस्य और महत्वपूर्ण सच्चाइयाँ पुराण-कथाओं में भर जीवन के रहस्यमयी सत्य जानने का एक आसान माध्यम हमें प्रदान किया है !

ऊपर लिखित पुराण-कथा किसी भी दृष्टिकोण से बहुत सारगर्भित है ! हमारा बच्चा किसी को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाए उसका कष्ट हमें होगा ! लेकिन यह भाव हम बालक को कैसे प्रकट करें, उससे हम अपने कष्ट का स्पष्टीकरण कैसे करें, बालक में उदारता कैसे विकसित हो, उसका विवेक कैसे जागृत हो, उसके हृदय पर सत्य की गहरी छाप कैसे छोड़ूं इन सब प्रश्नों से हम दिन रात जूझते हैं ! लेकिन बच्चे को सोने से पहले पौराणिक-कथा सुना हम बालक का आसानी से विवेक जागृत करते हुए उसकी निर्मोल मेधा को विशुद्ध करनें में अपना योगदान दे जाते हैं !

पुष्पा जी, आपका प्रश्न व आपकी शंका पौराणिक कहानियों की सत्यता पर है !

पुराण की मर्म निहित कथा में घटना की प्रमाणिकता का उतना महत्व नहीं जितना महत्व उसके द्वारा किए गए इशारे का है ! घटना की प्रमाणिकता महत्वपूर्ण स्थान वहाँ लेती है जहाँ प्रश्न निर्दोषिता या अपराधिता का हो !

संक्षेप में मेरा यह मत है कि कथोपकथन में दृष्टिकोण का, सारगर्भित पुराण-कथाओं में प्रतीक का और अपराधिता व निर्दोषिता की स्थिति में घटना की प्रमाणिकता का एक महत्वपूर्ण स्थान है ! पौराणिक कथा में इंद्रियग्राह्य प्रमाणिकता का महत्व कम है परंतु कथा के द्वारा किए गए इशारे का महत्व उससे कहीं ज्यादा है !!!

इस वार्तालाप को पढ़ने के बाद यदि आपके कुछ प्रश्न हों तो आप 'हिन्दी चेतना' के पते पर अवश्य भेजें।

Chander M. Kapur, CMA, CA

Professional Corporation
Chartered Accountant

2750 14th Avenue, Suite #201
Markham, Ontario
L3R 0B6

Tel: (905) 944-0370
Fax: (905) 944-0372
E-mail: cmkapur@rogers.com

DESIGNING YOUR IMAGINATION

Chunri Creations

An Exclusive Range of Designer Suit Dupatta, Lehnga, Choli, Sarees, Silver & Costume Jewllery

BRAMPTON

GOLDEN GATE PLAZA (NEAR MAVIS AND WILLIAMS PKWY)
80 PERTOSA DRIVE, UNIT # 12
BRAMPTON. L6X 5E9

PHONE 905-459-3264
OPEN ALL DAYS OF THE WEEK EXCEPT MONDAY,
TUE-SAT : 12:00 NOON TO 8 PM
SUNDAY : 12:00 NOON TO 6 PM

VAUGHAN

TUSCANY PLACE (NEAR VAUGHAN MILLS)
9100 JANE STREET, UNIT # 18
VAUGHAN.

PHONE 905-669-6030
OPEN ALL DAYS OF THE WEEK EXCEPT MONDAY,
TUE-SAT : 12:00 NOON TO 8 PM
SUNDAY : 12:00 NOON TO 6 PM

आप सभी को नए साल की बहुत सी शुभकामनाएँ

Madhu Gulati ❖ *Pinki Gulati*

FOR WHOLESALE ENQUIRY CONTACT PINKI GULATI:
647-887-7445

www.chunricreations.com

हलवा (बाल कथा)

रचना श्रीवास्तव (अमेरिका)

एक छोटी सी लड़की थी उसका नाम था अन्विक्षा। बहुत प्यारी थी वो। पर थोड़ी नटखट भी थी। खेलने में उस को बहुत मज़ा आता था। कल्पना की दुनिया में रहती थी। माँ पापा की दुलारी थी। पर उसमें एक कमी भी थी। उस को टालने की आदत थी। जब भी माँ कोई काम कहती तो बोलती अभी करती हूँ पर उसका अभी कभी नहीं आता। माँ उसको जब समझाती तो कहती "माँ कल कर लूँगी" और भाग जाती खेलने।

उसके स्कूल में इम्तिहान आने वाले थे। माँ कहती अन्विक्षा पढ़ लो, तो उसका वही रटा रटाया जवाब देती कल पढ़ लूँगी, "अरे बेटा इम्तिहान सर पे है, तुम टालो मत कितना सारा पढ़ना है, चलो पढ़ो" पर अन्वी को कहाँ सुनना होता था।

एक दिन माँ ने कहा अन्विक्षा "जानती हो तुम्हारी नानी क्या कहती थी।", "अन्विक्षा बोली क्या "माँ ने कहा "कहती थी काल करे सो आज कर,"आज करे सो अब, पल में परलय होगी बहुरि करेगा कब।" पर अन्विक्षा को कहाँ सुनना होता था। उस के पास तो हर बात का जवाब होता था। बोली माँ नानी को मालूम नहीं इसको ऐसे कहते हैं - "आज करे सो काल कर काल करे सो परसों जल्दी-जल्दी क्यों करता है अभी तो जीना बरसों" माँ बेचारी कुछ कह नहीं पाती। बहुत दुखी होती। सोचती क्या करूं इस लड़की का।

अन्विक्षा को हलवा बहुत पसंद था। एक दिन जब वो खेल के आई तो माँ सी बोली "माँ आज हलवा बना दो न" "माँ कुछ काम कर रही थी" बोली बेटा "आज तो बहुत काम है कल बना दूँगी।"

अन्विक्षा ने कहा "ठीक है" कह कर कमरे में चली गई। दूसरे दिन अन्विक्षा ने कहा "माँ तुम ने कहा था आज बना दोगी बना दो न" माँ ने फिर कहा "ओहो बेटा मैं तो भूल गई आज मुझे बाजार जाना है कल बना दूँगी।"

" इसी तरह से अन्विक्ष रोज हलवा बनने को बोलती माँ कोई न कोई बहाना बना के टाल देती। इस तरह 7 दिन बीत गए। आठवीं रोज जब अन्विक्षा सो कर उठी तो देखा कि मेज पर 8 प्लेट हलवा रखा है। अन्विक्षा की खुशी का तो ठिकाना नहीं था। वो फटाफट ब्रश कर के खाने बैठी।

उसने पहली प्लेट दूसरी प्लेट बहुत मन से खाई तीसरी भी खा ली। चौथी थोड़ी मुश्किल से खाई फिर पांचवी तो नहीं खा पाई। माँ से बोली अब नहीं खाया जाता। माँ ने कहा, "अरे बेटा थोड़ा और खा लो तुम को तो बहुत पसंद है", "नहीं माँ अब नहीं खा सकती" अन्विक्षा बोली।

"अन्विक्षा देखो तुम्हें यह हलवा कितना पसंद है पर तुम ज्यादा नहीं खा सकती। यदि यही हलवा एक प्लेट रोज मिलता तो तुम आराम से खा लेती क्यों है न? इसी तरह से पढ़ाई भी है, तुम एक साथ ज्यादा नहीं पढ़ सकती। जब 8 दिन का हलवा तुम एक दिन में नहीं खा सकती तो 8 दिन की पढ़ाई कैसे एक दिन में कर पाओगी। इसीलिए रोज का काम रोज करना चाहिए, कल पर टालना नहीं चाहिए।"

अन्विक्षा को यह बात समझ में आ गई। उस दिन के बाद से अन्विक्षा ने कभी बात को टाला नहीं। रोज का काम रोज करती थी। अब वो सभी की प्यारी बन गई और माँ बहुत खुश थी।

कहानी से शिक्षा : इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि रोज का काम रोज करना चाहिए कल पर टालना नहीं चाहिए।

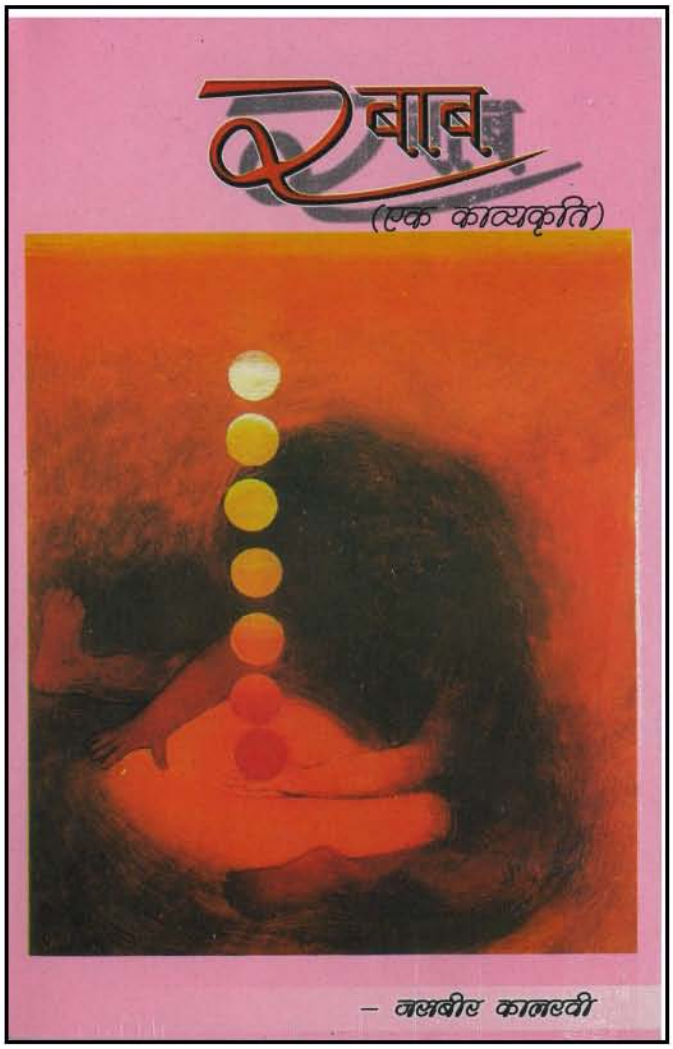

कुण्ठा

इला प्रसाद (अमेरिका)

यामिनी खुश थी, बेहद ! बावजूद इसके कि हॉल में घुसते ही वह उस औरत से टकराई थी , जिसके वहाँ होने का उसे गुमान तक न था । हालांकि होना चाहिए था, क्योंकि आस्टिन का भारतीय समुदाय इतना भी बड़ा नहीं ! फिर वह उसी की तरह गुजराती है। दरअसल कुछ लोग इतने गैर जरूरी होते हैं आपकी जिन्दगी में कि स्मृति से उस अल्पकालिक मुलाकात के तत्काल बाद बाहर हो जाते हैं जो ऐसी ही किन्हीं परिस्थितियों में होती है। फिर यामिनी के मष्तिष्क ने तो उसे सोच- समझकर खारिज किया था कुछ अल्पकालिक मुलाकातों के बाद। पहली बार जब उसने अन्विता और वशिष्ठ को देखा था, तो उसे बिल्कुल ही अन्दाजा न था कि वह एक पिछले आकाश के सितारे से मिल रही है। रवि ने ही पहचाना और परिचय कराया - "इन्हें मिलो, ये हैं अन्विता,कभी होकी के मैदान में दिखाई पड़ती थीं। आजकल अमेरिका में वशिष्ठ के घर की शोभा बढ़ा रही हैं।" इन मामलों में यामिनी की याददाश्त हमेशा अच्छी रही है, जनरल नालेज में कभी अस्सी प्रतिशत से कम नहीं आया। उसे याद आया, जब वह कॉलेज में पढ़ती थी, अक्सर ही इसकी तस्वीरें अखबारों में देखती थी। तब अन्विता भी उसी की तरह अठारह -उन्नीस की हुआ करती थी पर भारत की महिला टीम की कप्तान थी। अपनी नादानी में उसने अपनी याददाश्त की पुष्टि चाही - " मुझे लगता है मैंने आपका इन्टरव्यू "धर्मयुग " में पढ़ा था।" अन्विता निहाल हो उठी - "हाँ, हाँ, तब मैं बहुत छोटी थी। पूरे दो पेज लम्बा इन्टरव्यू छपा था मेरा। बड़े से फोटो के साथ। धर्मयुग का वह अंक ही हम खिलाड़ियों पर केन्द्रित था। तब हमारी टीम पाकिस्तान से जीत कर लौटी थी। मैंने तो उस पेज की कटिंग अभी भी अपने पास रखी हुई है। और भी बहुत सारी चीजें हैं।" " हाँ होंगी ही। " यामिनी सहज भाव से मुसकराई थी।

आस पास कई लोग थे। वह ऊँचे स्वर में बोल रही थी। हो सकता है कुछ और लोगों ने भी सुना हो। एक भूतपूर्व स्टार को अपने गौरवशाली अतीत की गाथा सुनाते हुए... यामिनी खुश हुई थी। परिचय किया था। जाना था उसके बारे में। वह अब हॉकी नहीं खेलती। दो बच्चे हैं, स्कूल में पढते हैं। वह व्यस्त है - घर- परिवार और बच्चों के बीच। जन्माष्टमी उत्सव अपनी समाप्ति पर था। यामिनी और रवि ने भी घर की राह ली।

"आपसे मिलना होता रहेगा।" यही आखिरी वाक्य था उस दिन, जो यामिनी ने उससे कहा था। तब कहाँ मालूम था कि यह उसके न चाहने के बावजूद घटित होता रहेगा!

उसने रवि से कहा था, कुछ और मुलाकातों के बाद वह उन्हें घर पर बुलायेगी। मित्रता करेगी अन्विता और वशिष्ठ से। घर पर खाने पर बुला सकते हैं। भली-सी लगी । लेकिन यह हुआ नहीं और अगली मुलाकात भी एक सार्वजनिक उत्सव में ही हुई।

वैसे अगली मुलाकात का मौका भी बहुत जल्द नहीं आया। वह अपनी गृहस्थी में उलझी रही। दुर्गा पूजा में उसने भी अपना स्टाल लगाया - रंगोली की कलात्मक डिजायन वाले दियों का और बाजार से कम कीमत पर होने के कारण उसके सारे दिए फटाफट बिक गए। वह खुश हुई, संतुष्ट भी। लोगों ने उसकी कलात्मकता को सराहा और बताया कि इन खूबसूरत दियों को वे बाजार के बराबर कीमत पर भी खरीदते। वह आराम से दो दियों के दो डॉलर माँग सकती थी।

उसने यह सब पैसे कमाने के लिए नहीं किया था। उसके अन्दर एक छुपा हुआ कलाकार था जो बाहर आने को तड़प रहा था। अपने खूबसूरत चेहरे या बड़ी बड़ी आँखों का यामिनी को कभी गर्व नहीं रहा, न छरहरी देहयष्टि का। ये चीज़ें तो उसे उस जन्मजात प्रतिभा के साथ विरासत में मिल ही गई थीं। वह अप-ने को अभिव्यक्त करना चाहती थी और इस तरह खुश थी।

अगले साल जब फिर लोगों ने दुर्गा बाज़ार में उसका स्टाल तलाशा तो उसे बेहद खुशी हुई। अपने खूबसूरत दियों को टेबल पर बिखेरे वह एक ग्राहक से निबट रही थी, जब उसने अन्विता को उस पंडाल में देखा। वह एकदम से खुश हो गई। "कैसी हैं आप "नजदीक आते ही वह बोल उठी। फिर आसपास के लोगों से परिचय कराती-सी बोली "पता है, ये हैं अन्विता। अस्सी के दशक में लड़कियों की नेशनल हाकी टीम की कप्तान हुआ करती थीं।"

"अच्छा! " कुछ लोगों ने दिलचस्पी ली। अन्विता उनसे बातें करने में व्यस्त हो गई। भीड़ बहुत थी। यामिनी ने जाना भी नहीं कब वह वहाँ से चली भी गई।
वह व्यस्त थी। उसने ध्यान नहीं दिया।

फिर तीसरी मुलाकात - उसकी दोस्त के बेटे की जन्मदिन पार्टी। छोटा सा, पारिवारिक उत्सव। विनी ने पहले ही बतला दिया था कि वह कोई बड़ा आयोजन नहीं कर रही और गिने-चुने आत्मीयों को बुला रही है। यामिनी ने सोचा था अकेली गुजरातन वह वहाँ होगी। लेकिन विनी के घर में अन्विता को पाकर चौंक गई। प्रसन्न भी हुई। कोई अपनी भाषा बोलने वाला है यहाँ।
"कोने में ले जाकर उसने विनी से पूछा " तुम अन्विता को जानती हो? कब से ?"

"अरे , वो एक्स हॉकी स्टार है , तुम्हें पता है ? बहुत अच्छी खिलाड़ी रही है। कैप्टन। तुम्हें पता है ?"
"हाँ , हाँ। लेकिन तुम कैसे जानती हो?"
इसका पति मेरे पति का कुलीग है।
"अच्छा।" समस्या का समाधान हो गया ।
यामिनी अन्विता के ठीक सामने जा बैठी।
मुसकराई - "पहचाना"?

" नहीं, यू नो , मेरी याददाश्त अच्छी नहीं है। हम मिले हैं पहले ?

"हाँ , दो बार। आपको याद नहीं?मैं यामिनी। दुर्गा

बाज़ार में भी मिले थे।

"अच्छा।" उसने अब भी न पहचानने का नाटक किया। यामिनी को बुरा लगा। वह टेबल के दूसरी ओर बैठी महिला से बातें करने लगी। वे आत्मीय थीं। उन्हें यामिनी के दिए याद थे। उसकी कलाकारी याद थी और याद थीं बहुत सारी गैर जरूरी बातें, जो खाली बैठी, बतकट्टी करने वाली महिलाएँ आपस में बतिया लेती हैं। यामिनी उनके साथ व्यस्त हो गई। सहसा टेबल के दूसरी ओर बैठी अन्विता ने उनकी बातचीत को बीच में ही रोकते हुए टोका , वह उस दूसरी महिला जिसका नाम अरूणा था, से मुखातिब थी - "मुझे लगता है मैं आपको जानती हूँ।" अरूणा के चेहरे पर परिचय का कोई भाव नहीं उभरा। "याद कीजिए , हम मिले थे - कनाक्टीकट में।" "हम कनाक्टीकट में बारह साल पहले रहते थे।" "हाँ, मैं तभी की बात कर रही हूँ। हम आपके स्पैनिश पड़ौसी के घर आया करते थे। वो मिस्टर और मिसेज ट्वेन।"

अब शायद अरूणा को याद आ गया था, वह उससे बातें करने लगी।

यामिनी चुप उन्हें सुन रही थी। अचानक एक स्वर आया - "यामिनी ?"

उसने सिर उठाया। आँखों के अपरिचय को भांपती वह बोलीं " मैं विद्या। याद है, हम मिले थे? यहीं, विनी के घर पर।" यामिनी ने कोई नाटक नहीं किया। उसे आसानी से याद आ गई पिछली मुलाकात।

सहसा अन्विता का स्वर सबसे ऊँचा होकर उभरा - "कैसा होता है न। कुछ लोगों को आप बारह साल बाद भी पहचान लेते हैं। अरूणा जी से मैं बारह साल बाद मिल रही हूँ। ए कदम से याद आ गया और यामिनी का चेहरा ही मुझे याद नहीं था। जबकि इससे पिछले साल ही मैं मिली थी।"

अब तक टेबल के चारों ओर महिलाओं ने जगह ले ली थी। पुरूष दूसरे कमरे में अपनी महफिल जमाए थे। जन्मदिन की पार्टी की टेबल और कमरा सज चुका था लेकिन बर्थ डे ब्वाय अपना बर्थडे मनाने को तैयार नहीं था। उसकी चार साला बुद्धि में यह समा नहीं रहा था कि उसका जन्मदिन तो पिछले सोमवार को था - जब चार सितम्बर था तो आज वीक एन्ड यानी रविवार को उसका जन्मदिन क्यों मनाया जा रहा है? विनी उसे केक काट ने को समझा रही थी और वह बार-बार एक ही बात कह रहा था - 'बट टुडे से नोट माई बर्थ डे इट वाज ओन फोर्थ सेप्टेम्बर। "(लेकिन आज मेरा जन्मदिन नहीं है।यह चार सितम्बर को था।)"

अब अमेरिका की छुट्टियाँ विहीन जिन्दगी की कथा उसे कौन समझाए, जहाँ सारे पर्व त्योहार सप्ताहान्त में धकेल दिए जाते हैं और समझाने पर भी वह उसकी बाल बुद्धि में क्यों आए? पिछली बार तो चार सितम्बर को ही मना था। सही दिन। अब उस दिन शनिवार था , उसकी उसे कहाँ समझ! सो विनी उसे उदाहरण दे - देकर मना रही थी - " बट वी आल्वेज सेलेब्रेट एवरीथिंग ऑन वीकेन्ड। सो योर बर्थ डे आलसो।"(लेकिन हम हमेशा सप्ताहांत में सब कुछ मनाते हैं , इसीलिए तुम्हारा जन्मदिन भी सप्ताहांत में मना रहे हैं)

"नो। नो। " पार्थ रोने लगा।

रस भंग हुआ! महिला पार्टी बर्खास्त हुई। बच्चे को मनाना था। यामिनी ने काफी अपमानित महसूस किया था। अन्विता के बोलने का अन्दाज ऐसा था जैसे वह उसे नाचीज साबित करने पर तुली हुई हो। बारह साल पुरानी मुलाकात उसे याद थी लेकिन यामिनी नहीं। यामिनी ने तय किया वह उसे आगे से नहीं पहचानेगी। उस पार्टी में सब उसके परिचित ही थे। अन्विता ही नई थी वहाँ। केक , मोमबत्तियाँ और गुब्बारे यानी कि जन्मदिन! गुब्बारे फोड़ने के आखिरी अनुष्ठान के बाद जब पार्थ स्वस्थ मन से अपने दोस्तों के बीच खेलने- खाने में व्यस्त हो गया तो फिर से महिलाओं की मीटिंग डायनिंग टेबल के चारों ओर जा जुटी और पुरुष अपनी प्लेटें लिए वापस बाहर के कमरे में टी वी के सामने जम गए।

"पता है, जब मैं हॉकी खेलती थी ....." अन्विता ने शुरू किया।

तब छोटे-छोटे ग्रुपों में बँटे लोगों का ध्यान खाने पर अधिक था। काफी देर हो गई थी। बच्चे ने बात मानने में काफी देर लगाई थी और इससे ज्यादा फर्क बड़ों को पड़ा था। ऐसा ही होता भी है, सीलिए तो हम अपनी दुनिया में बच्चों को अपनी सुविधानुसार शामिल करते हैं और अक्सर करते ही नहीं। बच्चों को बड़ों की दुनिया से कोई खास मतलब भी नहीं है जब तक उन्हें अपनी मनमर्जी करने दी जाय। उनके खिलौने उनके पास बने रहें और उन्हें बिलावजह- जो हमेशा बिना वजह ही होता है, किसी बच्चे से पूछ कर देखिए - खेलने से मना न किया जाय। पढ़ना , खाना यहाँ तक कि सोना भी गैर जरूरी बातें होती हैं उनके लिए ।

घर पर भीड़ थी। बड़ों की। पार्थ को मालूम था आज का हीरो वह है। वह अपने ढेर सारे दोस्तों के साथ अपने खिलौनों वाले कमरे में था। सामान्यत: वहाँ बैठकर खाने से मॉम गुस्सा करती हैं, लेकिन आज वह राजा है। वह खेलेगा और तब तक नहीं खायेगा जबतक उसके दोस्तों में से किसी की मॉम उपर के कमरे में न आ धमके और उसकी मॉम के पास जाकर उसका भाँडा न फोड़ दे। वह जानता है, यह होना नहीं है।

मॉम लोगों को फुरसत कहाँ? उनका खाना और बोलना साथ-साथ चलता है। और जब अपने- अपने बच्चों की कथा बाँटी जा रही है तो वास्तव में बच्चों को देखने का वक्त तो बाद में आयेगा। फिर अन्विता की हाकी कथा भी कौन सुने! कोई तो जानता नहीं उसे। अरूणा से बारह साल पुरानी मुलाकात का हवाला देकर उसने उसे अपनी बगल में बिठा जरूर लिया लेकिन शायद अरूणा को इस बाबत कुछ याद नहीं, क्योंकि वह भी अपने बेटे की ही कथा सुनाना चाहती है जो वीकेन्ड में युनिवर्सिटी से घर आ तो जाता है लेकिन उनके इतने प्यार से बनाए आलू के पराँठे नहीं खाना चाहता। उनका मन रखने को कुछ राजमा वगैरह खा लेता है लेकिन यदि वे प्यार से होस्टल में खाने के लिए कुछ बना कर देना चाहें तो मना कर देता है "मॉम तुम समझती नहीं हो। सब बेकार जाते हैं। फेंकना पड़ता है। क्यों बनाती हो? मैं नहीं ले जाने वाला। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत ही नहीं। मैं वहाँ पिज्जा खा लूँगा।"

आजकल मिसेज अरुणा भसीन का आलू के पराठे

बनाना छूटता ही जा रहा है। बेटा कहता है वजन बढ़ जायेगा। बस गोभी के बनते हैं और वह भी बेटा ले नहीं जाता। बस घर पर रहता है तो खा लेता है। गोया मन रखने के लिए। वे दुखी हैं। यहाँ अमेरिका में बच्चे माँ -बाप की एकदम नहीं सुनते। सेहत का खयाल नहीं रखते। केवल पिजा और मैक्डोनाल्ड के सैंडविच खाते हैं। ऊपर से लॉ ऐसे हैं कि कुछ बोलो तो नाइन वन वन कॉल करके पुलिस बुला लेते हैं। गोया हम माँ-बाप न हुए, दुश्मन हैं।

"हाँ , ऐसा ही है , और क्या।" मिसेज सेन ने हामी भरी। मेरे बगल वाले मुस्लिम हैं। बेटी हो गई अठारह साल की। आधी खुली ड्रेस पहन कर अपनी दोस्तों की पार्टी में जा रही थी। खान साहब ने देखा तो डाँट दिया - "ऐसे कपड़े पहनकर नहीं जायेगी तू।" उसने नाइन वन वन कॉल कर दिया।

"और इनकी डेट्स के बारे में कभी मत पूछना।" रीं-रीं करने लगेंगे। मेरी बेटी ? मैंने तो उसे छोड़ दिया है। फिर उसकी आवाज की नकल उतारती नीरा कहने लगी " आँ, हाँ मेरे कहाँ डेट्स हैं।"

टेबल पर हँसी की लहर दौड़ गई।

अन्विता परेशान ! यामिनी की बगल में आ बैठी। "तुम क्या कर रही हो आजकल ?"

"एक कोर्स वर्क ज्वायन किया है। बाकी वही सब पेन्टिंग , आर्ट वर्क।'

"तुम्हारी पेन्टिंग्स काफी अच्छी थी।" अरूणा भसीन ने जोड़ा। अब सारी चर्चा का केन्द्र यामिनी की पेन्टींग्स - जिनकी प्रदर्शनी उसने पिछले दिनों लगाई थी और उसके दिए।

"टी वी पर कितना सुन्दर प्रोग्राम आ रहा है।" अन्विता उठकर बाहर के कमरे में जा बैठी। मुड़कर देखा यामिनी आयेगी। वह नहीं गई।

अन्विता थोड़ी देर बाद वापस आ गई।

तब तक रवि आ गया था। यामिनी ने सबको बाय कहा। "मैं चली।"

"हाँ , हाँ।" अन्विता जल्दी से बोली। भीड़ अब उसे सुनेगी! कमरे से निकलते हुए यामिनी ने सुना , वह बतला रही थी - "यू नो, मैं हॉकी खेलती थी। टीम इन्डिया की कैप्टन थी मैं।"

तब वह मुसकराई थी और कमरे से बाहर हो गई थी।

और यह आज है। इस बीच फिर एक बरस गुजर गया है। इतनी घटनाएँ घटी हैं कि उस मुलाकात की स्मृति उतर गई मन से। वह कटु थी शायद इसलिए भी मष्तिष्क ने उसे खारिज कर दिया। लेकिन आज यह गरबा नृत्य के हॉल के दरवाजे पर खड़ी है। नवरात्रि उत्सव का आज अखिरी दिन है। इस साल नवरात्रि के आखिरी दिन सप्ताहान्त में पड़ा है इसलिए भीड़ अधिक है। हॉल भरा हुआ है। स्टेज पर तमाम वाद्यों के साथ लोग मौजूद हैं। गरबा गीत चल रहा है और नाच रहे हैं टोलियों में स्त्री- पुरुष, बच्चे। कमरे में तेज प्रकाश है इसलिए यह सब यामिनी ने दूर से ही - जब रवि कार पार्क कर रहा था - देख लिया था। कमरे के बीचों बीच माँ अम्बा की मूर्ति है। आज नवमी है। फाफड़ा और जलेबी दशमी की सुबह नाश्ते में खाते हैं। आज रात के नाच के लिए - जो कम से कम बारह बजे तक तो चलेगा -अल्पहार में हमेशा की तरह पकौड़े हैं। हर भारतीय समुदाय की तरह गुजरातियों ने भी अपनी परम्परा को सुरक्षित रखा है विदेश में। लेकिन, भविष्य तो अगली पीढ़ी के हाथों में है और फिलहाल उसे गरबा के बजाय कन्ट्री म्यूजिक और बालीवुड डान्स में ज्यादा रूचि है! इस आयोजन में भी अविवाहित युवा वर्ग की उपस्थिति नगण्य ही है। शहर के चारों कोनों में कई केन्द्र हैं गरबा नृत्य के , क्या पता किसी अन्य केन्द्र में हों । उसे क्या पता !

"हाय।" वह इतने जोर से चिल्लाई कि यामिनी की नजर जानी ही थी। कमरे में तीव्र संगीत था शायद इसलिए इतने जोर से चिल्लाई, यामिनी ने सोचा। प्रत्युत्तर में हल्के से मुसकराई बस। दो मिनट बैठे और फिर वह और रवि, नृत्यस्थल, जो कमरे के बींचोबीच था, पर जा पहुँचे। अन्विता पीछे से आई। "यह मोटी हो गई है। शायद इसीलिए भी मैं पहली नजर में इसे पहचान नहीं पाई और पहचानना चाहता भी कौन था!" यामिनी ने सोचा। वे टोलियों में शामिल हो गए थे। आज नृत्य रुकना नहीं था। बस नृत्यरत चेहरे बदल रहे थे। यामिनी और रवि नाचते रहे। वशिष्ठ शायद नहीं आया था। अन्विता अकेली नाच रही थी। संगीत थमा। रेकार्ड बदला जा रहा था। वह भागती हुई यामिनी और रवि के पास आई - "कम! भाँगड़ा करेंगे।" उन दोनों में से कोई आगे नहीं बढ़ा। गरबा से भाँगड़ा का क्या संयोग?

वह जोरों से हँसती रही , नाचती रही अकेली। फिर दो-चार लोग जुट गए। हट भी गए। कोई नहीं पहचानता !

अन्विता फिर अकेली थी। यह होता रहा बार- बार। यामिनी- रवि ने इस बीच थोड़ा दम लिया। किनारे खड़े लोगों से बातें की जो उन्हीं की तरह थक गए थे।

डांडिया नृत्य के बाद जब वे वापस हो रहे थे तब भी अन्विता बार-बार भीड़ में शामिल होकर नृत्य करती - दो मिनट और फिर लोगों को अपनी ओर बुलाने की असफल कोशिश करती।

"टीम इन्डिया" बन ही नहीं रही थी। अकेली कप्तान सिर पीट रही थी!

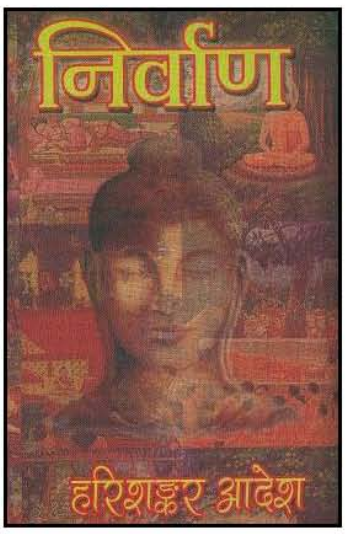

समाचार

हिन्दी साहित्य सभा का ग्यारहवाँ वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम

गत 14 नवम्बर 2008 नॉर्थ योर्क पब्लिक लाइब्रेरी के विशाल सभागार में हिन्दी साहित्य सभा द्वारा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कवियों एवं कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

रंगारंग कार्यक्रम की शुरुआत श्री भगवत शरण श्रीवास्तव एवं श्रीमती अरुणा भटनागर के स्वागतीय शब्दों से हुई. इसके पश्चात हिन्दी साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. कैलाश चंद्र भटनागर ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर समारोह का शुभारम्भ किया. अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. कैलाश चंद्र भट नागर ने सभी श्रोताओं का अभिनन्दन किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य सभा की स्थापना, इसके कार्य कलापों एवं भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

सर्वप्रथम सभी उपस्थित दर्शकों ने मिलकर समूह गान में सरस्वती वदंना की। इसके पश्चात, चित्रलेखा क्लब के कलाकारों ने मनोहरी पूजा नृत्य प्रस्तुत किया। बालकों द्वारा अत्यंत सुंदर राधा कृष्ण नृत्य प्रस्तुत किया। जिसने भारत की महान संस्कृति को याद दिला गया। संध्या का विशेष आकर्षण बने विशेष रुप से आमंत्रित भारत से आये युवा कवि श्री अवनीश गुप्त जिन्होंने अपनी अत्यन्त सुंदर हास्य व्यंग्य की कविता से दर्शकों को खिलखिलाकर हँसने पर विवश कर दिया और अपनी अगली ही कविता 'ए मेरे हिंदुस्तानी' द्वारा अनिवासी भारतीयों को हिन्दी भाषियों में व्याप्त निरक्षरता,गरीबी आदि समस्याओं के समाधान की ओर सोचने का आह्वाहन किया।

इसके बाद मंच पर आये प्रसिद्ध हास्य कवि श्री सुरेन्द्र पाठक ने अपनी हास्य कविता से दर्शकों को हंसा - हंसा कर लोट - पोट कर दिया। श्रीमती उमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती पाण्डेय आदि ने अपने गीत -गायन से भारत की मिट्टी में रचे बसे लोक - गीतों की याद ताजा करा दी। श्रीमती इंदिरा वर्मा जी ने अपने सुमधुर कंठ से चैत - गान प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया. चित्रलेखा क्लब की अन्य प्रस्तुतियों के अंतगर्त बालिकाओं द्वारा ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किया गया. कविवर श्री संदीप त्यागी जी ने भारत की सामजिक विषमताओं पर सुंदर घनाक्षरी प्रस्तुत की, जिसपर दर्शकों ने तालियों द्वारा हर्ष प्रकट किया। इसके बाद आये डॉ. देवेन्द्र मिश्रा ने अपनी श्रृंगार कविता एवं ओज गीत से दर्शकों को बाँध दिया।

अंत में सभाध्यक्ष डॉ. कैलाश चंद्र भटनागर ने सभी आयोजकों एवं दर्शकों का आभार व्यक्त किया और इसी प्रकार हिन्दी के प्रचार प्रसार में सभी से अपनी अपनी भूमिका का निर्वाहन करते रहने का आग्रह किया।

समस्त रुप से हिन्दी साहित्य सभा द्वारा आयोजित यह मनमोहक संध्या भारत की संस्कृति एवं साहित्यिक पहलुओं को लेकर समाप्त हुई।

डॉ. कैलाश चंद्र भटनागर

हिन्दी समाचार यू.के. से

जिस दिमाग़ में धर्म या मज़हब रहता है वहां दहश्तग़र्दी के लिये कोई स्थान नहीं –
काउंसलर ज़कीया ज़ुबैरी

कथा यू.के. एवं एशियन कम्यूनिटी आर्ट्स द्वारा आयोजित साँझी हिन्दी-उर्दू कथागोष्ठी में मेहमानों को स्वागत करते हुए कॉलिन्डेल की काउंसलर ज़कीया ज़ुबैरी ने कहा, "मुम्बई की त्रासदी के बाद हमें यह ज़रूरी लगा कि हिन्दी-उर्दू की एक मिली जुली कथा-गोष्ठी करवा कर हम विश्व को संदेश दे सकते हैं कि साहित्य द्वारा दो देशों के नागरिकों में ए क सहज वातावरण पैदा किया जा सकता है। मैं नहीं मानती कि आतंकवाद का कोई मज़हब होता है। दरअसल मैं तो कहूंगी जिस दिमाग़ में मज़हब या धर्म का वास होता है, वहां दहश्तग़र्दी के लिये कोई स्थान नहीं होता ' इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे भारतीय उच्चायोग के हिन्दी एवं संस्कृति अधिकारी श्री आनन्द कुमार जबकि अध्यक्ष थे प्रोफेसर अमीन मुग़ल।

इस कथागोष्ठी में हिन्दी कथाकार दिव्या माथुर ने अपनी महत्वपूर्ण कहानी पंगा का पाठ किया तो उर्दू का प्रतिनिधत्व किया नजमा उसमान की कहानी मज्जु मियां ने। इस महत्वपूर्ण गोष्ठी में अन्य लोगों के अतिरिक्त शामिल हुए डॉ. अचला शर्मा, उषा राजे सक्सेना, सोफिया सिद्दीकी, हुमा प्राइस, परवेज़ आलम, ख़ुर्शीद सिद्दीकी, परिमल दयाल, रेहाना सिद्दीकी, डॉ. हमीदा, सीमा कुमार, केबीएल सक्सेना।

कथा यू.के. के महासचिव तेजेन्द्र शर्मा ने सूचित किया कि यह कथा यू.के. की गोष्ठियों का दसवां साल है। दिव्या माथुर की कहानी पंगा के बारे में उन्होंने कहा कि यह सही मायने में हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीय कहानी है। इस कहानी का वि-षय, निर्वाह, भाषा और बिम्ब सभी नयापन लिये हैं। कहानी का आधार लन्दन की कारों की नम्बर प्लेटें हैं। कहानी की मुख्यपात्रा एक अधेड़ सेवानिवृत भारतीय मूल की महिला है। तेजेन्द्र शर्मा ने आगे कहा कि दिव्या ने इस कहानी में जो टैक्नीक अपनाई है उसमें कहानी सुनाने से हट कर वे कहानी दिखाती हैं।

आनंद कुमार, ज़कीया ज़ुबैरी, उषा राजे सक्सेना, सोफिया सिद्दीकी, परवेज़ आलम, परिमल दयाल, डॉ. हमीदा एवं ख़ुर्शीद सिद्दीकी आदि सभी एकमत थे कि कहानी चलती हुई कार की यात्रा के साथ साथ उन सभी सड़कों पर उन्हें साथ ले चलती है। पन्ना (कहानी की मुख्य पात्रा) की हर प्रतिक्रिया उन्हें सहज और सही लगती है।

डॉ. अचला शर्मा ने दिव्या को उनकी कहानी की भाषा, विट और विषय के चुनाव के लिये बधाई दी। अध्यक्ष प्रो. अमीन मुग़ल के अनुसार कहानी तीन स्तरों पर यात्रा करती है। पहले स्तर पर आती है कारों की नम्बर प्लेटें जिनकी कड़ियां एक कहानी बनाती चलती हैं। उसके बाद आती है पन्ना की कार की यात्रा। ये दोनों स्तर एक सीधी लाइन की तरह चलते हैं। फिर उन नम्बर प्लेटों से दिमाग़ में पैदा हुई भावनाएं, वो अपनी एक कहानी बनाती हैं। वो एक तरह से तरंगों की तरह चलता है। मज़ेदार बात यह है कि उन तरंगों में भी एक छिपी हुई सरल रेखा चलती रहती है, जो कुछ पन्ना के साथ घटित होता है। उन्होंने दिव्या माथुर की कहानी को आधुनिक कहानी की एक अच्छी मिसाल बताया।

नजमा उसमान की कहानी मज्जु मियां के बारे में तेजेन्द्र शर्मा ने बताया कि यह कहानी किस्सागोई शैली की कहानी है जिसमें चरित्र के भीतर की यात्रा न दिखा कर लेखक सारा किस्सा ख़ुद अपने लफ़्ज़ों में बयान करता है। नजमा की भाषा चुटीली थी और अदायगी प्रभावशाली।

उषा राजे सक्सेना, आनन्द कुमार, परवेज़ आलम, ख़ुर्शीद सिद्दीकी, सोफिया सिद्दीकी, डॉ. हमीदा, को लगा कि कहानी में मज्जु मियां का चरित्र बहुत मज़ेदार है। कहानी की भाषा बहुत विट लिये है। ज़कीया ज़ुबैरी का कहना था कि पाकिस्तान से ब्रिटेन आये हर घर में मज्जु मियां जैसा एक न एक रिश्तेदार ज़रूर होता है।

चित्र में–
सामने बैठे नजमा उसमान, ज़कीया ज़ुबैरी, दिव्या माथुर। (खड़े हैं – तेजेन्द्र शर्मा, अचला शर्मा, प्रों.अमीन मुग़ल, सलीम अहमद ज़ुबैरी, परवेज़ आलम।

वकील होने के नाते, हुमा प्राइस ने दोनों कहानियों को लीगल कोण से परखा। परिमल दयाल का कहना था कि पाठक को कहानी और अधिक प्रभावित कर सकती थी यदि मज्जु मियां के बारे में केवल बताया न जाता बल्कि उन्हें कुछ करते हुए दिखाया जाता। वहीं डॉ. अचला शर्मा को लगा कि कहानी जिस प्रभावशाली ढंग से शुरू हुई, उसे अंत तक निभाया नहीं जा सका। कहानी बहुत जल्दबाज़ी में ख़त्म कर दी गई। पाठक की प्यास बुझ नहीं पाई।

प्रो. अमीन मुग़ल ने नजमा उसमान की कहानी को और मज्जु मियां के चरित्र को मज़ेदार बताया और कहा कि नजमा जी ने अपने चरित्र के केवल एक पहलू को उजागर किया है। मज्जु मियां के चरित्र के दूसरे पहलू और अन्दरूनी भावनाओं का चित्रण नहीं किया गया। मगर कहानी मज़ेदार बन पाई है।

गोष्ठी में हिन्दी-उर्दू के रिश्तों, आधुनिक कहानी, प्रगतिशील कहानी आदि पर भी जम कर बहस हुई। अंत में तेजेन्द्र शर्मा ने नजमा उसमान एवं दिव्या माथुर को धन्यवाद देते हुए सभी मेहमानों की बारिश के मौसम में कथा गोष्ठी में आने के लिये सराहना की।

मेहमानों ने जितना आनन्द कहानियों का उठाया उतना ही लुत्फ़ ज़कीया जी द्वारा सजाई गयी नाश्ते की मेज़ ने दिया। हिन्दी-उर्दू कहानी गोष्ठी के लिये त्यौहार के मौसम के अनुकूल मेज़ को क्रिसमिस के थीम से सजाया गया था। मेहमानों ने ज़कीया जी की मेज़बानी की खुले दिल से तारीफ की। कार्यक्रम के मेज़बान थे ज़कीया एवं सलीम ज़ुबैरी।
सुरेन्द्र कुमार

विश्व हिन्दी सचिवालय की त्रैमासिक पत्रिका

आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सन् 1975 में जब पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन मारीशस के प्रधान मंत्री माननीय. शिवसागर रामगुलाम की अध्यक्षता में नागपुर, भारत में हुआ था तभी तक एक विश्व हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ था। वैसे तो विश्व हिन्दी विशेषाँक व स्मारिकाएँ प्रकाशित हुईं, पर नियमित रूप से कोई विश्व हिन्दी पत्रिका प्रकाशित नहीं हुई।

पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन में डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने अपने अध्यक्षीय पद से मारीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखा था। फलस्वरूप भारत और मारीशस सरकार ने विश्व हिन्दी प्रेमियों व संस्थाओं के हित उस वाँछनीय सपने को साकार करने में आगे बढ़कर पहल की। अतएव 20 अगस्त 1999 को दोनों देशों ने विश्व हिन्दी सचिवालय को, परस्पर सहयोग से मारीशस में स्थापित करने के समझौते पर स्वीकृति की मोहर लगा दी। भारत के मानव संसाधन, विकास , विज्ञान एवँ प्रौद्यौगिकी तथा महासागर विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने मारीशस में 1 नवम्बर 2001 को विश्व हिन्दी सचिवालय की नींव डालने तथा शिलान्यास समारोह में भाग लेने के लिए पधारे थे।

शिलान्यास के बाद सचिवालय के निर्माण कार्य की योजना ,कार्यान्वित हुई। कार्यकारी बोर्ड की पहली बैठक 24 मई ,2007 को मारीशस में हुई और 11 फरवरी 2008 को भारत के विदेश मंत्री माननीय प्रणव मुकर्जी की अध्यक्षता में इस परिषद ने औपचारिक रूप से कार्य आारम्भ कर दिया है।

इसी बैठक में विश्व हिन्दी सचिवालय के विधिवत आरम्भ की औपचारिकताएँ समपन्न करने का निर्णय लिया गया। भारत के प्रधान मंत्री माननीय मन मोहन सिंह ने भी इसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुये अपने संदेश में कहा - "भारत सरकार मारीशस में स्थापित किये गये विश्व हिन्दी सचिवालय को प्रभावी बनाने के लिए मारीशस की सरकार के साथ मिलकर काम करती रहेगी।" इनके इस कथन से मारिशस में संस्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय को अधिक क्रियाशील होने का आधार मिल गया । वैसे तो इस संस्था द्वारा संगोष्ठियाँ, समय - समय पर होती रहती हैं पर इसके संरक्षण में एक विश्व हिंदी पत्रिका निकालने की उत्कठ इच्छा इसके स्थापना काल से ही बनी हुई थी। विश्व के अनेक देशों के हिन्दी प्रेमियों ने भी सचिवालय के तत्वाधान में एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित करने को अपनी उत्कंठा अभिव्यक्त की थी।

हर्ष की बात है कि विश्व हिन्दी सचिवालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका मार्च 2008 से निकलने लगी है। पत्रिका का शीर्षक है 'विश्व हिन्दी समाचार'। इसके प्रधान संपादक हैं विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव श्रीमती वीणुबाला अरुण और संपादक है डा. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र जी जो भारत सरकार द्वारा नियुक्त सचिवालय में उप- महासचिव के रूप में कार्यरत हैं। पत्रिका का आकार बड़ा है और अभी के लिए मात्र 12 पृष्ठों में निकलती है। प्रवेषाँक के सम्पादकीय में संपादिका महोदया ने लिखा है - " विश्व हिन्दी समाचार का प्रवेषाँक आपके हाथों में है। इसके माध्यम से हम हिन्दी के जागविक जागरण अभियान को सबल और समर्थ बनाने का सुसंगठित एवं विनम्र प्रयत्न करेंगे। हमारी अभिलाषा है कि यह एक ऐसा वातायन बने जहाँ से उभरते हुये हिन्दी सूर्य के आलोक की उसकी दीप्ति को पूर्णता और प्रखरता में देखा जा सके। इसके लिए आपका सहयोग हमें अपेक्षित है।"

प्रवेषाँक में विश्व हिन्दी सचिवालय की भूमिका , सचिवालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी, विश्व हिन्दी सम्मेलन , विश्व हिन्दी दिवस, विदेशों की हिन्दी पत्रिकाओं आदि पर आकर्षक लेख छपे हैं।

पत्रिका का दूसरा अँक जून 2008 में निकला। इसमें आयोजित संगोष्ठी का विवरण , हिन्दी की दशा और दिशा , नागरी लिपि अमेरिका में हिन्दी अधिवेशन,विश्व हिन्दी दिवस का विवरण ,पुस्तक समीक्षा , मारीशस में हिन्दी, पुस्तक लोकार्पण तथा सचिवालय की पत्रिका के प्रति पाठकों की प्रतिक्रियाएँ आदि प्रकाशित हुई हैं।

यह पत्रिका देश - विदेश के दूतावासों , साहित्यकारों , हिन्दी प्रचारक संस्थाओं के पास भेजी जाती है । पाठक पढ़कर अपने अमूल्य सुझाव पत्रिका को अधिक आकर्षक और कारगर बनाने के लिए दे रहे हैं। पाठकों का विचार है कि पत्रिका की पृष्ठ संख्या बढ़ाई जाये। ताकि अधिक से अधिक सामग्री से सुसज्जित होकर पत्रिका निकले और अधिक से अधिक लेखकों की रचनाओं को पत्रिका में स्थान मिल सके।

खुशी की बात है कि सचिवालय द्वारा हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन का श्रीगणेश तो हुआ। अभी के लिए हमें संतुष्ट होना चाहिए। फिर भी उम्मीदें तो बनी हैं कि आगे चलकर पत्रिका अधिक पृष्ठों में विविध विधाओं में भरपूर सृजनात्मक लेखन से विश्व हिन्दी मंच पर दीर्घकालिक अपनी सेवा अर्पित करती रहेगी।

इन्द्र देव भोला इन्द्रनाथ
मारीशस

आलेख

डॉ. राही मासूम रज़ा

डॉ. फीरोज़ अहमद

डॉ. राही मासूम रजा का जन्म 1 अगस्त 1927 को एक सम्पन्न एवं सुशिक्षित शिया परिवार में हुआ। उनके पिता गाजीपुर की जिला कचहरी में वकालत करते थे। राही की प्रारम्भिक शिक्षा गाजीपुर में हुई और उच्च शिक्षा के लिये वे अलीगढ़ भेज दिये गए जहाँ उन्होंने 1960 में एम.ए. की उपाधि विशेष सम्मान के साथ प्राप्त की। 1964 में उन्होंने अपने शोधप्रबन्ध "तिलिस्म-ए-होशरुबा" में चित्रित भारतीय जीवन का अध्ययन पर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने चार वर्षों तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य भी किया।

अलीगढ़ में रहते हुए ही राही ने अपने भीतर साम्यवादी दृष्टि कोण का विकास कर लिया था और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वे सदस्य भी हो गए थे। अपने व्यक्तित्व के इस निर्माण-काल में वे बड़े ही उत्साह से साम्यवादी सिद्धान्तों के द्वारा समाज के पिछड़ेपन को दूर करना चाहते थे और इसके लिए वे साढिय प्रयत्न भी करते रहे थे।

1968 से राही बम्बई में रहने लगे थे। वे अपनी साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ फिल्मों के लिए भी लिखते थे जो उनकी जीविका का प्रश्न बन गया था। राही स्पष्टतावादी व्यक्ति थे और अपने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हो गए थे। कलम के इस सिपाही का निधन 15 मार्च 1992 को हुआ।

राही का कृतित्त्व विविधताओं भरा रहा है। राही ने 1946 में लिखना आरंभ किया तथा उनका प्रथम उपन्यास मुहब्बत के सिवा 1950 में उर्दू में प्रकाशित हुआ। वे कवि भी थे और उनकी कविताएं "नया साल मौजे गुल में मौजे सबा", उर्दू में सर्वप्रथम 1954 में प्रकाशित हुईं। उनकी कविताओं का प्रथम संग्रह 'रक्स ए मैं उर्दू ' में प्रकाशित हुआ। परन्तु वे इसके पूर्व ही वे एक महाकाव्य अठारह सौ सत्तावन लिख चुके थे इसके बाद "छोटे आदमी की बड़ी कहानी" प्रकाशित हुई। उसी के बाद उनका बहुचर्चित उपन्यास "आधा गांव" 1966 में प्रकाशित हुआ जिससे राही का नाम उच्चकोटि के उपन्यासकारों में लिया जाने लगा। यह उपन्यास उत्तर प्रदेश के एक नगर गाजीपुर से लगभग ग्यारह मील दूर बसे गांव गंगोली के शिक्षा समाज की कहानी कहता है। राही नें स्वयं अपने इस उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा है कि "वह उपन्यास वास्तव में मेरा एक सफर था। मैं गाजीपुर की तलाश में निकला हूं लेकिन पहले मैं अपनी गंगोली में ठहरूंगा। अगर गंगोली की हकीकत पकड़ में आ गयी तो मैं गाजीपुर का एपिक लिखने का साहस करूंगा"।

राही मासूम रजा का दूसरा उपन्यास "हिम्मत जौनपुरी" मार्च 1969 में प्रकाशित हुआ। आधा गांव की तुलना में यह जीवन चरितात्मक उपन्यास बहुत ही छोटा है। हिम्मत जौनपुरी लेखक का बचपन का साथी था और लेखक का विचार है कि दोनों का जन्म एक ही दिन पहली अगस्त सन् सत्तईस को हुआ था।

उसी वर्ष राही का तीसरा उपन्यास "टोपी शुक्ला" प्रकाशित हुआ। इस राजनैतिक समस्या पर आधारित चरित प्रधान उपन्यास में भी उसी गांव के निवासी की जीवन गाथा पाई जाती है। राही इस उपन्यास के द्वारा यह बतलाते हैं कि सन् 1947 में भारत-पाकिस्तान के विभाजन का ऐसा कुप्रभाव पड़ा कि अब हिन्दुओं और मुसलमानों को मिलकर रहना अत्यन्त कठिन हो गया।

सन् 1970 में प्रकाशित राही के चौथे उपन्यास "ओस की बूंद" का आधार भी वही हिन्दू-मुस्लिम समस्या है। इस उपन्यास में पाकिस्तान के बनने के बाद जो सांप्रदायिक दंगे हुए उन्हीं का जीता-जागता चित्रण एक मुसलमान परिवार की कथा द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

सन् 1973 में राही का पांचवा उपन्यास "दिल एक सादा कागज" प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के रचना-काल तक सांप्रदायिक दंगे कम हो चुके थे। पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया गया था और भारत के हिन्दू तथा मुसलमान शान्तिपूर्वक जीवन बिताने लगे थे। इसलिए राही ने अपने उपन्यास का आधार बदल दिया। अब वे राजनैतिक समस्या प्रधान उपन्यासों को छोड़कर मूलत: सामाजिक विषयों की ओर उन्मुख हुए। इस उपन्यास में राही ने फिल्मी कहानीकारों के जीव-न की गतिविधियों आशा-निराशाओं एवं सफलता-असफलता का वास्तविक एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

सन् 1977 में प्रकाशित उपन्यास "सीन 75" का विषय भी फिल्मी संसार से लिया गया है। इस सामाजिक उपन्यास में बम्बई महानगर के उस बहुरंगी जीवन को विविध कोणों से देखने और उभारने का प्रयत्न किया गया है जिसका एक प्रमुख अंग फिल्मी जीवन भी है। विशेषकर इस उपन्यास में फिल्मी जगत से सम्बद्ध व्यक्तियों के जीवन की असफलताओं एवं उनके दुखमय अन्त का सजीव चित्रण किया गया है।

सन् 1978 में प्रकाशित राही मासूम रजा के सातवें उपन्यास "कटरा बी आर्जू" का आधार फिर से राजनैतिक समस्या हो गया है। इस उपन्यास के द्वारा लेखक यह बतलाना चाहते हैं कि इमरजेंसी के समय सरकारी अधिकारियों ने जनता को बहुत कष्ट पहुंचाया।

राही मासूम रजा की अन्य कृतियाँ है - मैं एक फेरी वाला, शीशे का मकां वाले, गरीबे शहर, क्रान्ति कथा (काव्य संग्रह), हिन्दी में सिनेमा और संस्कृति, लगता है बेकार गये हम, खुदा हाफिज कहने का मोड़ (निबन्ध संग्रह) साथ ही उनके उर्दू में सात कविता संग्रह भी प्रकाशित हैं। इन सबके अलावा राही ने फिल्मों के लिए लगभग तीन सौ पटकथा भी लिखा था। इन सबके अतिरिक्त राही ने दस-बारह कहानियां भी लिखी हैं। जब वो इलाहाबाद में थे तो अन्य नामों से रूमानी दुनिया के लिए पन्द्रह-बीस उपन्यास उर्दू में उन्होंने दूसरों के नाम से भी लिखा है। उनकी कविता की एक बानगी देखिये जिसे "मैं एक फेरी बाला" से साभार उद्धरित किया गया है:

मेरा नाम मुसलमानों जैसा है
मुझ को कत्ल करो और मेरे घर में आग लगा दो।
मेरे उस कमरे को लूटो
जिस में मेरी बयाज़ें जाग रही हैं
और मैं जिस में तुलसी की रामायण से सरगोशी कर के
कालिदास के मेघदूत से ये कहता हूँ
मेरा भी एक सन्देशा है

मेरा नाम मुसलमानों जैसा है
मुझको कत्ल करो और मेरे घर में आग लगा दो
लेकिन मेरी रग रग में गंगा का पानी दौड़ रहा है,
मेरे लहु से चुल्लु भर कर
महादेव के मूँह पर फैंको,
और उस जोगी से ये कह दो
महादेव! अपनी इस गंगा को वापस ले लो,
ये हम ज़लील तुर्कों के बदन में
गाढ़ा, गर्म लहु बन बन के दौड़ रही है।

राही जैसे लेखक कभी भुलाये नहीं जा सकते। उनकी रचनायें हमारी उस गंगा-जमनी संस्कृति की प्रतीक हैं जो वास्तविक हिन्दुस्तान की परिचायक है।

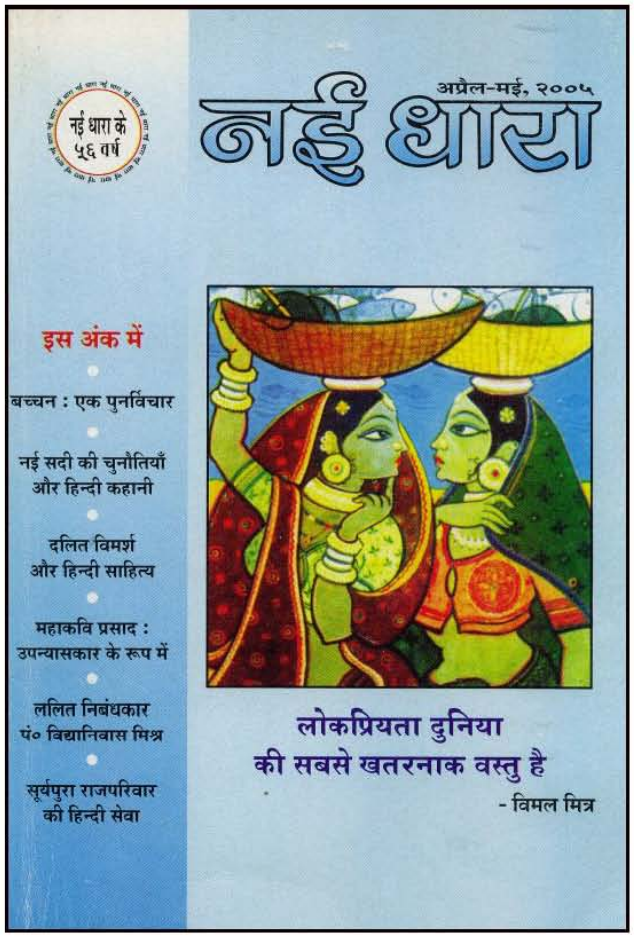

यात्रा

मुकेश निनामा (भारत)

शाम छ बजे मुझे कहा गया कि सुबह 5.30 को जागेश्वर (अल्मोड़ा) के लिए निकलना है, मुझे घूमने का शौक नहीं है इसलिए मैंने मना कर दिया।

सुबह दरवाजे पर दस्तक हुई, आवाज सुनकर मैंने दरवाजा खोला, सामने क्रिष्टा मेम खड़े थे, (जो कनाडा से हमें अंग्रेजी पढ़ाने के लिए आए हैं) उन्होंने मुझसे कहा कि "तुम तैयार हो" मुझे कुछ समझ नहीं आया, मैंने हाँ कर दी। वे बोले जल्दी से नाश्ता जहाँ किया जाता है वहाँ पर आ जाओ।

मुझे पता नहीं क्या सूझा मैं जल्दी से तैयार होने लगा और यथा-स्थान पहुँच गया और फिर हम सफर के लिए निकल गए। यह मेरी पहली यात्रा थी। करीब 40 किलोमीटर बढ़े होंगे कि मुझे अजीब सी घबराहट होने लगी, मैं चाहकर भी अपने आप पर काबू नहीं कर पा रहा था, मैंने गाड़ी को रूकवा दिया और जमीन पर बैठ गया। मेम साहब ने मुझसे पूछा, "तुम ठीक हो? तुम आगे ड्राइवर के पास बैठ जाओ, तुम्हें आराम मिलेगा।" मैंने मेम साहब को कहा, "मैं पीछे बैठूँगा"। मेम साहब ने कहा, "'पीछे ज्यादा परेशानी होगी, आगे चले जाओ।" पर फिर भी मैं पीछे बैठ गया। मैंने आगे इसलिए नहीं बैठना चाहा था क्योंकि वहाँ मेम साहब बैठी थी, उन्हें पीछे बैठाना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। हम आगे करीब पाँच किलोमीटर चले होंगे कि मैंने फिर गाड़ी रूकवा दी और मैंने उल्टी कर दी। मेम साहब ने उस समय ठीक कहा था, इसका एहसास मुझे हुआ पर मेरा उनके प्रति जो सम्मान है वो मुझे उनकी बात मानने से इंकार कर रहा था। मेम साहब ने फिर कहा आगे बैठ जाओ। मैं अब मना नहीं कर सका और आगे बैठ गया पर मेरा ध्यान मेम साहब पर ही था कि वो ठीक से बैठी हैं या नहीं।

हम लोग जागेश्वर पहुँच गए, वहाँ के बाजार में बहुत सी ज्योतिष सामग्री थी। मैं वहाँ खरीददारी करना चाहता था पर मेरे पास रूपए की कमी थी, मैं चाहकर भी कुछ खरीद नहीं पा रहा था। मैं प्रत्येक दुकान पर जा-जाकर सामग्री देख रहा था। मेम साहब मेरे पास आई और बोली, "क्या खरीद रहे हो?" मैंने कहा, "चेन देख रहा हूँ", मैंने चेन पकड़ रखी थी। मेम साहब ने तुरंत रूपए निकाले और दुकानदार को दे दिए, मैंने उनसे मना किया पर वे मानी नहीं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि सब क्या हो रहा है? हमने जागेश्वर के मंदिर देखे जो काफी पुराने थे लगभग आठवीं, नौंवी सदी के थे। पास ही संग्रहालय था, जिसमें काफी पुरानी मुर्तियाँ थीं। वहाँ सबसे दिलचस्प मूर्ति मुझे नौंवी सदी के राजा की मूर्ति लगी जो लगभग चार-पाँच फीट की थी और पूरी पीतल धातु की बनी हुई थी। मूर्ति की बनावट उस पर रंगों का चित्रण अपने आप में अनमोल था।

पास के होटल में हमने भोजन किया और हम एक आश्रम पहुँचे जो एकांत पहाड़ियों पर स्थित था। वहाँ राधा-कृष्ण का मंदिर था। आश्रम की स्थापना 1918 के लगभग की गई थी। यशोदा माई नाम की साधिका ने स्थापना की थी जिनकी समाधि भी आश्रम में स्थित है। आश्रम प्रांगण में गौशाला, सब्जियों के बगीचे, फल और फूलों के बगीचे स्थित थे।

बहुत प्रकार के सुंदर-सुंदर फूल उगा रखे थे। आश्रम को बहुत ही सूझबूझ के साथ व्यवस्थित किया गया था। वर्षाजल को संग्रहित करके जल पूर्ति की गई थी। गाय के गोबर से खाद बनाई जाती थी। शहद भी प्राप्त किया जाता था। पत्तियों से खाद बनाना, गाय के चारे को बनाने के लिए मशीनरी का प्रयोग किया जाता था। दूध से क्रीम निकालना, औजार रूम में भी सभी प्रकार के औजार उपलब्ध थे। कुल मिलाकर इतने सुनसान इलाके में हर वस्तु उपलब्ध थी। आश्रम में केवल दो साधक हैं जो छः मजदूरों की सहायता से इतना काम व्यवस्थित ढंग से संभालते थे। इतने कम लोगों द्वारा इतना कार्य करना वो भी सुव्यवस्थित ढंग से, काफी सोचनीय था। मुझे वहाँ से सीख मिली की काम की अधिकता से कभी भी नहीं घबराना चाहिए, यदि कार्य को व्यवस्थित ढंग से किया जाए तो कार्य की अधिकता का भ्रम समाप्त हो जाता है।

आश्रम में घूमकर हम मधुबन की ओर निकल गए। आते समय हम गोलु देवता के मंदिर रूके, सभी लोग चाय पीना चाहते थे। मैं मंदिर के दर्शन के लिए चला गया। मंदिर में प्रवेश किया तो ऐसा लगा मानो मैंने सब कुछ देख रखा है। अंदर गया तो चारों तरफ घंटियाँ टंगी थीं जिनकी संख्या हजारों में थी, फिर मुझे याद आया कि यह मंदिर मैंने टेलीवीज़न में देखा था। हर घंटी पर एक पेपर लगा था जिसमें भक्त अपनी मुरादें लिखते थे।

ऐसा माना जाता है कि घंटी पर अपनी मुराद देकर मंदिर पर बाँध दी जाए तो मुराद पूरी हो जाती है। मेरे पास घंटी तो नहीं थी परंतु मैंने मन में ही मुराद माँग ली।

इस सफर से मुझे बहुत सी सीख मिलीं जो इस प्रकार हैं -

(1) गुरू की आज्ञा (आदेश) का पालन करना चाहिए, क्योंकि वे जो कुछ कहते हैं हमारे हित में कहते हैं।

(2) कार्य की अधिकता से कभी भी नहीं घबराना चाहिए बल्कि कार्य की गहराई को जानना चाहिए।

(3) भगवान के प्रति आस्था ही सभी इच्छाओं की पूर्ति है।

(4) सदैव नई-नई जानकारियों को जानने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यह यात्रा मेरी यादगार यात्रा बन गई है। क्रिस्टा मेम साहब के साथ शायद यह मेरी पहली और आखिरी यात्रा थी क्योंकि जल्द ही वे अपने देश कनाडा चली जाएँगी केवल उनकी यादें और बातें हमारे पास होगी।

■ चित्रकाव्य-कार्यशाला

●

रामदेव बाबा हैं कहते, अपना भारत देश महान
सौ में एक ईमानदार है, बाकी सब हैं बेईमान
फिर भी चलती जाती देखो, भारत देश में सबकी गाड़ी
कोई कुर्सी पर मुड़वाता, कोई नीचे बैठ के दाढ़ी
जितने जिसके जेब में पैसे, उतना ऊंचा ढूंढ़े नाई
मेरे जैसा घिसे ब्लेड से, कर लेता हैं मुँह सफाई
कुछ भी कहें हम कुछ भी सुनें, है सबसे प्यारा हिन्दुस्तान
हम नादानों, बेईमानों में हैं बारबार आते भगवान!
सुरेन्द्र पाठक, मिसिसागा, कैनेडा

●

धनहीन होगा, मरण समान है
मस्ती के दिन बीत गये
बुढ़ापे ने आन दबोचा है।
धनहीन हुआ अब मैं,
रोगों से कैसे छुटकारा पाऊंगा।
वास्ती घई, कैनेडा

●

कैसे हो भैया?
कैसे हैं हमका बतायें
यह गरीबी की प्यास हम कैसे बुझायें
साथ में यह जानलेवा बुढ़ापा
अरसे से यह रोजगारी की परेशानियाँ
यह राहे जो हैं टेढ़ी मेढ़ी
इस मोड़ से उस मोड़ तक
हम कैसे जायें।
अनुराधा चंदर, अमेरिका

●

आओ बाबा बैठो
बना दूँ तेरी दाढी
ऐसे चिकने गाल होंगे
सरपट दौडे जिसपर गाडी
अमित कुमार सिंह

■ चित्रकाव्य-कार्यशाला

इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी भाव आयें उन्हें अधिक से अधिक छः पंक्तियों के अन्दर व्यक्त करके भेजें।

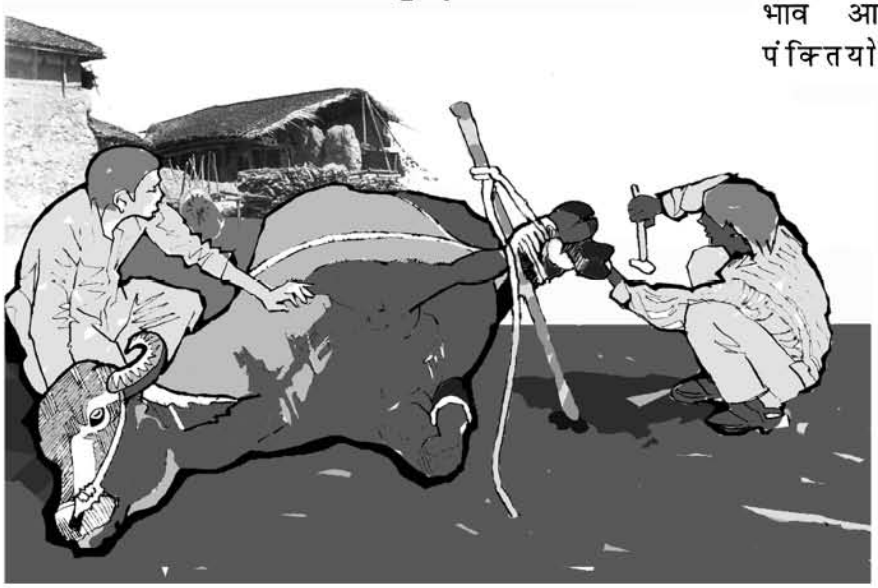

"अधूरी मुस्कान" - अवनीश गुप्ता

समीक्षक -श्री ओमनारायण सक्सेना

भाषा वचन एवं लिखित रूपों में भावों और विचारों को अधिकाधिक संप्रेषणीय बनाती है। संप्रेषण की दो शैलियाँ हैं - गद्य एवं काव्य, और इस कविता संग्रह में यह देखना अत्यन्त सुखद है कि गहन तकनीकी शिक्षा का व्यक्ति हिन्दी भाषा की दोनों विधाओं में कलिष्टता एवं सुदृढ़ता समेटे हुए है। आपकी कविताओं में जीवन के विभिन्न आयामों से प्राप्त अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कई कविताओं के भाव पाठक को अपने ही जीवन की घटनाओं को दोबारा सोचने पर मजबूर करते हैं या फिर उसे अपने ही घर-परिवार, मित्र किसी की सहज ही याद दिला जाते हैं. "गुडिया हूँ मैं" "नारी", "आजकल की बातें" इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं. साथ ही साथ यह देखना भी अत्यन्त सु:खद है कि किस तरह कवि ने हृदय की गहराइयों में उमड़ती अनेक भावनाओं को सरलता से पाठक को बिना शब्दजाल में उलझाये कविता का रूप दिया है।
"माँ घर से दूर", "तुम्हारे लिये","प्यार किया है" इत्यादि इसके सजीव उदाहरण हैं। यद्यपि कुछ कविताओं जैसे "संसर्ग परिणति", "कलियुग के राम", "अधिकल्पित संकल्पना" इत्यादि में निहित मूल संवेदना एवं भाव तक पहुँचने के लिये बार बार पढ़ा जाना चाहिए।

आपकी कविताओं में लगभग हर उस भावना का समावेश है जो आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में अप्रासंगिक हो रही है. मानव मन का स्वभाव ही है कि वह सौंदर्य, माधुर्य, भावनात्मक विषयों पर सहज ही आकृष्ट होता है, आपकी कवितायें इन सभी मनोवृत्तियों की पूर्ति करती हैं. आपकी कवितायें जहाँ मानव प्रेम, त्याग, देश-प्रेम, स्नेह जैसी सदवृत्तियों को जगाती हैं. वहीं दूसरी ओर जीवन के अन्य पहलुओं जैसे असफलताओं से प्राप्त दु:ख, किसी प्रिय का शत्रुभाव, यादों की चोट जैसे कई विषयों पर बहुत ही सहजता से और सटीक टिप्पणी करतीं हैं।

संग्रह की गज़लें भी नई उम्मीद जगाती हैं. यद्यपि कहीं कहीं ग़ज़ल के नियमों का उल्लंघन है, पर एक सच्चे गज़लकार की भांति उन्होंने आमुख में अपनी इस बात को स्पष्ट किया है कि ख्याल को तवज्जो देने के लिए उन्होंने ग़ज़ल के व्याकरण में ढील छोड़ दी है। पर शायद ही कोई गज़लकार ऐसा हो जिसने कभी भी ग़ज़ल की सीमाओं का उल्लंघन न किया हो. ग़ज़ल के दर्शन-शास्त्र को समझने वाले जानते हैं कि एक उम्दा ख्याल को कसा हुआ शेर बनाने की कला यूँ ही नहीं आ जाती। वक्त के साथ कवि के अनुभव बेशक इन संभावनाओं को साकार करेंगे.

कवि की हिन्दी-उर्दू के शब्दों को एक ही वाक्य में खूबसूरती से पिरो देने की कला अवध की गंगा-जमुनी तहजीब की याद दिलाती है. कवि अवध की इसी परम्परा को आगे बढ़ा रहें हैं. पुस्तक के कई शेर जैसे कि "गम को समझना कुछ और है, गम को महसूस करना कुछ और" एक लंबा फासला तय करने की कूवत रखते हैं.

निष्कर्षत: यह काव्य संग्रह एक अत्यन्त युवा कवि द्वारा उसकी रचनात्मकता, संवेदना, और उसकी जागरूक सोच का प्रशंसनीय परिणाम है। नि:संदेह, उपभोक्तावाद, विकास की चकाचौंध में खोकर अपनी भावनाओं को जरूरतों के हिसाब से 'एडजस्ट' करने वाले शहरी युवाओं के लिए 'अवनीश' एक आदर्श बनकर उभर रहें हैं। ज़िन्दगी की भागमभाग, तकनीक और विज्ञान के बोलबाले की इस दुनिया में एक कोने में सिमटते हुए हिन्दी काव्य-साहित्य को जिन्दा रखने के लिए आज के युवाओं को 'महसूस' करने की हिदायत दे रही है - "अधूरी मुस्कान"।

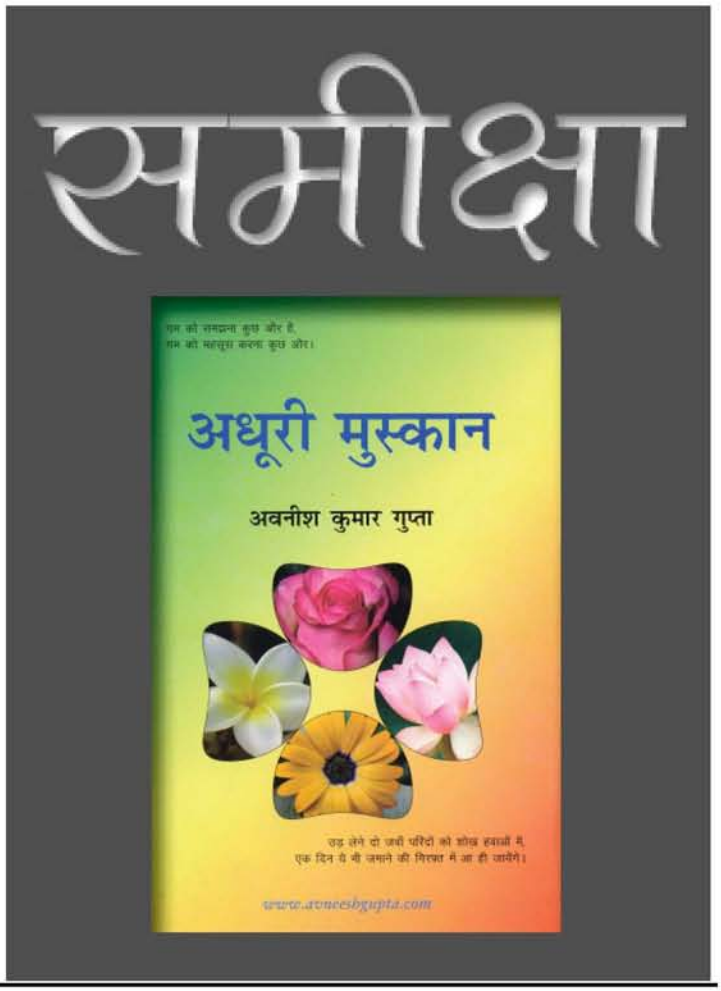

कविता

संस्कार

अनुराधा चन्दर (अमेरिका)

सच्चा, बड़ा , मन हो जिसका,
वही उदार कहलाता है।
सद्चरित्र की चरित्रता पाकर
अहंकार मर जाता है।
अपना बड़प्पन जो करता हमेशा
सभ्य वही कहलाता है-

अच्छा आचरण हो जिसका वही,
सदगुरु कहलाता है
अपने संस्कार ही इन्सान के गुण अवगुण बन जाते हैं
यही संस्कार ही मानव से कुछ , बहुत कुछ करवाते हैं
इसी संस्कार से उसकी असलियत सामने आती है
उसके सच और झूठ की पहचान
यही संस्कार बनाती है।

व्यंग्य

परमेश्वर की अदालत में जानवरों का मुकद्दमा आदमी के विरूद्ध

एक व्यंग्यात्मक ललित लेख
- प्रो. ओम कुमार आर्य- भारत

सपने भी क्या कमाल की चीज है, न हींग लगती है न फिटकरी और रंग चोखा ही चोखा आता है। दुनिया भर के अजूबे और दिलचस्प खेल हम सपनों में देख लेते हैं और पैसा-धेला ए क भी नहीं देना पड़ता। जब स्वप्नावस्था में मन अपना जादुई पिटारा खोलकर बैठता है तो ढेर सारे रंग-बिरंगे नज़ारे हम मुफत में ही देख लेते हैं और दुनिया भर की सैर भी अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही कर लेते हैं।

कुछ ऐसा ही दिल फरेब अनुभव मुझे कुछ दिन पहले स्वप्नलोक में विचरण करते हुआ। सपनों की दुनिया का काल्पनिक वायुयान मुझे बिठाकर आकाश की अनंत ऊँचाईयों की ओर ले उड़ा और आनन-फानन में मुझे वहाँ जा उतारा जहाँ दुनिया के कर्ता-धर्ता और संहर्ता सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, न्यायाधीश परमपिता परमेश्वर का दरबार लगा हुआ था। वास्तव में उस दिन परमेश्वर की अदालत लगी हुई थी और एक विचित्र मुकद्दमा उनके हुजूर में पेश किया हुआ था। वादी पक्ष था जानवरों का जिसमें सभी थलचर, जलचर, नभचर पार्टी थे तथा आदमजादों, (मनुष्य समाज) को प्रतिवादी बनाया हुआ था। मुकद्दमा अपनी तरह का अब तक का सबसे निराला था और जानवरों ने बहुत ही मौलिक मुद्दे मानव समाज के विरूद्ध(अपने अभियोग-पत्र में अंकित कर रखे थे और अपने पक्ष में बड़े आकाट्य तर्क दे रखे थे, मनुष्य समाज को बड़ी चतुराई से घेर रखा था।"

मुकद्दमें की पैरवी थलचरों की ओर से बुद्धिमान अनुभवी हाथी, जलचरों की ओर से डॉलफिन, मछली और नभचरों की ओर से हँस कर रहा था, एक दूसरे से उनका पूरा तालमेल था और बाकी जानवर उनकी मदद कर रहे थे। मनुष्यों की आरे से, मैं स्वप्न में अच्छी तरह पहचान तो नहीं सका, पर मेरा अनुमान है किसी उन्नत देश की सुप्रीम कोर्ट के पांच-छः एडवोकेट पैरवी कर रहे थे। उनके चेहरे पर झलकती चालाकी और घाघपने के भाव बतारहे थे कि वे अपने खेल के दांव-पेंच से बखूबी परिचित थे और बहुत ही शातिर दिमाग पेशेवर खिलाड़ी थे। लेकिन जानवरों के मुद्दे और दलीलें उन पर भारी पड़ रहे थे।

सुनकर जितना कि मैं याद रख सका उसकी बानगी का मुलाहिजा फरमाइए -

जानवरों के वकील कह रहे थे - दुनिया के माई बाप, दयालु, कृपालु भगवन् आदमजादों की जोर जबरदस्ती और धक्केशाही देखिए कि वे हमारे सबसे समझदार, वफादार, दिलेर हाथी-समाज पर आरोप लगाते हैं कि 'हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और' परवरदिगार यह हाथी-जाति के साथ सरासर अन्याय है क्योंकि इनके तो खाने और दिखाने के और' अलग-अलग, पर मनुष्य समाज के दांतों का तो पता भी नहीं चल पाता कि खाने के और नोच खाने कौन से हैं। खाना भी उन्हीं से खाता है, मौका देखकर साथी इन्सानों को भी उन्हीं से नोच डालता है और हम निर्दोष जानवरों को भी इन्हीं दांतों से मुख के रास्ते पेट रूपी कब्रगाह में पहुंचा देता है। इसलिये दांतों को लेकर हाथी जाति पर आक्षेप करना इन्सान की ज़्यादती है, इनको ऐसा करने से रोका जाए।

आदमियों के वकीलों ने 'ऑबजैक्शन मी लार्ड' कहकर कुछ कहना चाहा, लेकिन परमेश्वर ने उनको अनसुना कर दिया और जानवरों से कहा प्रोसीड फर्दर ; आगे कहो-

जानवर बोले हुजूर आदमी सर्पजाति को 'आस्तीन का सांप' कहकर बदनाम करते हैं। जबकि हकीकत यह है कि सांप कभी छुपकर किसी को नहीं काटता और यदि कभी काटता भी है तो उसे आत्मरक्षा में आप द्वारा दिये गये हथियार का प्रयोग करना पड़ता है और यदि भगवन् आप आदमी के कारनामे देखें तो आप भी शर्मिन्दा महसूस करेंगे कि जिसको कायनात का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया था आज उसकी हालत क्या हो गई है। आदमी की राजनैतिक करतूतों पर आप दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि वह खुद आस्तीन का सांप, टोपी का बिच्छू, पैंट पाजामे का कोबरा और न जाने क्या-क्या है। वह हमें बदनाम क्यों करता है जबकि उसकी रग-रग में विष है। 'तोताचश्म' कहकर वह हमारी विश्वासनीयता पर अंगुलि उठाता है, अपनी तरफ देखता ही नहीं। उसके कारनामों को देखते हुए तो हुजूर, विश्वास, निष्ठा, मैत्री, वफादारी जैसे पवित्र शब्दों को वह कभी जुबान पर भी न लाये ऐसा आदेश आपको तुरंत प्रभाव से देना चाहिए।

कुछ आदमियों ने और उनके वकीलों ने अदालत की कार्यवाही में बाधा डालने का प्रयास किया किंतु परमेश्वर ने आर्डर, आर्डर कहकर उनको चुप करवा दिया और सख्त हिदायत भी दे डाली कि शांत रहें वरना अदालत से बाहर कर दिये जायेंगे क्योंकि यह ईश्वरीय अदालत है आदमियों की सब्जी मंडी या एशिया के किसी बड़े देश की पार्लियामेंट अथवा किसी प्रांत की विधान सभा नहीं है। आदमी सब शांत हो गये और फिर जानवरों ने अपना पक्ष रखा।

जानवर बोले, परवरदिगार, मनुष्य जाति हमारे गिरगिट भाईयों पर भी रंग बदलते रहने का आरोप लगाती है। अपने गिरेबान में झांक कर नहीं देखती। आदमी क्यों भूल जाता है कि पिछले सालों में कितने ही राजनेताओं ने एक-एक दिन में इतनी बार पार्टियाँ बदली हैं जितनी बार दिन में कपड़े भी नहीं बदले जाते हैं। मी लॉर्ड, बात को लंबी न करते हुए हम गुजारिश करते हैं कि प्रतिवादी पक्ष को हम थलचरों, जलचरों और नभचरों के प्रति अपना रवैया तुरंत बदलना चाहिए, हमारे लिये किसी भी असभ्य, अपमानजनक शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हम भी आपकी ही प्रिय सन्तानें हैं, हमने बहुत दिनों तक आदमी की दादागिरी, धौंस तथा कथित श्रेष्ठता को जैसे-तैसे बर्दाश्त किया है अब और ज्यादा यह खेल नहीं चलने का। हुजूर हमें न्याय चाहिये, इन्साफ चाहिये, आदमी के जुल्मों और जोर-जबरदस्ती पर तुरंत प्रभावी रोक लगानी चाहिए।

हाथी चिंघाड़ने लगे, शेर दहाड़ने लगे, गधे रेंकने लगे, परिन्दे भी अपनी-अपनी बोलियाँ जोर-जोर से बोलने लगे, मेंढक, कछुए, मछलियों ने भी अपनी-अपनी आवाजें तेज कर दीं, आदमी सब एक कोने में दुबक गये।

इसी शोर शराबे और कोलाहल से मेरी भी नींद डिस्टर्ब हो गई, स्वप्न टूट गया और मैं हड़बड़ा कर उठा। पछतावा यही रहा कि मैं अदालत का फैसला नहीं सुन सका। हो सकता है उस दिन अदालत भी बिना फैसला सुनाये उठ गई हो। मुझे इंतजार है उस रात की नींद और सपने का जब इस सपने का शेष भाग मैं देख सकूंगा और ईश्वरीय अदालत का फैसला सुन सकूंगा। मेरा अनुमान है कि ईश्वर जरूर जानवरों पर दया करेंगे और इन्सान की दादागिरी पर रोक लगायेंगे पर चूंकि मामला माननीय कोर्ट के विचाराधीन है इसलिये हम कोई टिप्पणी नहीं कर सकते।

नव वर्ष आप सब के लिए मंगलमय, कल्याणकारी हो !

"हिन्दी चेतना" के पाठकों को नव वर्ष की ढेरों शुभकामनाएँ

संपादकीय मण्डल
हिन्दी चेतना
अमेरिका, कैनेडा की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका

कविता

गली

रजनी भार्गव (अमेरिका)

इस कोने से उस कोने तक
इस मकान से उस चौराहे तक
हर रोज बाँग लगाती है ज़िन्दगी
गली में कस्बे सी समाती है जिन्दगी
धूप के साथ सरकती चारपाइयाँ
खोमचे वालों की घूमती रेढ़ियाँ,
भुनती शकरकंदी, चने और मक्के,
मौहल्ले के अधपके किस्से और
सिलाइयों में बुनती कहानियाँ,
धूप हर घर में झाँक जाती है,
दस्तक दे कर सब को बाहर बुला लेती है,
साँझ तारों को बुला लाती है
रात भोर का हाथ थामें
गली में यूँ ही फेरी लगाती है।
इस ठिये से उस ठिये तक,
यूँ तो बहुत चली है ज़िन्दगी
फिर भी लगता है
दो पल में ही गुजर गई ज़िन्दगी

एक और भूखा पेट

त्रिलोकी नाथ टंडन (भारत)

आशाओं की
मारीचिका में
दिन भर - भटक कर
जीवन की
सार्थकता पर लगे
प्रश्नचिन्ह में
अटक कर
थके शरीर
निराश मन
दो युवा भूखे
जब
पेट की भूख को
यौन भूख से
भुलाने की कोशिश में
एक दूजे में
समा जाते हैं,
बेचारे !
अनचाहे
अनजाने में
एक और
भूखा पेट
जन्मा जाते हैं।

जिज्ञासा

शशि पाधा (अमेरिका)

क्षितिज के उस पार क्या है?
जानने की चाह है!
अम्बर का विस्तार क्या है?
जानने की चाह है!

रोज़ सुबह उगता सूरज
किरणों के जाल बिछाए,
शाम ढले चुपचाप अकेला
सागर में छिप जाए।
सागर से अपार क्या है?
जानने की चाह है!

पंख पसारे उड़ते पंछी
दिशा-दिशा मंडराएं,
किस अनंत को ढूँढे फिरते
धरती पर न आएँ।
अनंत का विस्तार क्या है?
जानने की चाह है!

हँसती-गाती आती मधुऋतु
शाख शाख हरियाए,
पतझड़ क्यों आता निर्मोही
पात-पात मुरझाए।
मधुबन का श्रृंगार क्या है?
जानने की चाह है!

वीणा की तारों में झंकृत
सात सुरों के गान मिले,
बगिया के फूलों के रंग में
सुख सपनों के प्राण छिपे
सपनों का संसार क्या है?
जानने की चाह है!

कोई न आया इस जगत में
अजर अमर वरदान लिये
कर्मों की गठरी धर सर पर
जीवन के दिन चार जिए

मुक्ति का आधार क्या है?
जानने की चाह है!
क्षितिज के उस पार क्या है?
जानने की चाह है!

उम्मीदें

साहिल लखनवी

बात सीधी सी है
इसमे कोई पेंच नहीं
लोग अमूमन भले हुआ करते हैं
बे-ख़ुलूस - औ - बदज़ौक़
तो हो सकते हैं
पर बुरे नहीं हुआ करते
ये तमाम उम्मीदें
जो तुम लोगों से लगा के बैठे हो
ये नउम्मीदी को जन्म देंगी
और फिर अच्छे भले लोग
बुरे हो जाएँगे यक़ायक़
हाँ,
लोग बे -शऊर तो हो सकते हैं
पर बुरे नहीं हुआ करते
बात सीधी सी है
इसमें कोई पेंच नहीं
लोग अमूमन भले ही हुआ करते हैं

कलाकार -अमित सिंह (भारत)

आवाज़

कनिका सक्सेना (कैनेडा)

कहते हैं, कलम में बड़ी ताक़त होती है, परन्तु आजकल आतंकवादियों की नफरत की गोली के सामने कलम की ताकत ढीली पड़ती जा रही है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि आवाम् ने घुटने टेक दिये हैं। हम सबमें ऊर्जा और लड़ने की शक्ति आतंकवादियों के खिलाफ आज भी है।

मुम्बई में हुये आतंकवादियों के कहर से कोई अछूता नहीं है। इस शर्मनाक हादसे ने हम सबको झिझोड़ कर रख दिया । धर्म के नाम पर आतंकवादी नवयुवकों को गलत राह पर चल-ने को उकसा रहे हैं और अपनी तादात बढ़ाते जा रहे हैं। कोई धर्म ग्रन्थ हमें यह नहीं सिखाता कि निर्दोष और बेबस लोगों को मारो,बल्कि ऐसा करने वाले अपने को अल्लाह , भगवान ,जीसस से अलग कर रहे हैं। हर धर्म अपने धर्म के साथ दूसरे धर्म को इज्जत देना सिखाता है, और एकता का संदेश देता है। गीता हो या गुरुगृंन्थ साहिब, या कुरान या बाइबिल, हर धर्म का यही सार है।

यदि कोई इन्सान किसी को दर्द देता है तो उस दर्द और दुख से वह भी अछूता नहीं रहता ।
अपने निजी स्वार्थ के लिए , भविष्य को मज़हब के नाम पर भटकाना कहाँ की चतुराई है। जरूरत है हम सबको जागने की , एक जुट होने की और आतंकवाद के खिलाफ मिलकर आवाज़ उठाने की , वरना इसी तरह माताओं की कोख सूनी होती जायेगी। घरों का चैन और अमन मिट ता जायेगा और अपनों के चेहरे याद बन दीवारों में समा जायेंगे।
अत: अब हम सब नये वर्ष में एक जुट होकर एक नया संकल्प करें और गर्व से कहें -

" नव वर्ष में एकता का स्पर्श दिया ,
प्यासी माँ को प्यार का दरिया दिया
हमने मिलकर विश्व को नया आसमाँ दिया।"

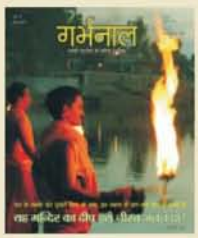

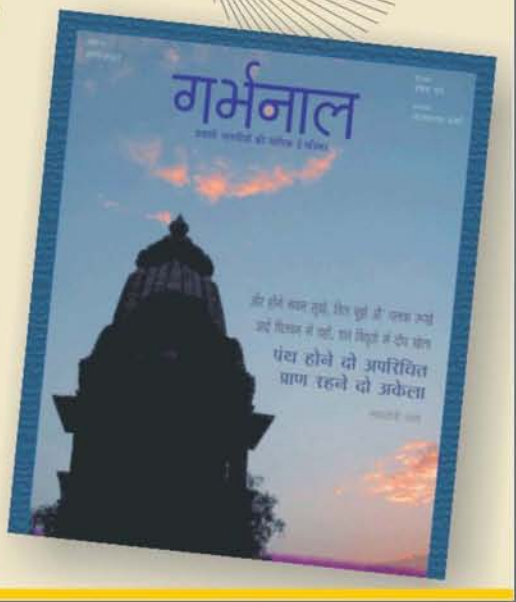

व्यंग्य

आत्मरक्षा का अधिकार

नरेन्द्र कोहली (भारत)

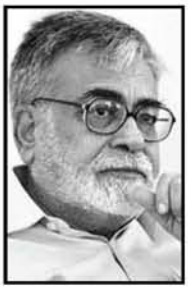

वह आया तो परम प्रसन्न दिखाई पड़ रहा था।

"क्या हो गया ?" मैंने पूछा ही लिया।

"ओबामा ने कहा है कि भारत को आत्मरक्षा का पूर्ण अधिकार है।"

मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। इतनी सी बात के लिए इन्हें ओबामा के समर्थन और प्रमाणपत्र की आवश्यकता क्यों पड़ी ? एक चींटी भी जानती है कि उसे आत्मरक्षा का अधिकार है और वह उस अधिकार का प्रयोग भी करती है, चाहे उसके पश्चात् वह मसल ही क्यों न दी जाए। फिर भारत की आत्मरक्षा के बीच ओबामा कहां से आ जाता है।

"उससे हमको क्या फर्क पड़ेगा ?" मैंने पूछ ही लिया।

"हमको ?" उसने चकित होकर मेरी ओर देखा, "इ तना भी नहीं समझते तुम ? अब हम पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी शिविरों पर आक्रमण कर सकेंगे। उन्हें पूर्णत: ध्वस्त कर सकेंगे।..."

वह फूला नहीं समा रहा था। "

तो अब तक हमको किसने रोक रखा था ?" मैंने पूछा, "1948 में कश्मीर में सेना भेजने के लिए हमें किसी से पूछना पड़ा था क्या ? 1962 में हमने किसी से पूछा कि हम जा कर मरें या नहीं ? 1965 में हमारी सेनाएं अमरीका से पूछ कर जूझी थीं क्या ? 1971 में हम प
पाकिस्तान के टुकड़े करने के लिए किसी की अनुमति ले कर लड़े थे?"

"नहीं । पर सीमा पार कर पाकिस्तान पर आक्रमण करने से तो अमरीका हमको मना करता रहा है न ।" वह बोला, "वह महाशक्ति है। यदि हम उसकी बात नहीं मानेंगे, तो वह हमारा विरोधी हो जाएगा। अब स्थिति बदल गई है...।"

वह इतना प्रसन्न था कि मुझे लगा कि वह अभी कोई बहुत मधुर सा गीत गा उठेगा। संभव है कि नाचने भी लगे। ....

अगले दिन फिर उससे भेंट हो गई। आज उसका रूप एकदम बदला हुआ था। वह रुष्ट ही नहीं, कुछ कुछ क्रुद्ध भी दिखाई दे रहा था।

"क्या हुआ ?"

"इसराइल को देखो तो...।"

"क्या हुआ ?"

"जैसे तुमको नहीं मालूम।" वह मुंह बिसोर रहा था। "मालूम तो है।" मैंने कहा, "पर तुम्हारा मूड क्यों बिगड़ा हुआ है ?"

"वह ग़ाज़ा पट्टी पर बम बरसा रहा है।"

"जहां तक मैं जानता हूं, वह हमास के उन आतंकी शिविरों को नष्ट कर रहा है, जहां से उसपर आतंकवादी आक्रमण किए जाते रहे हैं।"

"हमास ने क्या किया है ?"

"इसराइल पर राकेट बरसाए हैं। यह बात उनके राष्ट्रपति ने भी स्वीकार की है।" मैंने कहा।

उसकी मुद्रा एकदम विकृत हो उठी, "किसी देश की सीमा पार कर उसपर बम बरसाना कहां की मानवता है ?"

"और सीमा पार राकेट बरसाना ?"

'"हमारी पार्टी ने इसराइल की कठोर शब्दों में भर्त्सना की है।" उसने मेरी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, " हमारी सरकार संयुक्त राष्ट्र में भी उसका विरोध करेगी।" "
इसराइल को आत्मरक्षा का अधिकार नहीं है क्या ?" मैंने पूछा।

"है। पर यह कोई तरीका है ?" वह अब भी उसी प्रकार क्रुद्ध था, "इसके लिए उसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए, कम है।"

"तुम इसराइल की भर्त्सना करोगे तो सीमा पार जाकर पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी शिविरों को नष्ट करने का अधिकार कैसे मांगोगे ?"

"अधिकार मांग ही तो रहे हैं।" वह बोला, "हम कौन सा सचमुच आक्रमण करने जा रहे हैं।"

"उस अधिकार का लाभ क्या, जिसका न्यायसंगत आवश्यकता होने पर भी प्रयोग न किया जाए ?"

"वह राजनीति है। तुम्हारी समझ में नहीं आएगी।" वह बोला और रूठा सा आगे बढ़ गया।

आलेख

शिष्टाचार - अभिवादनः

प्रो. ओंकार द्विवेदी

इसके प्रकार ,कब, किसे व कैसे करें?

अभिवादन करने के कई प्रकार होते हैं व इसके करने के ढंग भी अनेक होते हैं। मुख्यतः चार प्रकार से अभिवादन किया जाता है : नित्य ,नैमित्तिक , काल्य व विशिष्ट। नित्य अभिवादन उसे कहते है. जो प्रतिदिन या रात्रि को अपने सगे संबन्धियों या मित्रों के साथ किया जाता है। जैसे प्रातः काल शैय्या से उठकर , अपने पास वाले व्यक्ति को नमस्ते या नमस्कार कहना। पर यदि घर में गुरुजन (जैसे माता - पिता , बड़े भाई - भाभी, बहिन या अन्य रिश्तेदार) हों तो उन्हें प्रणाम कहना चाहिए। वर्तमान स्थिति को देखते हुये गुड मांरनिग या गुड नाइट भी कहा जा सकता है यदि प्रणाम, नमस्कार या नमस्ते कहने मैं कुछ संकोच लगे। नैमित्तिक अभिवादनः उसे कहते हैं जो किसी विशेष प्रयोजन के समय किया जाता है , जैसे जब कोई किसी यात्रा में जा रहा हो, यात्रा के बाद मिलने पर , शादी - विवाह के अवसर पर , किसी प्रकार के विशिष्ट कार्यक्रम पर , आदि अवसरों पर। ऐसे समय पे अभिवादन करने का ढंग दूसरा होता है क्योंकि कहने में केवल नमस्ते या नमस्कार कहना पर्याप्त नहीं होता बल्कि कुछ आत्मीयता से भरे शब्द, उस कार्यक्रम की सफलता के विषय में अच्छी बातें , इत्यादि कहना चाहिये। बोलते समय आदर, सम्मान व प्यार झलकना चाहिए। यह अवसर शीघ्रता करने का नहीं होता, कुछ समय लगाना चहिए, व धैर्य से बातों का आ-दान - प्रदान करना चाहिए। काल्य अभिवादनः उसे कहते हैं जब कोई विशिष्ट कार्य या आकाँक्षा अभिलाषा पूरी होने पर किसी देव स्थान , मंदिर , नदी के किनारे , या किसी वृक्ष के नीचे पूजा करते समय किया जाता है। ऐसे विशिष्ट अवसर परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर , कोर्ट केस जीत जाने पर , लम्बी या कठिन बीमारी से ठीक हो जाने पर, यो कोई मन्नत या मान्यता पूरी होने आदि होते हैं। परन्तु कभी- कभी किसी विशेष व्यक्ति के द्वारा जब अपना कठिन काम बन जाता है तो उस अवसर पर काल्य अभिवादन करना चाहिए। ऐसे अवसरों पर पूर्णतया सम्मान देते हुये , मीठे वचन बोलते हुये , हृदय से आभार व कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिए व यदि धार्मिक कार्य करना हो तो किसी गुरू , पुरोहित या पंडित की सहायता लेनी चाहिए व मन्नत जो भी मानी गयी हो उसे पूरी करें। विशिष्ट अभिवादनः कई बार ऐसे सामाजिक कार्यक्रम होते हैं जहाँ एक (या कई) व्यक्ति विशेष को सम्मानित किया जाता है।

ऐसे अवसरों पर फूलमाला पहिनाने के बाद हाथ जोड़कर नमस्ते या प्रणाम करना चाहिए। व गले मिलने का प्रयत्न उस समय तक न करे जब तक वह विशिष्ट या सम्मानित व्यक्ति स्वयम् ही पहल न करे। ऐसे अवसर पर यदि शाल पहिनाना हो तो सम्मानित व्यक्ति के पास जाकर , आदर से शाल पहिनाये व नमस्ते करे। अन्य धर्म या वर्ण वाले व्यक्तियों से अभिवादन : भारत में संसार के सब धर्म मानने वाले व्यक्ति रहते हैं। इसलिए यह उचित है कि जब आप दूसरे धर्म या वर्ण वाले व्यक्तियों से मिलें तो उनसे सलाम , सतश्रीअकाल, , हेलो, आदि कहना न भूलें। ऐसा करने से हमारी उदारता व सहिष्णुता का परिचय मिलता है व दूसरे व्यक्ति को अच्छा लगता है। अभिवादन का प्रत्युत्तर कैसे दिया जाये? पंचतंत्र के मित्र सम्प्राप्ति खंण्ड में लिखा है : *एह्यागच्छ , समश्वस , आसनमिदं , कस्माच्चिराद् दृष्यते? कावार्ता ,न्वति दुर्बलडसि, कुशलं प्रसन्नोअस्मि ते*। अर्थात्: " आइये , यहाँ बैठिये । आप तो बहुत दिनों के बाद आये हैं। क्या समाचार है? वैसे आप कुछ दुर्बल लग रहे हैं। घर, परिवार में सब कुशल मंगल तो है? आपके आने से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। यही स्वागत करने का परम् सिद्धान्त व मुख्य नियम है। और जब कोई मेहमान घर आये तो बिना उसके बोले ही, आपको इस प्रकार से कहते हुये स्वागत करना चाहिये व बैठने का आसन देना चाहिये। नमस्ते, नमस्कार व प्रणाम में क्या अन्तर है? किसी भी प्रकार के अभिवादन करते समय , दूसरे व्यक्ति के प्रति स्नेह , आदर, व उचित सम्-मान दिखाना चाहिये। नमस्ते अपने से बराबर वाले, समान वृ त्ति या व्यवसााय वालों से या, अनजाने , अपरचित व्यक्तियों से किया जाता है। नमस्कार अधिकतर मंदिरों में देव मूर्तियों के प्रति, सन्यासी , विद्वान या पंडित के प्रति करना चाहिये। नमस्कार उन व्यक्तियों से भी किया जाता है जिनसे आप समादर पाने वाले हों या मान सम्मान में बराबर का स्थान हो। प्रणाम किसे करना चाहिये? प्रणाम दो प्रकार से किया जाता है । एक तो वह जिसमें आदरणीय व्यक्ति के प्रति झुककर उनके पैर छुये जाते हैं व वे हाथ या तो सिर से छुलाते हैं या फिर छाती से। पैर छूते समय दाहिने हाथ का उपयोग करना चहिये। दूसरा प्रणाम दण्ड प्रणाम कहलाता है जिसमें प्रणाम करने वाला व्यक्ति पूरी तरह से धरती पर लेट जाता है वह जिस व्यक्ति को यह सम्मान देता है उसकी ओर सिर करके , दोनो हाथों को लम्बा करके पैर छुये जाते हैं। अधिकाँशतः पैर छूने का प्रयत्न करना होता है , पैर पकड़े नहीं जाते। दण्ड प्रणाम अब वर्तमान काल में बहुत ही कम लोग करते हैं।

पुरातनकाल में दण्ड प्रणाम गुरुजन , सन्यासी , या देवालय में किया जाता था। "अब केवल पैर छुने का प्रयत्न करना ही बचा है।" महिलाओं में पैर छूने की विधि प्रथा दूसरी प्रकार की होती है। कहीं - कहीं पर वे लोग अपनों से बड़ी व

सम्मानीय महिलाओं के जब वे पैर छूती हैं तब वे बाँया हाथ ए क पैर पर रखकर , दाहिने हाथ को सिर से लगाती हैं। यह बात जानने के लायक है कि कई हिन्दी भाषी क्षेत्रों में लड़कियाँ अपने से बड़ों को प्रणाम या पैर न छू कर नम्स्ते कहती हैं पर अन्य क्षेत्रों में लड़के व लड़कियाँ दोनो ही अपने से बड़ों को प्रणाम करते हैं। अभिवादन का प्रत्युत्तर कैसे दिया जाना चाहिये? नमस्ते का उतर नमस्ते व नमस्कार का उत्तर नमस्कार ही होता है। लेकिन प्रणाम का उत्तर स्नेह भरे आशीर्वाद के वचनों के साथ होना चाहिये। आशीर्वचन देने को प्रत्याभिवाद कहते हैं। इसके लिए यह कहा जाता है " आप तुम दीर्घ जीवी हो" , " आयुशमान भव ," "भगवान भला करे" , या " सुखी रहो", " चिरंजीवी रहो"। पर भारत में महिलाओं को दीर्घजीवी हो का आशीर्वाद नहीं दिया जाता बल्कि उन्हें (यदि वे विवाहिता) हैं सौभाग्यवती होने का या खुश रहो का आशीर्वाद दिया जाता है। भारत से सन्यासीगण, प्रणाम के उत्तर में किसी देवी या देवता की जय बोलते हैं। वैसे आप स्तम्ब धर्म सूत्र के अनुसार जूते पहने हुये , सिर में पगड़ी होने पर , या हाथ में कुछ पकड़े रहने पर प्रणाम नहीं करना चाहिये क्योंकि केवल प्रणाम शब्द बोलने से , पर हाथ न जोड़ पाने, अभिवादन पूर्ण नहीं माना जाता। प्रणाम एक हाथ से नहीं किया जाता , ऐसा करना अनुचित माना जाता । पर इस प्रकार का ध्यान रखना चाहिये कि आशीवार्द देने वाला व्यक्ति आय, पदवी, विद्या , धन सम्बन्ध आदि में ऊँचा होता है। आशीर्वाद देते समय वाणी में मिठास , स्नेह व ममता झलकनी चाहिये। क्योंकि जो व्यक्ति बैठे बैठे ऐसे अभिवादन का उत्तर देते हैं तो उससे उनका अभिमान या अशिष्टता झलकती है। अपवाद के तौर पर जो व्यक्ति बीमार हों, या शारीरिक दृष्टि से शिथिल हों , वे बैठे बैठे या लेटे हुये अभिवादन का उत्तर दे सकते हैं। वैसे हम भारतीयों में पश्चिमी शिष्टाचार का अनुकरण हो रहा है जिसमे यदि किसी महिला को दूसरे पुरुष से मुलाकात करायी जाती है या आगन्तुक नमस्ते, नमस्कार, उस महिला को कराता है, तो वह महिला बैठे बैठे ही उत्तर देती है। यह उचित आचार या शिष्ट ाचार नहीं है। अभिवादन का उत्तर खड़े होकर ही देना चाहिये। यही सुशील, सुसभ्य सुशिक्षित व्यक्ति की निशानी है।

सम्मान , अभिवादन, प्रणाम के सुपात्र कौन हैं?अभिवादन करते समय इस बात पर ध्यान रखना आवश्यक है कि सम्मान व अभिवादन के सुपात्र कौन व्यक्ति हैं। डॉ.पाण्डुरंग कांणे के अनुसार जो व्यक्ति हमसे विद्या, कर्म (या वृत्ति) व्यवसाय , अवस्था , सम्बन्ध (रिश्ता) , धार्मिक कृत्य करने वाला , व धन का सदुपयोग करने वाला , में बड़ा हो उसे उच्च स्थान देकर सम्मान करना चाहिये । मुनस्मिृति व वसिष्ठ धर्म सूत्र के अनुसार धन व सम्बन्ध (रिश्ता) को प्राथमिकता देनी चाहिये। धर्म शास्त्रों के अनुसार यदि शूद्र भी अवस्था या विद्या में लघु हो। इस लेखक का मत है कि सम्मान देने में निम्नाँकित क्रम का उपयोग करना चहिये: सबसे पहले माता- पिता , गुरु , बड़े सम्बन्धी (जैसे बड़े भाई भाभी , मामा, मामी , चाचा , चाची आदि) , विद्वान व्यक्ति , धार्मिक कार्य कराने वाला (जैसे पुरोहित) , अन्य गुरुजन जा व्यवसाय या वृत्ति में श्रेष्ठ हो , व शासन से सम्बन्धित कर्मचारी या अधिकारी , समाज सुधारक व दानी धनी। इस क्रम के कुछ अपवाद भी हैं। जैसे यदि देश का शासक आये , राष्ट्र का नेता हो, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति व्यक्ति हो , तो उपरोक्त क्रम को बदल देना चाहिये। सम्मान के सुपात्र की योग्यता पहिले से परख लेनी चाहिये पर गुरुजन के ऊपर यह मापदण्ड लागू नहीं होता है।

अन्त में यह कहना आवश्यक है कि अभिवादन या सम्मान देने वाले का स्थान सर्वोपरि होता है उनसे जिन्हें सम्मान दिया जाता है। उसी प्रकार जैसे दान लेने वाला व्यक्ति दान देने वाले से उत्तम माना जाता है। इसलिये जो व्यक्ति हमारा आदर करे , सम्मान दे, पहिले से ही नमस्ते या नमस्कार अभिवादन करे , तो उसे लघु या हीन नहीं समझना चाहिये, बल्कि उसे उचित स्थान देकर सम्मान सहित बैठाये व कुशल समाचार पूँछे। लेकिन जिसे आप सम्मान दे रहे हैं, व जिसका तो आप आदर कर रहे हैं पर वह व्यक्ति आपके प्रति उदासीन हो ,या चेहरे से कोई स्नेह नहीं झलक रहा हो ,तो ऐसे व्यक्ति के लिए यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है। "जो मगरूरी करे, दूनी मगरूरी करो। लघुता की बात आये , लघुता निभाइये। पर जो आपको सराहे ,ताको आप भी सराहिये।" इसीलिये सम्मान आदर , अभिवादन , व शिष्टाचार उन्हीं तक सीमित रखिये जिनसे मिलकर आपको खुशी हो। तनाव देने वाले व्यक्ति या स्थिति से कोसों दूर रहने में ही भलाई है।

शिष्टाचार का विषय बहुत ही बड़ा व सघन है । इस संक्षिप्त लेख में केवल अभिवादन के प्रति कुछ लिखा गया है। पर यह जानना आवश्यक है कि शिष्टाचार के नियम देश, समाज , भाषा, व अन्य व्यवस्था के अनुसार बदलते हैं व उनका प्रयोग भी दूसरा हो जाता है। हम भारतीय मूल के व्यक्तियों को एक आचार - नियम बनाने चाहिये जो इस समाज के अनुरूप होते हुये हमारी सभ्यता व धर्म से जुड़े हों। अन्त में यह कहना आवश्यक है कि हम जिस भाव व किस तरीके से दूसरों का सम्मान करते हैं व उन्हें कैसा अभिवादन प्रदान करते हैं, तो उसी प्रकार का सम्मान व अभिवादन हमें मिलेगा। इसीलिये कहा गया है " मीठी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपन शीतल होय।"

स्वर्गीय सुरेन्द्र मोहन को श्रद्धाँजलि

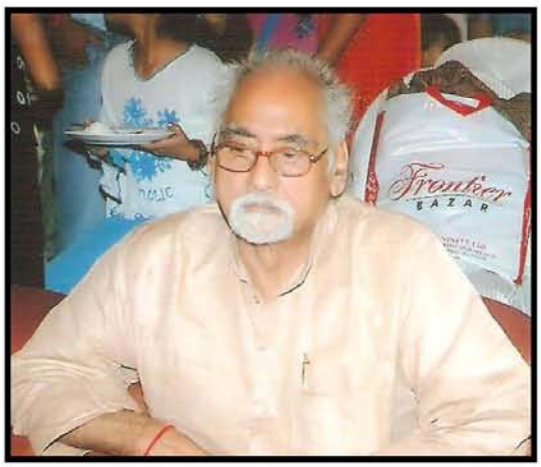

:- चँदोसी उ.प्रदेश के एक सम्पन्न परिवार में जन्में सुरेन्द्र मोहन मिश्र को केवल दो ही शौक थे । पहला कविता लिखने का, दूसरा पुरात्त्व की वस्तुएँ एकत्रित करने। गाँव -गाँव घूमकर बच्चों को गुब्बारे और मिठाई की गोलियाँ देकर उनसे पता लगाते थे कि पुरानी चीज़ें कहाँ मिल सकती हैं। बच्चे उनके इस कार्य में बहुत सहायक हुए। उनके पास एक टेप रिकार्डर था जिसे वह सदा पास रखते थे और हर महत्वपूर्ण बातचीत को रिकार्ड कर लेते थे। कई बार पुलिस के लोग उन्हें गुप्त चर मानते थे। लेकिन वे बड़े सरल , सभ्य और संवेदनशील व्यक्ति थे। उनके पास कोई नौकरी नहीं थी। केवल कविता के माध्यम से वे अपनी जीविका कमाते थे। बड़े धर्मात्मा, दयालु , व परोप-कारी व्यक्ति थे। पुरानी वस्तुओं के संरक्षक थे। और शिक्षा के प्रसारक और परोपकारी इंसान थे। आपने अपने नगर में एक पुस्तकालय की नि:शुल्क स्थापना की। आपको इतिहास से बहुत प्रेम था। उन्हें आस पास के पुराने स्मारकों इमारतों , भग्नावशेष, पुरानी, मूर्तियाँ, सिक्के, पुस्तकें आदि को एकत्रित करने का बड़ा शौक था। पाकिस्तान बनने के बाद उन्हें पता चला कि वहां एक कुंए में कुछ पुरानी कुरान की किताबें पड़ी हैं । वे कुँए में घुस कर उन्हें निकाल कर अपने घर ले आये। बाद में मुसलमानों ने इस पर आपत्ति की कहा कि उन्होंने इस्लाम का अपमान किया लेकिन बाद में मामला शान्त हो गया और वे पुस्तकें उनके पास संग्रहालय में भेज दी गईं।

मिश्रा जी ने स्थानीय इतिहास पर कुछ पुस्तकें भी लिखीं जो प्रान्त के पाठ्यक्रम में लगी हुई हैं। इसके अतिरिक्त 1955 में उनकी कविताओं का पहल संग्रह (मधुगान) प्रकाशित हुआ और इसके थोड़े दिनों बाद ही दूसरा कविता संग्रह (कल्पना कामिनी) 1968 में आपका तीसरा काव्य संग्रह(कविता नियोजन)प्रकाशित हुआ। 1982 में आपका व्यंग्य प्रधान काव्य संग्रह (कविता नियोजन) प्रकाशित हुआ। भारत के अनकों कवि सम्मेलनों में उन्हें श्रद्धा से बुलाया जाता था और वे बहुत लोक प्रिय थे। देश विदेश के अनेकों पत्र पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई। सुधा, सरस्वती , गृहलक्ष्मी, तरंगणी, मनोरंजन, हिन्दी चेतना, विद्यार्थी, बालसखा, ज्योति , माधुरी, चाँद, भारती, आदि। आपको प्राचीन ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान था। बरेली, मुरादाबाद, बदायूँ, बुलंदशहर, के इतिहास पर आपको विशेष अधिकार था।

चंदोसी में दीनदयाल नगर , डी. ब्लाक में अपने परिवार के साथ स्थायी रूप से रह रहे थे। उनका अध्य्यन अनवरत था। मार्च 2008 वे अपनी यात्रा समाप्त कर गये। 'हिन्दी चेतना' परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धाँजलि अर्पित है।

हिन्दी चेतना की ओर से ....

समीक्षा

पुस्तक समीक्षा आजादी पूर्व के

हास्य काव्य में व्यंग्य लेखक :

स्वर्गीय सुरेन्द्र मोहन मिश्रा
समीक्षक : संजय स्वतन्त्र(भारत)
प्रभा प्रकाशन – मुरादाबाद, यू.पी.

काव्य शास्त्र के नव रसों में हास्य रस का कहीं भी स्थान नहीं हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक छोटे- बड़े सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में अगर हास्य को समेटा है तो उसे न तो दिया और न ही उसका श्रेय लिया। यह सत्य है कि श्रेष्ठ हास्य कवि गिने चुने ही हुये हैं। इससे उन्हें कवि का दर्जा नहीं मिला। यहाँ तक कि उनकी रचनाएँ तुकबंदी ही मानी गई । कवि अध्येता और पुरात्त्व के अनवेषी सुरेन्द्र मोहन मिश्र की सद्यः प्रकाशित "पुस्तक आजादी से पहले की दुर्लभ हास्य कवियों की कविताएँ" में हास्य कवियों की दुर्दशा को चित्रित किया गया है। मिश्र जी ने लिखा है ' राज दरवारों में हास्य रचना करने वालों का स्थान बहुत नीचे था।'

"इनको गुदगदिये कहा जाता था।"प्राचीन संस्कृत नाटकों में इन गुदगुदियों की संज्ञा विदूषक मिलती है किसी भी काल में हास्य तुकबंदियों को साहित्य में स्थान नहीं दिया गया तो इ सकी वजह साफ थी कि इन्हें कविता न कहा जाकर भड़ौवा कहा गया। हालाँकि आज़ादी के बाद भड़ौवों को भी सम्मानित भी किया गया तो उसका निहितार्थ था। दरअसल इनका इस्तेमाल विरोधियों पर भद्दी टिप्पणी के लिए किया गया। इन कविताओं में न तो व्यंग्य था न ही वैचारिकता।

अपनी पुस्तक में सुरेन्द्र मिश्र जी ने ठीक ही लिखा है कि ' नेता को गधा शब्द से विभूषित करने वाले कवि को इस उपमा के अर्थ से कोई सरोकार न था। यह उपमा किसी सीधे – सादे प्राणी के लिए उचित हो सकता है, पर नेता जैसे चतुर व्यक्ति के लिए यह गाली ही है। हास्य काव्य में फूहड़ता और अराजकता से बचते हुए मिश्र जी ने आजादी से पहले यानी 1707 से लेकर दो महायुद्धों के बीच 1918 से 1938तक लिखी गई दुर्लभ और श्रेष्ठ कविताओं को प्रस्तुत किया है । कुल पाँच अध्याओं में पूर्व पीठिका और उद्धरणों पर सटीक टिप्पणी कर उन्होंने हास्य का रसास्वाद कराया है।

रीतिकाल में एक ओर श्रृंगार रस की श्रेष्ठ रचनाएँ रची जा रही थीं तो दूसरी ओर हास्य रचनाएँ भी लिखी जा रही थीं । मुगल शासक औरंगज़ेब का निधन 1707 में हो चुका था । उस समय छोट राजाओं से लेकर ताल्लुकेदार तक खुद को स्वतंत्र घोषित कर चुके थे। छोटे राजा और नवाब बड़े राजाओं की तरह अपने दरबार में कवियों और संगीतकारों को रखते थे मगर उन्हें भेंट देने के मामले में घोर कंजूस थे। मिश्र जी ने अपनी पुस्तक में बताया है कि जिस दौर में गंग कवि को एक छप्पय पर छप्पन लाख रुपये मिले हों , उस दौर में अन्य कवियों को साधारण भेंट कैसे भाती। रीतिकाल में आश्रयदाता की प्रशस्तियों में बहुत कुछ लिखा गया है मगर अपने राजा से निराश कई कवियों ने अपनी हास्य रचनाओं में जो खिंचाई की है , उसमें व्यंग्य तो है ही , जबर्दस्त आक्रोश भी है। कहते हैं एक कवि का किसी शाह ने छह – सात साल पुरानी दाल दलवा कर नई दाल कह कर भेंट कर दी। बेचारे कवि ने शाम से रात तक घर की सारी लकड़ियाँ फूंक दीं मगर दधीच की अस्थियों जैसी कठोर दाल नहीं गली।

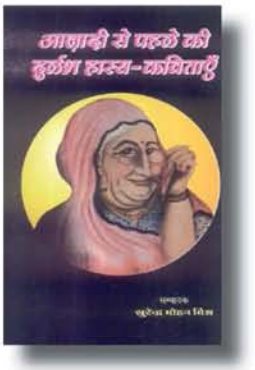

साल छसात की दाल दराय के,
साह कहयो,यह लेहु नई हो,
फूँक दई लकरीबहुतेरिक ,
साँजते अधिक रात लई हौ।
खाय लयो अकुलायके काचिही ,
चाकर चूल्ह निहार गई है।
खोय दियो मुजरा दरबार को,
दाल दधीच की हाड़ भई है।

मुगलों के राज में औरंगजेब ने किसी कवि को बूढ़ी हथिनी दान कर दी तो इस महाशय ने औरंगजेब के सभी पूर्वजों को याद कर डाला। उसने अपनी रचना में लिखा कि इस हथिनी को कैसे तैमूर लंग ने खरीदा। फिर कैसे बाबर ने हुमायूं और अकबर के समय यह काम आती रही। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय इसे विश्राम दे दिया गया। इसी वृद्धा हथिनी को औरंगजेब ने दान कर कैसे अपने महान होने का पचिय दिया है। इस दौर में ऐसे कई रईस ज़मीदार हुये जो सिर्फ मीठी बातों से खुश रहते थे। स्वागत कथन में कवि को अपनी पलकों पर बैठाते हुये भी स्पष्ट कर देते थे कि उनके कुल की परंपरा है कि कोई कितना भी रिझा दे,हम उसे छदाम भी नहीं देंगे। आप दोहा, कवित्त कुछ भी सुनाएँ, पर हमसे किसी ईनाम की उम्मीद न रखें। वैसे सब कुछ आपका है –

आइए बैठिये आंखिन पै
कुलकानि हमारी यहै सुन लीजै
रीति हमारे बड़ों की यही,
कोई कैसो रिझावे छदाम न दीजै।
दोहा कवित्त और छंद पढ़ो,
गुण की गरमी कबहूं न पसीजे।

और जो है सो तिहारो ही है
पै इनाम का नाम यहां मत लीजै।

रीतिकाल में एक ओर कवि नायिका के नख शिख वर्णन में ही अपनी प्रतिभा लगा रहे थे। फर्क बस इतना था कि वे फूहड़ नायिकाओं को विचित्र छंदो में बांध रहे थे। 'प्रधान कवि' की नायिका तो ऐसी थी कि सास को देख कर सिंहनी के समान जम्हाई लेने लगती थी। सुरेन्द्र मोहन मिश्र की संपादित पुस्तक में इसका संक्षिप्त मगर रोचक वर्णन किया गया है।
दरअसल रीतिकाल में कविता वस्तुत: अर्थ प्राप्ति का साधन बन गई थी। उस दौर में पदमाकर और ग्वाल ऐसे कवि हुए जिनका राजसी ठाठ- बाट अनय कवियों के लिए ईर्ष्या का विषय था। यही वजह थी कि हर छोटा - बड़ा कवि राजाश्रय के लिए व्याकुल रहता था। मिश्र जी ने अध्याय 'रीतकाल कवियों की अर्थोपासना' में लिखा है 'तुलसी का राम 'दाम' में समा गया था।' रस सिंधु कवि ने यहां तक कहा कि भगवान के मंदिर भी दाम की कृपा से ही बनते हैं। रीतिकाल के ही कवि हेम ने पूरे छह कवित्तों में धन की महत्ता को स्वीकारा है। वे धन में ही बुद्धि का प्रकाश मानते हैं-
दाम ही सों आठो चाप बुद्धि को प्रकाश
होत ही सों सबै ठौर होत बड़ो नाम है।
रीति काल के ही कवि हेम ने पूरे छह कवित्तों में धन की महत्ता को स्वीकारा है। वे धन में ही बुद्धि का प्रकाश
मानते हैं-
दाम ही सों आठो चाप बुद्धि को प्रकाश होत
दाम ही सों सबै ठौर होत बड़ो नाम है।

धन की इसी महत्ता के मूल में पेट है। संत कवि सुंदर ने लिखा है कि इस पेट ने राजा और रंक सभी को जीत लिया है। सुबह उठते ही सब इस की चिंता में लग जाते हैं-
प्रात ही उठत जब पेट ही चिंता तब
सब करउ जात आय के आहार को।
मिश्र जी ने दो महायुद्धों के बीच रची दुर्लभ हास्य रचनाओं को पुस्तक में उद्धृत किया है। उन्होंने लिखा है कि जब कवि हास्य व्यंग्य के बाण चलाता है तब कुछ और ही आनन्द आता है। हास्य कविताओं में राजनीति , बेकारी, मंहगाई, दहेज़, बाल विवाह, फैशन, बहुविवाह, आदि को कवियों ने अपना विषय बनाया।
पुराने हास्य कवियों ने अपने आश्रयदाता की कँजूसी और उनमें विरोधाभास की बखिया उधेड़ दी। करीब 50 पेज के विस्तृत अध्याय में मिश्र जी ने छायावाद पर व्यंग्य वाण चलाने वाले कवियों की रचनाओं को भी संकलित कर उस पर अपना टीका भी लिखा है। राष्ट्रकवि दिनकर से लेकर हरिऔध और अन्य कई गुमनाम रहे कवियों की श्रेष्ठ हास्य रचनाओं को भी सिलसिलेवार उद्धृत किया है।
पत्नी को आलंबन बना कर हास्य की सृष्टि करना उस दौर के कवियों को प्रिय रहा। कवि प्रभु जी 'मैं और वह' रचना में अपना और पत्नी का क्या तुलनात्मक वर्णन किया है।

मैं घरवाला मतवाला हूं, तू मेरे घर की घरनी है
मैं पान बनारस का मीठा, और तू बेदर्द कतरनी है।
आजादी से पहले दो महायुद्धों के दौरान हिंदी में रची हुई हास्य कविताओं का ऐसा स्वरूप स्वतंत्रता मिलने के बाद नहीं दिखा। मंचीय कवियों ने ऐसे हास्य काव्य को रसातल में पहुंचा दिया। शिष्ट हास्य की परम्परा तो उसी युग में खत्म हो गई। कविताओं में न तो हास्य बचा न व्यंग्य। बच गई तो सिर्फ फूहड़ता। इन दिनों मंचीय हास्य कवियों ने तो यह अराजकता और बढ़ा दी है। ऐसे समय में सुरेन्द्र मोहन मिश्र के संपादन में तैयार यह पुस्तक प्रेरणादायक है। दुर्लभ हास्य काव्य को संकलित करने का उन्होंने चिरस्मरणीय कार्य किया है। यह एक ऐसा दस्तावेज है, जिसे साहित्य के सुधी पाठक भी सहेज कर रखना चाहेंगे।

प्राप्त पुस्तकें

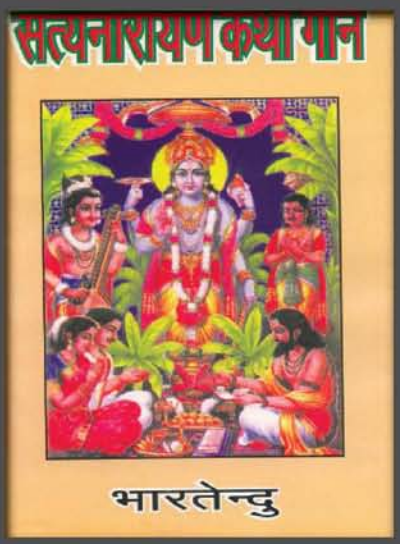

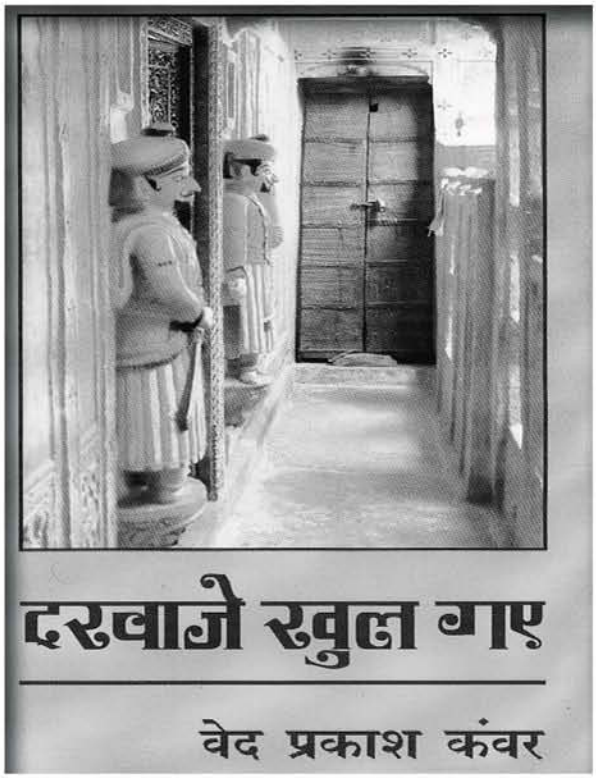
दरवाजे खुल गए
वेद प्रकाश कंवर

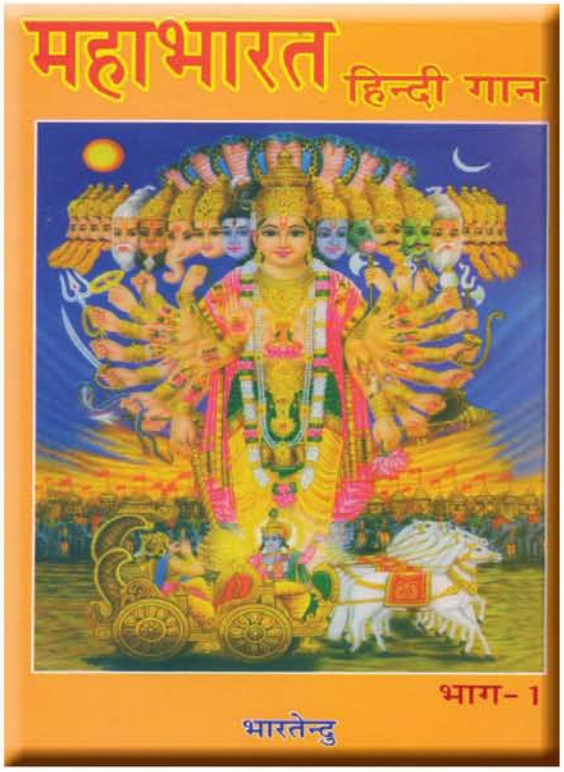
महाभारत
हिन्दी गान
भाग- 1
भारतेन्दु

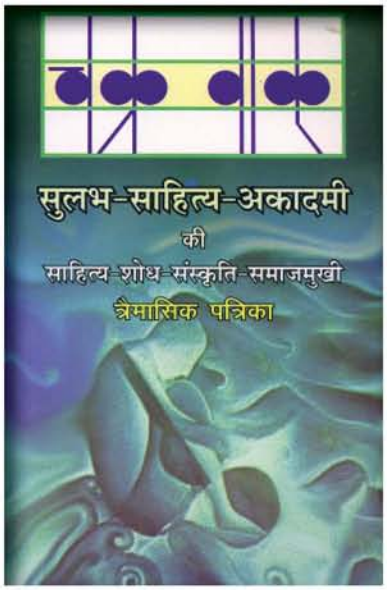
सुलभ-साहित्य-अकादमी
की
साहित्य-शोध-संस्कृति-समाजमुखी
त्रैमासिक पत्रिका

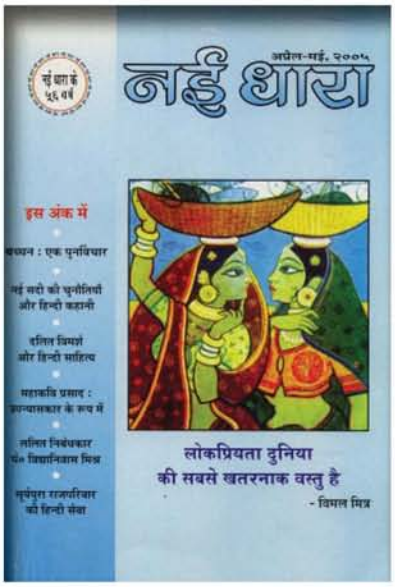
अप्रैल-मई, २००५
नई धारा
इस अंक में
लोकप्रियता दुनिया
की सबसे खतरनाक वस्तु है
- विमल मित्र

पंचतंत्र
स्त्री-विमर्श : देवेन्द्र इस्सर, कृष्णा अग्निहोत्री - मृदुला सिन्हा
अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है - नरेन्द्र मोहन का संस्मरण

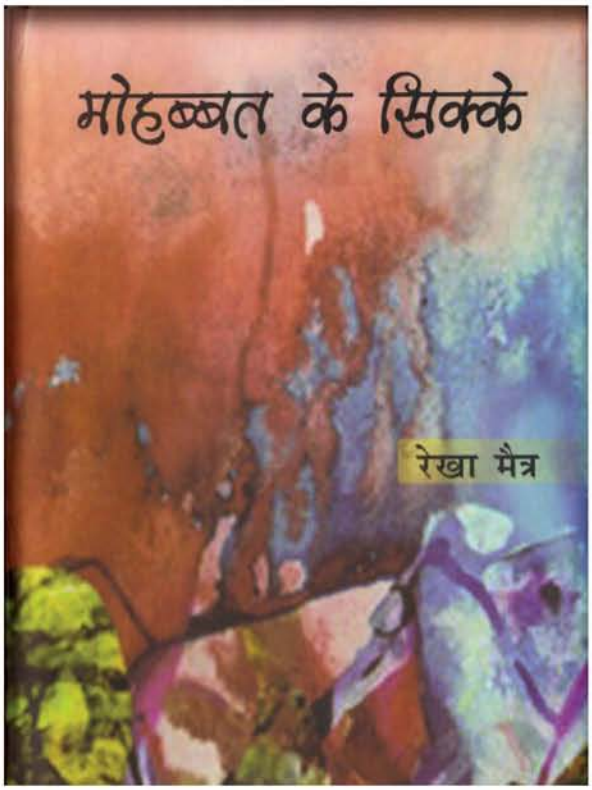
मोहब्बत के सिक्के
रेखा मैत्र

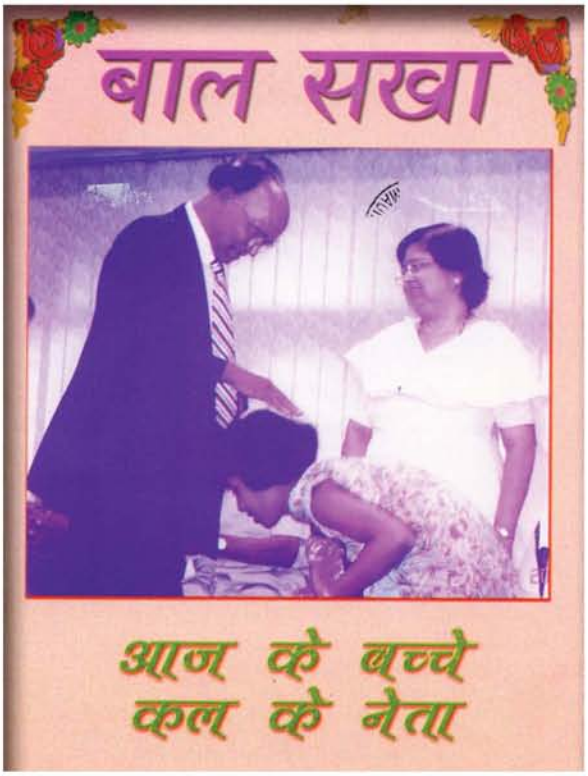
बाल सखा
आज के बच्चे
कल के नेता

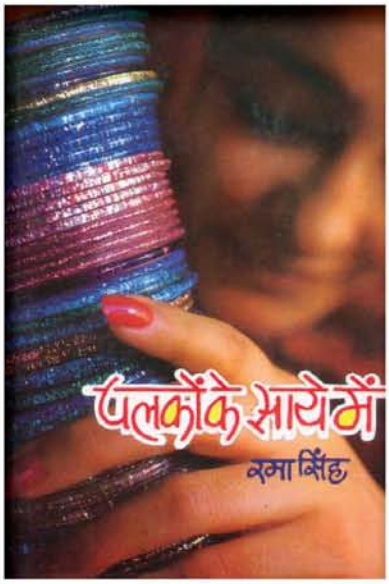
पलकों के साये में
रमा सिंह

भाषा-भारती-संवाद
बिहार की एकमात्र साहित्यिक समाचार पत्रिका
समीक्षा-विशेषांक
(खण्ड-2)

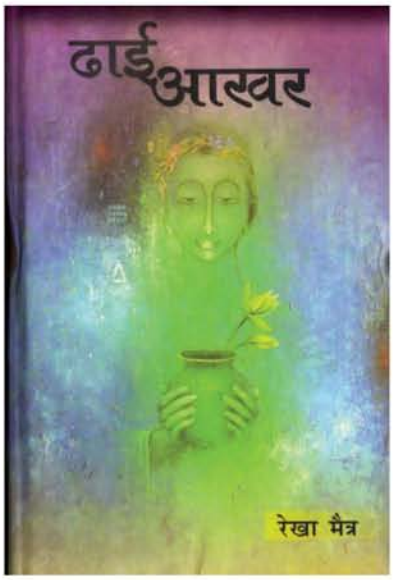
ढाई आखर
रेखा मैत्र

रेडियो सबरंग –एक अभिनव प्रयोग

पिछले कई वर्षों से नियमित प्रसारित होने वाला 'रेडियो सबरंग' वैश्विक समुदाय को एकजुट करने का एक सराहनीय और अनूठा प्रयास है। यह अनेकता में एकता का प्रतीक है। 'रेडियो सबरंग' डेनमार्क से संचालित होने वाला हिन्दी साहित्य और भाषा का एक ऐसा रेडियो वेब है जिसने अपनी सार्थक और प्रासंगिक सामग्री के कारण हिन्दी भाषा प्रेमियों के मध्य समस्त संसार में अपनी अलग पहचान बनाई है । 'रेडियो सबरंग' में श्रोताओं के लिए 'सुर संगीत','कलामे- शायर', 'सुनो कहानी' तथा 'भूले बिसरे गीत' जैसी वशिष्ट सामग्री को बेहद रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । 'सुर संगीत' में श्रोता सुरीले गीतों तथा कविताओं का आनंद ले सकते हैं। जो स्वयं कवि की आवाज़ में रिकार्ड किये गये हैं। कवि संगीतकारों द्वारा रचित गीतों को बहुत मधुर संगीत में स्वरबद्ध करके प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विश्वभर के चुनिंदा कवियों और गीतकारों की रचनाएँ स्वरबद्ध की गई हैं। जिस-में भारत से दीप्ति मिश्रा, राजेश चेतन, आर. पी. घायल, निदा फ़ाजली, गजेन्द्र सोलंकी, देवमणि पाण्डेय, रतना बसु तथा विजय जी. यू. के. से उषा राजे सक्सेना, तेजिन्दर शर्मा, यू. के. यू.ए स.ए. से इफ़्तिख़ार नसीम इफ़्ती तथा जसवींदर सिहं, यू. ए. ई. से पूर्णिमा वर्मन ।

कलामे शायर - भारत से डॉ. बी. एन. मिश्रा, वीना विज उदित, देवमणि पाण्डेय ,कवि कुलवंत सिंह, राहत इन्दोरी, ममता किरण, ओम प्रकाश यात्री, रश्मी सबा, अतुल अजनबी , राजेश रेडी, शिप्रा वर्मा, डॉ. कीर्ति काले, मदन मोहन'दानिश', दिनेश रघुवंशी, हस्तीमल हस्ती, शिव दत्त, भारत भूषण पंत, लता हया, अमिताभ 'मीत', अजन्ता शर्मा, पारुल चान्द, पुखराज, सुखबीर सिहं शाह, गोपाल दास नीरज, डॉ .कुँवर बेचैन , देवी नागरानी, देवमणि पांडेय, किरण कान्त वर्मा, तथा डॉ . सुरजीत पातर , यू. के. से तेजिन्दर शर्मा, यू. एस. ए. से अभिनव शुक्ला, डॉ . सुधा ओम ढींगरा , डॉ. अंजना संधीर, अनन्त कौर तथा पाकिस्तान से मोहम्मद नदीम भाभा। डेनमार्क से स्व.शमशेर सिहं प्रमुख हैं, विशेष बात यह है कि आप इनकी रचनाओं को स्वयं शायर व कवि की आवाज़ में सुनने का आनंद उठा सकते हैं ।

सुनो कहानी- 'रेडियो सबरंग' में हम कहानीकारों को उनकी स्वयं की आवाज़ में कहानी सुनाते हुये सुनेंगे। यह बेहद रोचक एवं रोमांचकारी अनुभव है। भारत के प्रसिद्ध कहानीकार एस. आर. हरनोट की मोबाईल और मां पढ़ती है तथा वीना वीज 'उदित' की लाल ड्रेस- सुनहरे जूते तथा यू. एस. ए. की कहानीकार डॉ. इला प्रसाद की रिश्ते, गुड़िया आदि कहानियाँ सुनी जा सकतीं हैं। भूले- बिसरे गीत- इस के द्वारा हिन्दी फिल्मों के सदाबहार गीतों को प्रस्तुत किया गया है ।

आप कुन्दन लाल सहगल के सदाबहार और दिल को छूने वाले गीतों का आनन्द ले सकते हैं। अपने वर्तमान स्वरुप में 'रेडियो सबरंग' साहित्य की विभिन्न विधाओं के रचनात्मक प्रस्तुती-करण के कारण पूरे संसार में सुना और सराहा जा रहा है। कुल मिलाकर विदेश कि धरती पर हिंदी भाषा को समर्पित 'रेडियो सबरंग' ने पूरे वैश्विक समुदाय को हिंदी भाषा और साहित्य के द्वारा एक सूत्र में बांधने का उल्लेखनीय प्रयास किया हैं। 'रेडियो सबरंग' को लोगों तक पहुँचाने का काम पद्मश्री विजय चोपड़ा, पूर्णिमा वर्मन , श्री चांद शुक्ला 'हदियाबादी' तथा प्राण शर्मा और संयोजक डॉ.सुधा ओम ढींगरा, नीरज गोस्वामी, राजन दीप मल्होत्रा, जनमेजा सिंह जौहल, सुरेश चन्द्र शुक्ला 'शरद आलोक', ईफ़्ती नसीम, गुरुदीप पान्धेर तथा डॉ.मो. फ़िरोज़ अहमद, राजन मल्होत्रा और देवमणि पाण्डेय ने किया है।

सम्पर्क: चांद शुक्ला (निदेशक रेडियो सबरंग)

Mail ID: chaandshukla@gmail.com
radiosabrang@gmail.com

Website: www.radiosabrang.com

दीप जला

राज हीरामन (मारीशस)

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला , तू दीप जला,
नगर - नगर में दीप जला,
डगर - डगर में दीप जला ,

दिवाली है , दिवाली है,
दीप जला , तू दीप जला!
हर दिल में तू दीप जला,
मन - मंदिर में दीप जला,

दिवाली है , दिवाली है,
दीप जला, तू दीप जला
घर आँगन को बुहार ले,
हृदय को अपने संवार ले,

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला, तू दीप जला!
पड़ोस में भूखा न कोई सोये
आँगन में सबके फूलझड़ियाँ बरसें!

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला, तू दीप जला!
बच्चे बच्चे तारों से खेलें,
लक्ष्मी पाकर प्यारों से मिलें,

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला तू दीप जला!
एक तो जला , कई जल जायेंगे,
बिखरे मोती सब मिल जायेंगे,

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला, तू दीप जला!
दूर - दूर अंधेरे को भगा,
दूर - दूर अन्याय को मिटा,

दिवाली है, दिवाली है,
दीप जला, तू दीप जला,
राम आगमन का यह मेला है,
ऋषि निर्वाण की यह बेला है ,

पाठकों के ध्यानार्थ---

पिछला अंक विशेषांक था अतः बहुत सी रचनाएं उसमें स्थान नहीं पा सकीं। इसलिए इस अंक में उन्हें लगाया जा रहा है।

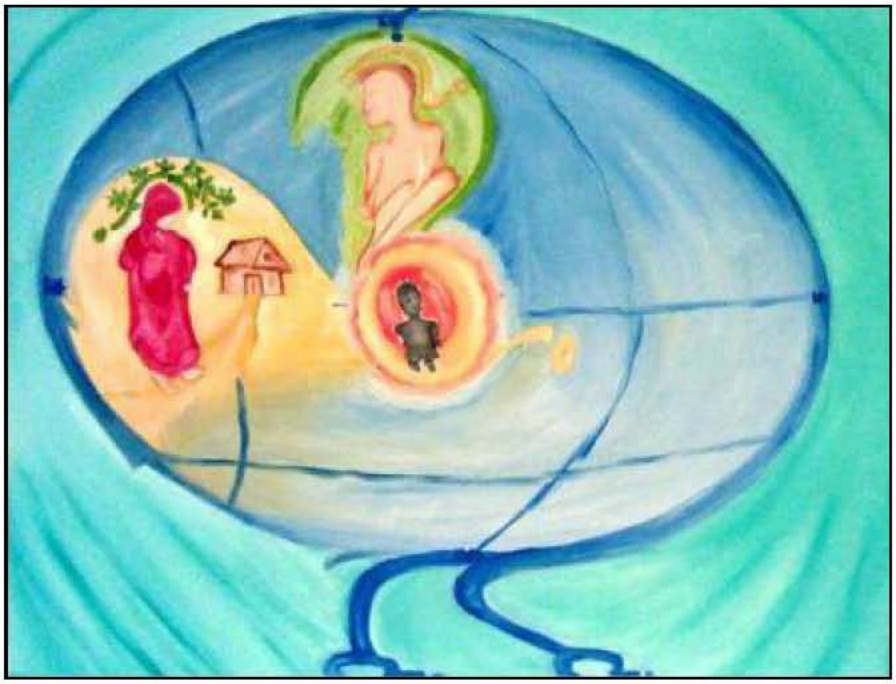

कलाकार अमित सिंह (भारत)

Hindi Pracharni Sabha

Membership Form

Annual Subscription:	**$25.00 Canadian**
Life Membership:	**$200.00 Canadian**
Donation:	**$ _____**
Method of Payment:	**Cash, cheques and drafts payable to "Prachani Sabha"**

Your Name: _____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____

Business: _____

e-mail: _____

_____

Contact in Canada:

Hindi Pracharni Sabha
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3RI
Canada

e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA

e-mail: ceddlt@yahoo.com

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

F •***Installation***
R •***Underpad***
E •***Delivery***
E •***Shop at Home***

(416) 661-4444
(416) 663-2222

Broadloom

Vinyl Tiles

180 Winges Rd.,
Unit 17-19
Woodbridge, Ontario
L4L 6C6

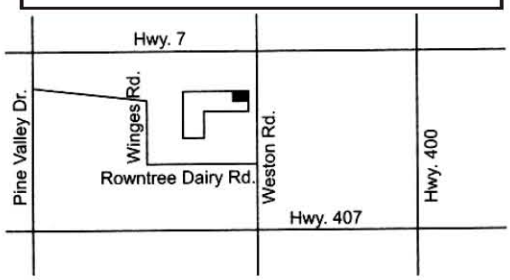

Finest Source of :

International Flag Pins

Campaign Buttons

Friendship Pins

Embroided Crests (Patches) of All Countries

International & Provincial Flags of all sizes, Souvenirs

Mini Banners & Keychains of all countries available

Custom work available for Pins, Buttons, Crests and Flags
At Factory Direct Prices Free Set up & Shipping

We carry more than 500 Titles each of Pins, Flags & Crests in stock

Pinsnflags.com Inc., 395 Spadina Ave., Toronto, Ont., M5T 2G6

Tel: 416-596-1574 Fax: 416-596-2248
Toll Free: 1-877-322-4771 E-Mail: veena@pinsnflags.com
www.pinsnflags.com

मेरे मित्रो! हिन्दी बोलो, अपने बच्चों को हिन्दी सिखाओ! अपनी भाषा और संस्कृति को बचाओ!1